अनातोले फ्रांस की चुनी हुई कहानियाँ



अनातोले फ्रांस की कहानियाँ

अनुवादक

कान्तिचन्द्र सौनरिक्सा

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९४८

प्रथम संस्करण] [मूल्य १)

छाया सुन्दरी

मेरे जीवन के बीसवें वर्ष में एक असाधारण घटना हुई थी।

अपने एक घरेलू काम से मेरे पिता ने मुझे लोअर मेन भेजा था। यह जगह अर्नो के सुंदर नगर से कोई बीस मील थी। एक दिन तीसरे पहर मैं अपनी इस यात्रा के लिए घोड़े पर सवार होकर चल दिया। रास्ते में सेंत जीन का ज़िला भी पड़ता था, जिसमें हमारा अपना घर था। उस घर में हमारे पूर्वज दो सौ बरस तक रहे थे, किंतु अब वह ख़ाली पड़ा था।

यह दिसंबर के शुरू की बात है। बर्फ़ सवेरे से ही गिर रही थी। सड़क के इधर-उधर घनी झाड़ियाँ थीं और उसमें बहुत-से गड्ढे थे जिनमें कीचड़ भरी थी, इसलिए मुझे अपने घोड़े को बहुत बचा-बचाकर चलना पड़ रहा था। इससे मुझे काफ़ी परेशानी भी हो रही थी।

किंतु जब सेंत जीन चार या पाँच मील रह गया, तब सड़क कुछ अच्छी मिल गई। अंधड़ बड़े ज़ोर से चल रहा था और बर्फ़ की बौछार मेरे मुँह पर कोड़े की मार की तरह पड़ रही थी, फिर भी मैं अपने घोड़े को दुलकी चलाये ही गया। सड़क के दोनों ओर लगे हुए पेड़ अँधेरे में काले भयानक भूतों की तरह भागते लगते थे। बर्फ़ के बोझ से झुके हुए उन पेड़ों की लम्बी-लम्बी डालियाँ मुर्दे के निर्जीव अंगों की तरह ऐंठी हुई लगती थीं। मेरे मन में भय समा गया और कल रात अर्नो में विकार ने जो एक कहानी सुनाई थी, वह मुझे बरबस याद आ गई। इन्हीं पेड़ों में से एक अहबलूत का पेड़ था, जिसका दो सौ वर्ष पुराना ठूँठ भर खड़ा था और वह ठूँठ भी अंदर से खोखला था, क्योंकि २४ फ़रवरी १८४९ को इसके ऊपर बिजली गिरी थी जिसने इसके अंतर को भस्म कर डाला था। ठूँठ की दरारों में से झाँकने

पर आदमियों को इसके अन्दर बन्दूक हाथ में लिये आदमी का एक ढाँचा सीधा तना हुआ खड़ा दिखाई देता था। उसके दूसरे हाथ में पूजा की माला रहती थी। उसके पैरों के तले एक छड़ी पाई गई थी जिस पर एक नाम खुदा था; क्लादे नोज़ियारे। ये क्लादे मेरे पिता के ताऊ थे और अपने ज़माने के बड़े भारी डाकू। १७६४ ई० में उन्होंने शुआन से अपना संबंध स्थापित कर लिया था और त्रेतां के दल में, जिसे जाम्बे द आर्जे कहते थे, सम्मिलित हो गये थे। सरकार ने उनका बहुत पीछा किया और वे संघर्ष में कई बार घायल भी हुए थे। इन सब मुसीबतों से वे भाग खड़े हुए और उसी शाहबलूत के खोखले ठूँठ में जाकर छिप गये और वहीं, उसी में, मर भी गये। उनके मित्रों तक को यह रहस्य नहीं मालूम था, पर पचास वर्ष बाद जब उस पर बिजली गिरी, तब उनकी ठठरी भी ज़मीन पर आ गिरी और सारा रहस्य खुल गया।

स्तब्ध और पत्रहीन वृक्ष उस निपट अंधकार में मेरे सामने से भागे चले जा रहे थे और मैं भी अपने घोड़े को एड़ लगाकर तेज़ी से भगाये जा रहा था। संत जीन पहुँचते-पहुँचते अंधकार और भी घना हो उठा था।

मैं सराय पर जा पहुँचा। सराय का साइन बोर्ड, जो जंजीरों से बँधा हुआ छत से लटक रहा था, झंझावात के तीव्र झोंके से उस अँधेरे में कड़कड़ा रहा था। अस्तबल में जाकर स्वयं ही मैंने घोड़ा खोल दिया और फिर बैठक में गया। वहाँ अँगीठी के पास एक आराम-कुर्सी पड़ी थी, उसी पर मैं बैठ गया और आग तापने लगा।

आग के उजाले में सराय की मालकिन का मुख चमक रहा था। वह बूढ़ी थी और उसकी कुरूपता भयानक थी। उसके मुख पर मुर्दनी छाई हुई थी जिसमें बस एक चपटी नाक ही नाक दिखाई पड़ती थी, क्योंकि वह उसमें एक नथुनी पहने थी जिसमें मूँगे पिरोये हुए थे। मैं [illegible] था, इसलिए वह कुरूप बुढ़िया मेरी ओर कैंड़ी और

संदेहभरी आँखों से रह-रहकर देखती थी। उसका सन्देह दूर करने के लिए मैंने कहा—"मेरा नाम नोज़ियारे है"। मैं समझता था कि इस नाम से वह अवश्य परिचित होगी।

किंतु उत्तर में पहले उसने केवल अपना सिर हिला दिया, फिर कहा—"अब तो कोई नोज़ियारे नहीं बचा है।"

जो हो, किसी तरह वह मेरे लिए खाना बनाने के लिए राज़ी हो गई। अँगीठी में उसने मोटी-सी लकड़ी और लगा दी और कमरे में चली गई।

मैं थका हुआ तो था ही पर मन भी मेरा बड़ा मरा-मरा-सा हो रहा था और बड़े विचित्र-से त्रासदायक विचार रह-रहकर उठ रहे थे।

हिंसा और शोक की भयानक कल्पनाएँ मुझे बड़ी यातना दे रही थीं। ऐसी ही अवस्था में कुछ देर बाद मुझे ऊँघ आ गई पर चैन नहीं पड़ा। रह-रहकर हूक-हूक उठनेवाली हवा की आवाज़ बराबर सुनाई पड़ती रही और अँगीठी में से राख उड़-उड़कर मेरे जूतों पर पड़ने लगी।

कुछ मिनिट बाद आँखें खोलने पर जो दृश्य मैंने देखा उसे मैं कभी नहीं भूल सकता।

कमरे में सामने की सफ़ेद चिट्टी दीवार पर मुझे एक बिलकुल स्पष्ट और काली निश्चल छाया दिखाई पड़ी—उस छाया की आकृति नवयुवती की लगती थी, और उस छायाकृति में ही इतनी सुकुमारता, पवित्रता और सुंदरता थी कि मैं उसे मुग्ध होकर देखता ही रह गया। मेरी सारी थकावट और उदासी जैसे क्षण भर में आश्चर्य और हर्ष में बदल गई।

शायद एक मिनिट तक मैं इस छायाकृति को टकटकी लगाये देखता रहा। फिर मैं यह देखने के लिए मुड़ा कि ऐसा कौन व्यक्ति पीछे खड़ा है जिसकी इतनी सुन्दर छाया पड़ रही है। किन्तु मुझे कमरे में कोई प्राणी नज़र नहीं आया, केवल वह बुढ़िया मालकिन ही मेज़ पर

सफ़ेद मेज़पोश बिछा रही थी। फिर घूमकर मैंने दीवार पर देखा। छाया विलीन हो चुकी थी।

तत्पश्चात् मेरे हृदय में एक प्रेमी की-सी आकुलता भर गई और निराश प्रेमी की तरह ही मुझे भी उस छाया के विलीन हो जाने पर निराशा हुई—जैसे स्वयं मेरी प्रेयसी ही खो गई हो।

मेरे होश बिलकुल ठिकाने थे। मैं इस क्षणिक घटना पर विचार करने लगा। फिर मालकिन से कहा—"माताजी, यह तो बताइए कि अभी एक-दो सेकिंड पहले यहाँ कौन आया था।"

बुढ़िया ने चौंककर साश्चर्य उत्तर दिया—"कोई तो नहीं।"

मैं तुरंत उठ खड़ा हुआ और द्वार की ओर बढ़ा। बाहर बर्फ़ बड़े ज़ोरों से गिर रही थी। ज़मीन पर सफ़ेद बर्फ़ ही बर्फ़ बिछी हुई थी, परन्तु उस पर एक भी पद-चिह्न नहीं था।

मैंने लौटकर मालकिन से फिर पूछा—"क्या यहाँ और कोई है ही नहीं?"

बुढ़िया ने उत्तर दिया—"नहीं। यहाँ मैं बिलकुल अकेली हूँ।"

फिर मैंने अनुमान लगाया कि सामने दीवार पर उतनी बड़ी और साफ़ छाया के लिए व्यक्ति कहाँ पर खड़ा हो सकता है। उस स्थल की ओर संकेत करते हुए मैंने मालकिन से फिर कहा—"यहीं तो वह खड़ी थी!"

बुढ़िया मोमबत्ती लेकर मेरी ओर बढ़ी और मेरे पास आकर मुझे ऊपर से नीचे तक देखा और चीख़ पड़ी।

"अब मैं समझ गई। तुम मुझे धोखा नहीं दे रहे हो—तुम सच-मुच नोज़ियारे ही हो! क्या तुम जीन नोज़ियारे के बेटे हो जो पेरिस में डाक्टरी करते हैं? मैं युवक रेना को जानती थी, जो तुम्हारे बाप के चाचा थे। उन्हें भी ऐसी ही एक औरत की परछाईं दिखाई दिया करती थी, लेकिन वह किसी और को तो कभी नहीं दिखाई दी। सच-

मुच क़ादे शुआन के कुकर्मों का पाप तुम्हारे सारे कुटुम्ब पर पड़ा है ! क़ादे नानबाई की बीवी को भगा ले गया था।"

"क्या आपका मतलब उन्हीं क़ादे शुआन से है जिनका कंकाल एक बन्दूक़ और माला के साथ उस शाहबलूत के खोखले तने में मिला था !"—मैंने पूछा।

"अरे मेरे लड़के, वह पूजा की माला उसके किसी काम नहीं आई। एक औरत की ख़ातिर उसने पाप कमाया !" बुढ़िया ने कहा।

इसके अतिरिक्त मालकिन ने इस विषय में मुझे कुछ और नहीं बताया।

मैं जब खाना खाने बैठा तो रोटी का कौर मेरे मुँह में नहीं चला। सुअर का गोश्त, अचार, अंडे और सेब का रस—सब यों ही पड़े रह गये, किसी को मैंने छुआ तक नहीं। मैं रह-रहकर दीवार की ओर देखता था जहाँ वह छाया-सुंदरी मुझे दिखाई दी थी।—ओह ! वह कितनी मधुर और कोमल थी ! साधारण छाया से बिलकुल भिन्न, जो किसी मोमबत्ती की मंद ज्योति-शिखा अथवा कंदील अग्नि-शिखा से बन जाती है।

दूसरे दिन सबेरे उठकर मैं उस वीरान मकान को देखने गया जिसमें क़ादे और रेने किसी समय रहा करते थे। मैंने आस-पास के पड़ोसियों से, और मुहल्ले के ओझा से भी, पूछा; लेकिन उस छाया-सुंदरी के विषय में कुछ भी पता नहीं लगा।

आज भी मैं यह नहीं जानता कि जो कुछ हाल सराय की उस बुढ़िया मालकिन ने मुझे छाया-सुंदरी के विषय में बताया था, वह सच है या झूठ। हो सकता है, ठीक हो। शायद वीरान ला बोक्ज़ के सुनसान में मेरे पूर्वज कृषकों को कोई प्रेत दिखाई दिया करता हो, और हो सकता है कि कपोल-कल्पित बातों में विश्वास करनेवाले मेरे अशिक्षित पूर्वजों को अपनी वंश-परम्परा की प्राचीन छाया

दिखाई देती रही हो जो आज भी कभी-कभी उनकी भावी संतान के सम्मुख आ खड़ी होती है।

सेंत जीन की सराय में देखी हुई वह छाया क्या वास्तव में नोज़िथारे-कुटुम्ब का प्रेत थी! अथवा वह इस बात का संकेत मात्र थी कि मेरे जीवन में जो सबसे सुखद वस्तु है, वह मेरी ही होगी—मुझे अवश्य मिलेगी—या कि जीवनदात्री धरित्री ने अपना सबसे अधिक मूल्यवान् वरदान मुझे दिया—मधुर स्वप्नों का वरदान!

उसका पति

मदाम मताया घर की नौकरानी थी, और आया भी। वह बूढ़ी थी और बड़ी दीनता तथा व्यथा से भरी हुई, इसी से हमारे घर में सब लोग उसका बड़ा ख़याल रखते थे। मेरे माता-पिता उसे हमेशा मदाम मताया कहकर ही पुकारते थे और उन्होंने मुझे उसकी देखभाल में ही रख छोड़ा था। इसी लिए एक दिन यह जानकर कि उसका अपना एक और बहुत सुंदर नाम 'वर्जीनी' है, मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।

मदाम मताया ने जीवन में बड़ी-बड़ी यातनाएँ सही थीं और इसका उसे गर्व था। उसके गाल पिचके-पिचके, आँखें छोटी-छोटी तेज़ चमकीली और बाल बिखरे-बिखरे सफ़ेद थे। मुँह में दाँत नहीं थे, इस-लिए वह पोपला था। सारे चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं। पतले-पतले ओंठ थे और ठोड़ी कुछ उठी हुई-सी थी। इन सब ने मिलकर उसकी मुद्रा में बड़ी व्याकुलता और मूक व्यथा-सी भर दी थी। देखने में मदाम मताया ऐसी ही थी। मेरे पिता तो उसकी सूरत से बहुत घबराते थे।

मेरी मामा, जो अपनी गृहस्थी पर रानी-मक्खी की सतर्कता से ही शासन करती थीं, कहा करती थीं कि इस बुढ़िया ग़रीब आत्मा के काम में कोई भी त्रुटि निकालने का साहस मुझे नहीं होता था; क्योंकि जब वह मेरी तरफ़ देखती थी, तो मुझे उसकी आँखों में जैसे एक भूखा भेड़िया दिखाई पड़ता था।

मदाम मताया से सभी लोग डरते थे। सारे घर में एक मैं ही ऐसा था, जो उससे तनिक भी नहीं डरता था; क्योंकि मै उसे अच्छी तरह जानता था। मैं उसके मन की बातें जानता था और यह समझता था कि वह वास्तव में दुर्बलताओं से भरी हुई है।

मेरे पापा चालीस वर्ष के थे और मैं केवल आठ का, पर मैं पापा से अच्छा मनोवैज्ञानिक हो गया था। यद्यपि वे बड़े मननशील व्यक्ति थे और आदर्शवादियों की भाँति दूरदर्शी भी, साथ ही आकृति-शास्त्र[1] भी जानते थे। सेंट हेलिना[2] से डाक्टर आँलोमार्शो नेपोलियन के शव की जो मुखाकृति लाये थे, उसकी नक़ल कराकर पापा ने एक चेहरा 'पलास्तर ऑफ़ पेरिस' का बनवा लिया था। वह उनके कमरे में टँगा रहता था। बचपन में उसे देखकर मुझे बहुत डर लगा करता था। पापा उसके विषय में अक्सर बातचीत किया करते थे।

एक बात पापा से अच्छी मेरे लिए थी। मदाम मताया मुझे प्यार करती थी और मैं उसे प्यार करता था। मैं सहानुभूति से अनुप्राणित होता था और पापा को राह दिखानेवाली थी केवल उनकी आकृति-शास्त्र की शुष्क विद्या। वैसे सच बात तो यह थी कि पापा ने मदाम मताया का चरित्र जानने का कभी कोई विशेष प्रयत्न नहीं किया; क्योंकि उसे देखने से उन्हें कोई ख़ुशी नहीं होती थी, इसलिए उन्होंने यह कभी नहीं देखा कि मताया की गरुड़ की सी सुंदर नाक थी, जो उसकी उस कठोर-सी मुद्रा में छिपी हुई उसके जीवन की वास्तविक करुणा की ओर संकेत करती थी। मदाम मताया की मुद्रा में चित्रित भग्नता और निराशा की भावनाएँ इतनी स्पष्ट थीं कि

---

१ आकृति-शास्त्र—मनुष्य की आकृति, विशेष रूप से मुखाकृति, देखकर उसके जीवन का भूत, वर्तमान, भविष्य जानने की क्रिया।

२ सेंट हेलिना—वह द्वीप जिसमें नेपोलियन बंदी किया गया था।

उनमें उसकी करुण आर्द्रता जैसे खो गई थी। फिर भी वह लक्ष्य करने की एक बात थी। आज जब मैं अपने अतीत के अँधेरे पट पर उसकी वह मुद्रा पुनः चित्रित करने की चेष्टा करता हूँ, तब एक अनिर्वचनीय सुकुमार, करुण विनम्रता और पश्चात्ताप की सी भावना मेरे मन में समा जाती है। इतने विशाल संसार में एक मैं ही ऐसा व्यक्ति था जिसने मदाम माताया की इस दुरूह सी दयनीय भावना को लक्ष्य किया था, किंतु उसकी वास्तविक महत्ता मैं तब समझ सका जब वह केवल मेरे हृदय में ही एक स्वप्न की-सी धुँधली स्मृति-मात्र रह गई। इन बीती हुई बातों को सोचने में आज मेरा मन जितना लगता है, उतना पहले कभी नहीं लगा। उफ़! मदाम माताया, आज इस संसार में तुम्हें फिर उसी मुद्रा में देखने के लिए मैं क्या नहीं दे सकता! —...तुम बैठी-बैठी मोज़ा बुना करती थीं, एक सलाई तुम्हारे कान में लगी रहती थी, उस छोटी सुन्दर नाक पर वह भारी-भारी चश्मा खिसक-खिसक पड़ता था और तुम खीझ उठती थीं, क्योंकि तुमने न बननेवाली बिगड़ी बात को भी हँसकर टालना नहीं सीखा; प्रतिदिन अपने जीवन की विपत्तियाँ झेलने में तुमने अपनी आत्मा की घोर पीड़ा ही दिखलाई।—उफ़!—मदाम माताया—मदाम माताया—तुम्हें फिर उसी अवस्था में जीवित देखने के लिए मैं क्या नहीं दे सकता।—या मैं यही जान लूँ कि तुम्हें संसार को छोड़े हुए ये तीस वर्ष जो हो गये, सो इनमें तुम कैसे रहीं?—और यह संसार जिसने तुम्हें इतना कम सुख दिया—जिसमें तुम्हें सिर्फ़ साढ़े-तीन हाथ जगह ही मिली, फिर भी जिससे तुम्हें इतना अधिक मोह था—प्यार था!...हाँ, मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम्हें जीवन से बहुत मोह था तुम इसकी छोटी से छोटी चीज़ से मँझधार में डूबते हुए निराश और दुखी की तरह चिपटी हुई थीं!...काश, आज तुम्हारी कोई भी खबर मिल जाती तो मैं कितना सुखी होता—मुझे कितना संतोष मिलता—असीम अनन्त—संतोष!...मुझे याद है—मुझे याद है वसन्त का वह प्रभात जिससे

तुम्हें इतना प्यार था—और उसी प्रभात में तुम एक नीचे-से ताबूत में बन्द होकर हमेशा के लिए न जाने कहाँ चली गईं...और छोड़ गईं वे सभी अनगिनती चीज़ें जो हमारी और तुम्हारी दोनों की ही प्यारी थीं। उफ़, वे अनेक चीज़ें आज मेरे दिल को छूकर एक टीस पैदा कर देती हैं—मेरे शैशव और तुम्हारे बुढ़ापे की मधुर स्मृतियों का एक समूचा संसार छिपा है उनमें! तुम्हें याद नहीं हैं क्या मताया ये सब बातें! आज इस जीवन और संसार के परे उस अज्ञात प्रदेश में रहते हुए क्या तुम्हें वे दिन याद आते हैं जब हम तुम दोनों साथ-साथ टहलने जाया करते थे!

खाना खाने के बाद हम लोग क्वाई द' जावेन और क्वाई द' बिल्ली और प्लैन द' ग्रेनेले के सुनसान की ओर घूमने जाया करते थे, जहाँ हूकती हुई हवा के झोंकों से धूल ही धूल उड़ा करती थी। तुम्हारा हाथ पकड़कर जैसे मैं निश्चिन्त हो जाता था और फिर उस दृश्य की डरावनी विशालता पर अपनी दृष्टि दौड़ाया करता था। किन्तु उस वृद्धा स्त्री तथा शैशवकालीन स्वप्नों में खोये हुए उस बालक और उन उजाड़ स्थलों के बीच एक सूत्र था—एक घनिष्ठ एकता थी! ...धूलि-धूसरित वे वृक्ष, लाल-लाल दीवारोंवाले वे मदिरालय, उधर से फीते लगा हुआ हैट पहने कभी कभी गुज़रनेवाले पेंशन-प्राप्त लोग, कोको और केक बेचती हुई एक ओर किनारे से बैठी हुई वह औरत—यही सब मिलकर मदाम मताया का संसार बनाते थे—इन्हीं लोगों के संसार में मताया को अपनापन मालूम होता था, क्योंकि वह सचमुच ही साधारण वर्ग की थी।

एक दिन की बात है। गरमी के दिन थे। हम लोग क्वाई द' ओसे[१] एक नदी का तट के किनारे-किनारे टहल रहे थे। मैंने माया से कहा—"चलो नीचे, बिलकुल पानी के पास। मैं वहाँ से खड़े होकर बजरों में से जो बजरी निकाली जा रही है, उसे देखूँगा।"

---

१ एक नदी का तट।

मताया फ़ौरन राज़ी हो गई। वह कभी मेरी किसी बात को मना नहीं करती थी। वह मुझे प्यार जो करती थी, और वह प्यार ही उसको सब कुछ करने के लिए मजबूर कर देता था।

हम लोग नीचे नदी के पानी के किनारे जाकर खड़े हो गये। मैं आया का साया पकड़े खड़ा था और क्रेन की उस विशालकाय मशीन को ध्यान लगाकर देख रहा था जो बजरों में से डलिया भर-भर कर बजरी निकालती थी और अर्धगोलाकर वृत्त में झूलता हुआ उसे तट पर पटकती थी। धीरे-धीरे सामने तट पर बजरी का ढेर लगता गया और ईंट-सी लाल खालवाले मज़दूर, जो कमर तक नंगे थे और नीले-नीले जाँघिये पहने थे, उस बजरी को डलियों में उठा-उठाकर एक किनारे से डालने लगे।

मैंने मताया का साया पूरे ज़ोर के साथ खींचकर झटका—"मदाम मताया, ये क्या कर रहे हैं!"

उसने उत्तर नहीं दिया, क्योंकि वह ज़मीन पर से कुछ उठाने के लिए एकाएक झुक गई थी।

मैंने सोचा कि कोई पिन होगी, क्योंकि रोज़ रास्ते में उसे दो-तीन पिनें ज़मीन पर पड़ी हुई ज़रूर मिल जाती थीं और उन्हें उठाकर वह अपनी कुर्ती में खोंस लेती थी। पर जब मदाम मताया उठकर खड़ी हुई तब मैंने उसके हाथ में एक जेबी चाक़ू देखा जिसका बेंट ताँबे का बना हुआ था और जिस पर 'कालाँने वाँदोमें' खुदा था।

"मदाम मताया—हम भी देखेंगे—हम भी देखेंगे। हमें दो—हमें दो।......क्यों नहीं देती इसे हमें!"

मौन और निश्चल खड़ी मदाम मताया ध्यान से टकटकी लगाकर चाक़ू देख रही थी, पर उसकी उस टकटकी में कुछ ऐसी भयानकता थी कि मुझे डर लगने लगा।

"मदाम मताया—मदाम मताया—क्या बात है! हमें भी बताओ, क्या बात है! मदाम मताया।"

वैसे वह काफ़ी ज़ोर से बोला करती थी किन्तु इस बार बड़े धीमे से बोली।

"उनके पास भी बिलकुल ऐसा ही था।"

मैंने पूछा—"मदाम मताया, किसके पास? किसके पास बिलकुल ऐसा ही चाक़ू था?"

मैं बराबर उसका साया खींच-खींचकर यह सवाल पूछता ही रहा। उसने मुड़कर मेरी तरफ़ फटी-फटी आँखों से देखा। उन आँखों में मुझे काले और लाल रंग के सिवा कुछ नहीं दिखाई पड़ा। उसे जैसे आश्चर्य हो रहा था।

"कौन?" उसने कहा, "क्यों, वही तो मताया।"

"मताया! कौन मताया?"

अब तक उसकी आँखें बिलकुल लाल हो गई थीं और भर आई थीं। हाथ उठाकर उसने उन्हें पोंछा और फिर उस चाक़ू को रूमाल में लपेटकर अपनी जेब में रख लिया, तब बोली—"मताया, मेरा पति।"

"तो क्या उसके साथ तुम्हारी शादी हुई थी?"

"हाँ, मेरा फूटा करम! मैं एक ज़माने में बड़ी सुखी थी। चार्तेब के पास अन्नो में मेरी एक मिल थी। वह सारा काम करता था—खाना पकाता था, गधा ढोता था—मिल चलाता था—सभी काम तो करता था। उसने पाई-पाई ख़र्च कर डाली और जब मेरे पास कौड़ी भी नहीं बची, तब वह मुझे छोड़कर चल दिया। पहले वह सैनिक था, फिर हवलदार हुआ और वाटरलू की लड़ाई में घायल हुआ था। फ़ौज में रहकर ही उसने बुरी-बुरी आदतें सीख ली थीं।"

यह सब सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। कुछ देर तक सोचता रहा, फिर मैंने कहा—"तुम्हारा पति शायद पापा की तरह माना का पति नहीं था—क्यों मदाम मताया?"

मदाम मताया ने अब तक रोना बन्द कर दिया था। और कुछ गर्व-भरे स्वर में उसने कहा—"आज-कल मताया जैसे आदमी दुनिया में तुम्हें नहीं मिलेंगे। जो भी मर्द के पास होना चाहिए, सो सभी कुछ उसके पास था। वह लम्बा, तगड़ा, ख़ूबसूरत और हँसमुख था। उसके बटन के काज में हमेशा गुलाब का फूल लगा रहता था। वह ऐसा आदमी था जिसे तुम ज़रूर प्यार करते—ऐसा था वह मताया।"

रूप की परी

"लेकिन मृत्यु-शय्या पर पड़ी हुई लड़की ने कहा"—'सैटन[1], अपनी आत्मा के साथ मैं अपना शरीर भी तुम्हें समर्पित करती हूँ।' (पेरिस के सेंत जीन-इन-ग्रेवी गिरजे में बाइबिल के सुयोग्य पण्डित ओलीवर मायार्द द्वारा १५११ ई० में प्रचारित लैटिन सर्मन।)

× × × ×

वेरोना की 'आर्कीव्ज ऑफ़ दि मोनास्ट्री ऑफ़ संताक्रोशे' में रेवरेंड फ़ादर आर्दा दोनी को निम्नलिखित कहानी मिली थी :—

वेरोना की सेन्योरा[2] इलेता का सौन्दर्य इतना अद्भुत था, उसकी सुकुमारता इतनी सम्पूर्ण थी कि इतिहास और उपाख्यान में पारङ्गत नगर के सभी विद्वान् उसकी मा को लतोना, लीदा और सिमिए आदि नामों से पुकारा करते थे, जिसका अभिप्राय यह था कि सुंदरता की ऐसी साकार प्रतिमा को जन्म देनेवाली नारी का पति कोई इस पृथ्वी का मानव—उसका पति अथवा प्रेमी—नहीं होगा, प्रत्युत स्वर्ग के जुपिटर[3]

१—सैटन—हमारे शनिदेवता के समांतर ईसाइयों का एक देवता।

२—श्रीमती।

३—बृहस्पति देवता के समांतर ही ईसाइयों का एक देवता।

देवता होंगे। किन्तु कुछ अधिक विज्ञ सज्जनों का मत है, विशेष रूप से फ्रा बातिस्ता का—जिनके 'सुपीरियर आफ़ सं'ता क्रोशे' की गद्दी का उत्तराधिकारी मैं हूँ,—कि नारी का ऐसा अनुपम रूप-सौन्दर्य किसी ऐसे ही दैत्य की कला-सृष्टि हो सकती है जिसकी कला की परिभाषा नीरो[1] के अंतिम शब्द "क्वाले आर्तिफ़े पेरिश्रो"[2] हों, और इस कथन में हम विश्वास भी कर सकते हैं; क्योंकि ईश्वर का शत्रु शैतान जहाँ धातु का काम करने में चतुर है, वहाँ वह मांसल शरीर निर्मित करने में भी अति कुशल है।

मुझे इस संसार का बहुत अनुभव है और मैंने स्वयं अपनी आँखों से गिरजाघरों में दानवों की बनाई हुई मानव मूर्तियाँ तथा विशाल घंटे देखे हैं उनका सौंदर्य वास्तव में प्रशंसा-जनक है। इसी प्रकार चम-त्कार द्वारा उत्पन्न बच्चों को भी मैंने देखा है जो अत्यन्त सुंदर थे, किन्तु इस विषय का मैं कोई उदाहरण नहीं दूँगा, क्योंकि जिन लोगों के ये भेद हैं, उनसे मैं उन्हें प्रकट न करने के लिए वचन-बद्ध हूँ। फिर भी मैं यहाँ इतना ही कहूँगा कि सिन्योरा इलेता के जन्म के विषय में भी कुछ ऐसी ही कहानियाँ प्रचलित हैं। सबसे पहले मैंने इलेता को १३१० ई० में गुडफ़ाइडे के दिन 'प्याज़ा ऑफ़ वेरोना' में देखा था। उस समय उसने अपना चौदहवाँ वर्ष पूरा करके पन्द्रहवें में पग रखा ही

१—प्राचीन रोमन साम्राज्य का सुप्रसिद्ध निंद्य, संगीतप्रिय, सम्राट् नीरो जिसके विषय में यह कहा जाता है कि उसने केवल अपने मनोरंजन के लिए विशाल रोम नगर में आग लगवा दी थी और जब रोम में लपटें उठ रही थीं, वह अपने महल में बैठा-बैठा सारङ्गी बजा रहा था।

२—नीरो ने मरते-मरते अंतिम शब्द यह कहे थे—"हाय! कितना महान् कलाकार मरा जा रहा है।—उफ़! कला की कितनी हानि होगी—कितनी हानि होगी!"

था, और फिर उसके बाद तो मैंने उसे अनेक बार टहलते हुए और महिलाओं के प्रिय गिरजाघरों में देखा है। वह जैसे किसी अत्यन्त श्रेष्ठ कलाकार की बनाई हुई मूर्त्ति थी। सिन्योरा के केश जैसे स्वर्णिम रश्मि-पुंज थे, नयन नीलम और मोती से चमकते थे, गाल खिले हुए गुलाब-से थे, और नाक सीधी तथा उठी हुई थी। उसके ओंठ कामदेव के धनुष-से लगते थे जिसमें से उसकी मुस्कान का पुष्प-बाण सीधा अंतरतम को बेधता था और उसकी ठोड़ी पर भी हँसी जैसे खिली पड़ती थी। प्रेमियों के आनन्द के लिए उसका शरीर जैसे समस्त सौंदर्याकर्षण का एकमात्र केन्द्र था। रेशम से आवृत उसके कठिन उभरे उरोजों से जैसे विश्व का संपूर्ण सौंदर्य छलका पड़ता था। उसके अधखुले अंगों तथा शेष प्रच्छन्न अंगों की सुन्दरता का चित्र मैं यहाँ नहीं चित्रित करूँगा, क्योंकि मैं एक सभ्य और पवित्र पुरुष हूँ। दूसरे मैंने उन अंगों को कभी देखा भी नहीं। वैसे बाहर से ही जो कुछ मैंने देखा, उसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि उसका प्रत्येक अंग जैसे साकार 'काम' था। यह भी मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ जिस समय वह अपने प्रिय गिरजाघर सान ज़ानोन में जाकर ईसा मसीह की पावन प्रतिमा के सम्मुख प्रार्थना के लिए खड़ी होती, या घुटने टेकती, या वेदी पर झुक-कर माथा टेकती थी, उस समय उसके सुभग अंगों की प्रत्येक गति से दर्शक पुरुषों के हृदय में उसे आलिंगन-पाश में तीव्रता से कस लेने के लिए काम-तृष्णा का सागर उमड़-उमड़ पड़ता था।

पन्द्रह वर्ष की अवस्था में सिन्योरा इलेता का विवाह मिसाये आंतोनियो तोलोंता से हो गया। आंतोनियो एक सुप्रसिद्ध एडवोकेट था। वह बड़ा विद्वान् था और अच्छा धनी भी, किन्तु बूढ़ा हो चला था। उसका शरीर भारी और कुरूप हो गया था। जब काग़ज़ात से भरा हुआ अपना चमड़े का थैला लिये वह कचहरी जाता था, तब दोनों में इतनी समानता होती थी कि यह कहना कठिन था कि वह थैला लिये जाता था, अथवा थैला उसे लिये जाता था।

इस प्रकार वास्तव में यह एक करुण और हृदयविदारक दृश्य था कि विवाह के पवित्र बन्धन में बाँधने के लिए ही, जिससे कि पुरुष को गौरव मिलता है और मुक्ति भी, वेरोना की यह अनुपम अनिंद्य सुंदरी एक ऐसे रोगी और निर्बल वृद्ध को ब्याह दी गई थी। न्याय और अन्याय की अदालती समस्याओं को सुलझाने के लिए वकील साहब रात-रात भर अपनी मिसलों से ही उलझे रहते थे और उन्होंने अपनी पत्नी को पूरी-पूरी स्वतंत्रता दे रखी थी। इधर स्वतंत्रता पाकर विन्योरा इलेता ने उसका पूरा-पूरा उपयोग भी करना शुरू कर दिया। नगर के सुन्दर से सुन्दर नवयुवकों को वह अपनी सेज पर आमन्त्रित करती और उनके साथ भोग-विलास में रत रहती थी।

यह सब देख-सुनकर नगर के समझदार लोगों को आश्चर्य तो कम होता था, किन्तु दुःख अधिक।

परन्तु एक बात थी। वह उन नवयुवकों को प्यार नहीं करती थी; वास्तव में उनसे उसे कोई आनन्द नहीं मिलता था। वह तो जैसे उसके अपने अंतर से ही उसे मिल जाता था, क्योंकि वह स्वयं अपने को—अपने सौंदर्य को—प्यार करती थी, अपने प्रेमियों को नहीं, और किसी को भी नहीं। उसकी समस्त आकांक्षाएँ, इच्छाएँ तथा वासनाएँ और उनसे उत्पन्न सुख स्वयं उसमें ही सीमित था, अंतर्भूत था। समर्पण वह नहीं करती थी, उसे उसमें आनंद नहीं मिलता था। दूसरों की वासना जैसे उसकी अपनी प्रिय सुंदरता के पोषण के लिए, अभिवृद्धि के लिए ही थी। इस कारण मैं समझता हूँ कि उसके भोग-विलास का पाप और भी अधिक था।

यद्यपि यह सत्य है कि वासना के पाप के कारण हमें स्वर्ग नहीं मिलता, फिर भी यह अवश्य है कि सर्वन्यायकारी ईश्वर लालची, दग़ाबाज़, हत्यारे और बदमाश लोगों की अपेक्षा भोग-विलासी को इस लोक और परलोक दोनों में ही कम दंड देता है। इसका कारण यह है कि वासनालिप्त व्यक्तियों का चंचल मन और चेष्टाएँ केवल

अपनी ओर ही प्रवृत्त नहीं होतीं और अपने में ही सीमित नहीं होतीं, वरन् वे दूसरों की ओर भी प्रवृत्त होती हैं, उन्हें भी तृप्ति और सुख देती हैं और उनमें कुछ न कुछ प्रेम और सहानुभूति की मात्रा अवश्य ही रहती है।

किंतु सिन्योरा इलेता की वासना केवल अपने लिए ही थी—अपने को ही तृप्त करने के लिए, अपने को ही सुखी करने के लिए; दूसरों को वह कोई भी सुख, कैसी भी तृप्ति, संतोष नहीं देती, देने की चेष्टा भी नहीं करती; वह केवल अपने को ही प्यार करती थी। दूसरी औरतों में, जो अधिक वासना में लिप्त रहती थीं, और सिन्योरा इलेता में यही अंतर था। वे ईश्वर से बहुत दूर नहीं थीं, किंतु इलेता थी; क्योंकि अपनी वासना से वे दूसरों को भी तृप्त करती थीं, उन्हें सुख देती थीं अपने सम्पूर्ण समर्पण से। इलेता तो आकर्षण, प्रेम और समर्पण, सभी का केन्द्र स्वयं ही थी! इतना सब मैंने इसलिए कहा है कि अब आगे जो कुछ मैं बतलाऊँगा, वह अच्छी तरह समझा जा सकेगा।

बीस वर्ष की अवस्था में इलेता बीमार पड़ गई। उसे बचने की कोई आशा नहीं रही। तब वह अपने सुंदर शरीर को देख-देख कर मन में बड़ी दुखी होने लगी और कभी-कभी व्यथा के मारे आँसू भी बहाने लगती थी। दासियों की सहायता से वह अपनी अच्छी से अच्छी पोशाक पहनती और शृंगार करती, फिर दर्पण के सम्मुख खड़ी हो जाती और प्यार-भरी निर्निमेष दृष्टि से अपने प्रतिबिम्ब को ताकती रहती, आवेश में आकर अपने उरोजों को अपने ही हाथों से मसलती, नाभि को गुदगुदाती और तब अपने प्रतिबिम्ब के सौंदर्य से ही उन्माद में भरकर उसके ओठों को कसकर चूम लेती! किंतु.. तुरंत ही उसे ध्यान आता कि...उफ़! इस सौंदर्य को—इस अनुपम सौंदर्य-राशि को कीड़े खा जायँगे—पृथ्वी में बंद होकर यह सड़ जायगी!...

यह कल्पना इलेता सह नहीं सकी थी। मृत्यु-समय उसके आशा और विश्वास से भरे हुए अंतिम शब्द थे—"शैतान—प्यारे शैतान—तू

मेरी आत्मा के साथ मेरे शरीर को भी ले जा। दयालु शैतान, कृपालु शैतान! मेरी प्रार्थना स्वीकार कर; मेरे प्राणों के साथ ही मेरा यह शरीर भी ले चल......।"

सान ज़ानोन के गिरजाघर में उसका शव ले जाया गया। उसका समस्त शरीर ताबूत में ढका हुआ था, किंतु रिवाज के अनुसार मुख खुला हुआ था, जिसे देखकर सभी ने एक स्वर में कहा था—हमने जीवन में आज तक किसी नारी की मृत्यु के बाद उसका मुख इतना सुंदर नहीं देखा।

गिरजे में वेदी के समीप इलेता ताबूत में लेटी हुई थी और पादरी लोग उसकी आत्मा की शांति के लिए अंतिम प्रार्थनाएँ पढ़ रहे थे, किंतु इलेता ऐसी लग रही थी मानो वह किसी अदृश्य प्रेमी के आलिंगन में बेसुध पड़ी हो।

प्रार्थना समाप्त होने पर इलेता ताबूत में बंद करके सान ज़ानोन के समीपवर्ती क़ब्रिस्तान में दफ़ना दी गई। उस क़ब्रिस्तान में प्राचीन रोमन लोगों की भी कुछ समाधियाँ हैं।

दूसरे दिन सवेरे लोगों ने देखा कि इलेता की क़ब्र खुदी पड़ी है और ताबूत खुला हुआ है। इलेता का शव उसमें नहीं है।

वह रूप की परी न जाने कहाँ उड़ गई।

मदारी

फ़्रांस में लुई का राज्य था। कम्पेयनी का रहनेवाला एक मदारी, जिसका नाम बार्नेबी था, शहरों में घूम-घूमकर कलाबाज़ी और हाथ की सफ़ाई के तमाशे दिखाया करता था।

शहरों में मेले के दिन और गाँवों तथा क़स्बों में पैंठ के दिन वह सड़क पर फटी-पुरानी एक दरी बिछाकर बैठ जाता था और तरह-तरह

अपनी ओर ही प्रवृत्त नहीं होतीं और अपने में ही सीमित नहीं होतीं, वरन् वे दूसरों की ओर भी प्रवृत्त होती हैं, उन्हें भी तृप्ति और सुख देती हैं और उनमें कुछ न कुछ प्रेम और सहानुभूति की मात्रा अवश्य ही रहती है।

किंतु सिन्योरा इलेता की वासना केवल अपने लिए ही थी—अपने को ही तृप्त करने के लिए, अपने को ही सुखी करने के लिए; दूसरों को वह कोई भी सुख, कैसी भी तृप्ति, संतोष नहीं देती, देने की चेष्टा भी नहीं करती; वह केवल अपने को ही प्यार करती थी। दूसरी औरतों में, जो अधिक वासना में लिप्त रहती थीं, और सिन्योरा इलेता में यही अंतर था। वे ईश्वर से बहुत दूर नहीं थीं, किंतु इलेता थी; क्योंकि अपनी वासना से वे दूसरों को भी तृप्त करती थीं, उन्हें सुख देती थीं अपने सम्पूर्ण समर्पण से। इलेता तो आकर्षण, प्रेम और समर्पण, सभी का केन्द्र स्वयं ही थी! इतना सब मैंने इसलिए कहा है कि अब आगे जो कुछ मैं बतलाऊँगा, वह अच्छी तरह समझा जा सकेगा।

बीस वर्ष की अवस्था में इलेता बीमार पड़ गई। उसे बचने की कोई आशा नहीं रही। तब वह अपने सुंदर शरीर को देख-देख कर मन में बड़ी दुखी होने लगी और कभी-कभी व्यथा के मारे आँसू भी बहाने लगती थी। दासियों की सहायता से वह अपनी अच्छी से अच्छी पोशाक पहनती और शृंगार करती, फिर दर्पण के सम्मुख खड़ी हो जाती और प्यार-भरी निर्निमेष दृष्टि से अपने प्रतिबिम्ब को ताकती रहती, आवेश में आकर अपने उरोजों को अपने ही हाथों से मसलती, नाभि को गुदगुदाती और तब अपने प्रतिबिम्ब के सौंदर्य से ही उन्माद में भरकर उसके ओठों को कसकर चूम लेती! किंतु.. तुरंत ही उसे ध्यान आता कि...उफ़! इस सौंदर्य को—इस अनुपम सौंदर्य-राशि को कीड़े खा जायँगे—पृथ्वी में बंद होकर यह सड़ जायगी!...

यह कल्पना इलेता सह नहीं सकी थी। मृत्यु-समय उसके आशा और विश्वास से भरे हुए अंतिम शब्द थे—"शैतान—प्यारे शैतान—तू

मेरी आत्मा के साथ मेरे शरीर को भी ले जा। दयालु शैतान, कृपालु शैतान! मेरी प्रार्थना स्वीकार कर; मेरे प्राणों के साथ ही मेरा यह शरीर भी ले चल......।"

सान ज़ानोन के गिरजाघर में उसका शव ले जाया गया। उसका समस्त शरीर ताबूत में ढका हुआ था, किंतु रिवाज के अनुसार मुख खुला हुआ था, जिसे देखकर सभी ने एक स्वर में कहा था—हमने जीवन में आज तक किसी नारी की मृत्यु के बाद उसका मुख इतना सुंदर नहीं देखा।

गिरजे में वेदी के समीप इलेता ताबूत में लेटी हुई थी और पादरी लोग उसकी आत्मा की शांति के लिए अंतिम प्रार्थनाएँ पढ़ रहे थे, किंतु इलेता ऐसी लग रही थी मानो वह किसी अदृश्य प्रेमी के आलिंगन में बेसुध पड़ी हो।

प्रार्थना समाप्त होने पर इलेता ताबूत में बंद करके सान ज़ानोन के समीपवर्ती क़ब्रिस्तान में दफ़ना दी गई। उस क़ब्रिस्तान में प्राचीन रोमन लोगों की भी कुछ समाधियाँ हैं।

दूसरे दिन सवेरे लोगों ने देखा कि इलेता की क़ब्र खुदी पड़ी है और ताबूत खुला हुआ है। इलेता का शव उसमें नहीं है।

वह रूप की परी न जाने कहाँ उड़ गई।

मदारी

फ़्रांस में लुई का राज्य था। कम्पेयनी का रहनेवाला एक मदारी, जिसका नाम बार्नेबी था, शहरों में घूम-घूमकर कलाबाज़ी और हाथ की सफ़ाई के तमाशे दिखाया करता था।

शहरों में मेले के दिन और गाँवों तथा क़स्बों में पैंठ के दिन वह सड़क पर फटी-पुरानी एक दरी बिछाकर बैठ जाता था और तरह-तरह

की मज़ेदार आवाज़ें—जो उसने अपने उस्ताद से सीखी थीं—लगा-लगाकर बच्चों और आवारे लोगों की भीड़ अपने चारों तरफ़ इकट्ठी कर लेता था। इसके बाद वह अपनी नाक की नोक पर एक टीन की तश्तरी रखता था, किंतु भीड़ कोई विशेष कौतूहल और उत्साह प्रदर्शित नहीं करती थी।

परन्तु जब वह हाथों के बल उल्टा खड़ा होकर चमचमाती हुई छः ताँबे की गेंदें पैरों से ऊपर उछालता और फिर पकड़ लेता था, अथवा जब वह पेट के बल ज़मीन पर लेट, अपनी टाँगों को ऊपर उठाकर गर्दन से मिला देता और फिर इसी हालत में लगभग एक दर्जन चाकुओं से हाथ की सफ़ाई के खेल दिखाता था, तब सारी की सारी भीड़ विस्मय और ख़ुशी से भरकर एकाएक कह उठती—'वाह!—ख़ूब बहुत ख़ूब! कमाल है! क्या जादू है! वाह-वाह!' और बच्चे ख़ूब ज़ोर से तालियाँ पीटते थे तथा देखते ही देखते उसकी दरी पर 'सो[१]' बरसने लगते थे।

केवल अपनी चतुरता के बल पर ही जीवित रहनेवालों को अपनी रोटी कमाने में जैसी कठिनाइयाँ होती हैं, वैसी ही बार्नेबी को भी होती थीं। हमारे आदिमानव—आदम—ने 'भूल[२]' करके जो कष्ट झेले थे, उससे कहीं अधिक कष्ट बेचारे ग़रीब बर्नेबी को अपने पसीने

१—'सो' (Sou) पैसे के समान फ़्रांसीसी सिक्का।

२—आदम और ईव की कहानी—आदम और ईव स्वर्ग में रहते थे। वहाँ उद्यान में एक सेब का वृक्ष था, जिसमें एक अत्यंत सुंदर और स्वादिष्ठ सेब लगा था। ईश्वर की आज्ञा थी कि आदम इस फल को न तोड़े; किंतु इस 'वर्जित फल' के लिए ईव ने बहुत हठ किया, और उसके कहने से आदम ने उसे तोड़ लिया। ईश्वर ने अभिशाप देकर उन्हें स्वर्ग से नीचे पृथ्वी पर ढकेल दिया, जहाँ फिर उन्होंने मिलकर मानव-जाति की सृष्टि की—ऐसा ईसाइयों का मत है।

से रोटी कमाने में झेलने पड़ते थे। क्योंकि एक तो मुसीबत यही थी कि वह जितना काम करना चाहता था, कर नहीं पाता था। मौसम की ख़राबी अड़चनें डालती रहती थीं। आज पानी बरस रहा है तो कल बर्फ़ गिर रही है और आँधी चल रही है। कई-कई दिन तक धूप नहीं निकलती, पर बार्नेबी को अपना खेल-तमाशा दिखाने के लिए तो खुले दिन और धूप की उतनी ही ज़रूरत थी, जितनी फल-फूल उत्पन्न करने के लिए पेड़ों को होती है। तब वह बेचारा क्या करता! जाड़े के दिनों में तो वह पतझड़ के पत्रहीन पेड़ की तरह ही मृत-सा हो जाता था। बर्फ़ से जमी हुई ज़मीन पर वह अपनी कलाबाज़ी दिखाने में असमर्थ रहता और जैसा कि मेरी द' [illegible]म का कहना है कि मौसम की ख़राबी में ठिठुरा जाड़े [illegible] तो [illegible], भूखों [illegible] [illegible], उसी तरह जाड़ों में ग़रीबी की वजह से ठंड तो उसे सताती ही थी, लेकिन ऊपर से भूख भी सताये बिना नहीं मानती थी। पर बार्नेबी था सीधा-सरल आदमी, इसलिए अपने दुःखों को चुपचाप सह लेता था।

बार्नेबी ने धन-सम्पत्ति की उत्पत्ति पर कभी विचार नहीं किया था, और न कभी उसने यह सोचा ही कि मनुष्य-मनुष्य में समानता क्यों नहीं है, इतनी विभिन्नता क्यों है, इतना अन्तर क्यों है, सबको एक-सा खाने-पहनने-रहने को क्यों नहीं मिलता! उसका विश्वास था कि यदि इस जन्म में मनुष्य को दुःख मिलेगा, तो भावी स्वर्गीय जीवन में अवश्य ही सुख मिलेगा और अपनी इसी आस्था पर वह दुःख सह लेता और जीवित था। वह मेरी ऐन्ड्र्यूज़ जैसी उन पापात्माओं की तरह नहीं था जो ऐहिक सुख के लिए अपनी आत्मा तक कुकर्मों के हाथ बेच देते हैं। अपने दुःख के लिए बार्नेबी कभी ईश्वर को अन्यायी और निर्दय नहीं कहता। सचाई और ईमानदारी से वह ज़िन्दगी बिताता है, और हालाँ कि उसकी अपनी पत्नी नहीं है, फिर भी वह पर-स्त्री पर नज़र नहीं डालता; क्योंकि बाइबिल में लिखी सैमसन की कहानी से वह जानता है कि बलशाली पुरुष की सबसे बड़ी शत्रु नारी ही है।

सच बात यह है कि बार्नेबी की प्रवृत्ति वासनात्मक आनन्द की ओर बहुत कम थी। यद्यपि वह शराबी नहीं था, फिर भी कभी-कभी अधिक गर्मी पड़ने पर वह एकाध घूँट पी लेता था। वह धर्म-भीरु था। जब कभी वह गिरजे के सम्मुख होकर निकलता, तुरंत घुटने टेककर प्रार्थना करता—

"हे देवी! जब तक भगवान् की इच्छा से मैं जीवित हूँ, तब तक तू मेरे जीवन की रक्षा कर, और मेरे मर जाने पर हे माता! तू मुझे स्वर्ग के सब सुख दिला देना।"

२

दिन भर बड़ी गरमी और उमस रही थी। पानी बरस चुका था और शाम हो आई थी।

बार्नेबी उदास मन सिर झुकाये सड़क पर चला जा रहा था। उसकी बग़ल में फटी दरी दबी हुई थी, जिसमें गेंदें और चाकू लिपटे थे। वह किसी ऐसी सराय की तलाश में था, जहाँ अगर खाना न मिले, तो कम से कम आराम से रात को सो सके। सड़क पर जिस ओर वह जा रहा था उसी ओर जाता हुआ उसे एक भिक्षु[1] दिखाई पड़ा। बार्नेबी ने उसका सादर अभिवादन किया।

"कहो साथी," भिक्षु ने कहा, "तुम ये हरे-हरे कपड़े क्यों पहने हो? क्या किसी जादू के खेल में तमाशा करने जा रहे हो?"

"नहीं तो महाराज," बार्नेबी ने उत्तर दिया, "मेरा नाम बार्नेबी है मैं जादू के खेल दिखाता हूँ और दुनिया में उससे अच्छा और काम कौन-सा हो सकता है जिससे दोनों वक़्त सुख से पेट भर रोटी खाने को मिल जाय?"

१—बौद्धों की भाँति ईसाइयों में भी भिक्षु होते हैं, जो आजन्म कुमार रहकर संन्यासी-जीवन व्यतीत करते और धर्म-प्रचार करते हैं।

"देखो बार्नेबी," भिक्षु ने उत्तर दिया, "जो कहो सो ख़ूब सोच-समझकर। संसार में भिक्षु-जीवन से बढ़कर आनन्ददायक और कोई अन्य जीवन नहीं है। भिक्षु-जीवन व्यतीत करनेवाले व्यक्ति हर समय भगवान् का ही नाम लिया करते हैं, देवी मरियम की वन्दना में रत रहते हैं, साधु-संतों के गुण गाया करते हैं; और सच तो यह है कि धर्मपरायण जीवन स्वयं ही भगवान् की एक सतत वन्दना है, प्रार्थना है, पूजन है।"

बार्नेबी ने किंचित् अप्रतिभ होकर उत्तर दिया—"महाराज, मैं मानता हूँ कि मैंने आपसे जो भी कहा सो एक अज्ञान व्यक्ति की ही भाँति। आपके और मेरे कर्मों की भला क्या तुलना! और छड़ी की नोक पर पेनी रखकर उसे नाक पर खड़ी करके साध लेने में चतुरता हो भी सकती है, किन्तु यह कोई ऐसा गुण नहीं है जो आप लोगों के धार्मिक गुणों की समता कर सके और इसी लिए महाराज, मैं बड़ी ख़ुशी से आपकी तरह ही दिन-रात भगवान् का नाम लेने के लिए भिक्षु-जीवन अपना सकता हूँ और मरियम[1] माता का तो मैं उपासक हूँ ही। भिक्षु बनने के लिए मैं अपना यह पेशा—जिसके कारण मैं सेआइसन्स से लेकर बोवे तक छः सौ से ऊपर शहरों और गाँवों में प्रसिद्ध हूँ—छोड़ सकता हूँ।"

जादूगर की इस सरलता से भिक्षु बहुत प्रभावित हुआ और क्योंकि उसमें आदमी को परखने की योग्यता भी थी, इसलिए उसने तुरन्त ही समझ लिया कि बार्नेबी जैसी सरल आत्माओं के लिए ही बाइबिल में लिखा है—"सद्भावनाशील व्यक्तियों को ईश्वर पृथ्वी पर भी शांति देता है।"

यही सोचकर भिक्षु ने उत्तर दिया, "बार्नेबी, तुम बड़े भले मनुष्य हो। आज से तुम मेरे मित्र हो। तुम मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें उसी

१—ईसा की कुमारी माता।

विहार में रख लूँगा, जिसका मैं अध्यक्ष हूँ। जिसने मिस्र के संत मेरी को मरुभूमि में पथ दिखलाया था, उसी भगवान् ने मुझे भी प्रेरणा दी है कि मैं तुम्हारे जीवन के निर्वाण-पथ का प्रदर्शक बनूँ।" इस प्रकार बार्नेबी भिक्षु बन गया। जिस विहार में वह रहता था, वहाँ का प्रत्येक भिक्षु अपने को माता मरियम की उपासना में एक दूसरे से बढ़-चढ़कर दिखाना चाहता था और इसके लिए वह अपनी ईश्वर-प्रदत्त सारी बुद्धि और सारी चतुरता प्रदर्शित कर देता था। अध्यक्ष भिक्षु देवी मरियम की वन्दना में, धर्म-शास्त्रों[1] के नियमानुसार, पुस्तकें लिखा करता था। ब्रदर मॉरिस उसके लेखों की प्रतिलिपि सधे हुए हाथ से वेलम[2] पर उतार लिया करता था। ब्रदर अलैग्ज़ैंडर पत्तों पर चित्र बनाया करता था। एक चित्र में क्वीन आफ़ हेविन[3] सोलोमन के सिंहासन पर आसीन हैं और उनकी पदस्थली पर चार सिंह रक्षा के लिए प्रस्तुत बैठे हैं; सात कबूतर-कबूतरी[4] पवित्रता, भक्ति, विद्या, शक्ति, सत्परामर्श, सद्बुद्धि और सहानुभूति इत्यादि परमात्मा के सात वरदानों के स्वरूप उनके सुमुख के तेजपुंज के चारों ओर उड़ते दिखाये हैं, और उनकी परिचर्या में स्वर्णिम केश-राशिवाली छः दासियाँ भी चित्रित की गई हैं। वे दासियाँ क्रमशः विनम्रता, विनयशीलता, कुमारीत्व, आज्ञाकारिता, विज्ञता और विलगता की प्रतीक हैं। उनके चरणों में नितांत श्वेत दो नग्न व्यक्ति झुके हुए अर्चना कर रहे हैं अपनी आत्माओं के परिष्करण के लिए और हमें विश्वास है कि सर्वशक्तिशालिनी माता के चरणों में उनकी प्रार्थना व्यर्थ नहीं होती होगी।

---

१ — ईसाइयों के धर्मशास्त्र।

२—वेलम (Vellum)—गाय, भेड़ और बकरी के बच्चों की खाल से तैयार की हुई छाला, जैसे हमारे यहाँ मृगछाला होती है।

३—स्वर्ग की रानी—देवी वर्जिन।

४—ईसाइयों में कबूतर-कबूतरी पवित्रता और सरलता के प्रतीक माने जाते हैं।

एक दूसरे चित्र में ब्रदर अलैग्जैंडर ने ईव का चित्र इस प्रकार अंकित किया है कि उनका पतन और पुनरुद्धार एक ही साथ प्रदर्शित हो जाते हैं—पत्नी के रूप में ईव पृथ्वी पर पड़ी है और पवित्र कुमारी मरियम सिंहासनासीन हैं।

इसके अतिरिक्त 'वैल ऑफ लिविंग वाटर्स', 'सन', 'फ़ाउन्टेन', 'लिली', 'मून', 'सांग आफ़ सांग्ज' द्वारा वर्णित 'गार्डिन ऐन्क्लोज़्ड,' 'गेट आफ़ हेविन,' और 'सिटी ऑफ़ गॉड'[1] आदि देवी वर्जिन के प्रतीकों के चित्र भी थे।

इसी प्रकार ब्रदर मारबोड भी मेरी के प्रियतम उपासकों में से था। वह दिन भर पत्थर पर मूर्तियाँ तराशा करता था। उसकी दाढ़ी और भौंहों पर धूल जमी रहती थी; आँखों से पानी बहता रहता था और वे सूजी रहती थीं; किंतु उसकी शक्ति और उल्लास में कोई कमी नहीं हुई थी। यद्यपि वह यथेष्ट वयस्क हो गया था फिर भी 'स्वर्ग की रानी' उसे अपने पास नहीं बुलाती थीं। मारबोड ने जो उनकी प्रतिमा बनाई थी, उसमें वे सिंहासनासीन थीं। उनके सुमुख के चारों ओर जो तेज-पुंज था, उसमें सच्चे मोती जड़े हुए थे। उनके वस्त्र उनके चरणों को भी ढँकते थे, जिनके विषय में पैग़म्बर का कहना है—मेरी प्रियतमा सुरक्षित उपवन-सी है।

एक अन्य प्रतिमा में मारबोड ने उन्हें एक सुकुमार बालिका के रूप में दिखाया है। उसमें वे जैसे कहती लगती हैं— "यदि तुम मेरी माता के गर्भ से उत्पन्न हो तो भी तुम मेरे परमेश्वर हो।"

इसके अतिरिक्त उस विहार में कवि भी थे जो लैटिन के गद्य और पद्य दोनों में ही देवी की प्रार्थना के लिए भजन लिखते थे।

१—क्रमशः संजीवन जल का कुआँ, सूर्य, झरना, कमलिनी, चंद्रमा, नंदन कानन, स्वर्ग का द्वार, ईश्वर का नगर।

इन्हीं कवियों में पिकार्दी का रहनेवाला एक भिक्षु था जो साधारण चलते हुए छंदों में भी हमारी माता के अलौकिक गुणों का यशोगान करता था।

३

अपने अन्य साथी भिक्षुओं को इस प्रकार देवी का यशोगान करते और उपासना में रत देखकर बार्नेबी को अपनी अज्ञता पर बड़ा दुःख होता था।

विहार के खुले उपवन में अकेले घूमते हुए बार्नेबी ने एक दीर्घ निश्वास खींचकर सोचा—उफ़! मैं भी कैसा अभागा हूँ—मैं अपने साथियों की तरह माता की उपासना नहीं कर सकता, उनका यशोगान नहीं कर सकता, पर उन्हें मैं कितना प्यार करता हूँ। हाय! मैं कैसा मूर्ख हूँ। कोई भी कला और कारीगरी नहीं जानता। आपकी स्तुति में भजन नहीं गा सकता, चित्र नहीं बना सकता, प्रतिमा नहीं बना सकता, और न छंद ही गढ़ सकता हूँ—मुझ में कोई गुण नहीं है।

इस प्रकार बार्नेबी दुखी रहने लगा। एक दिन शाम को कुछ भिक्षुओं को उसने बातें करते सुना। उनमें से एक ने कहा कि एक ऐसा भिक्षु था जो नितांत अज्ञान था और केवल 'मेराया' (Merie) ही जपा करता था। उस बेचारे ग़रीब भिक्षु को लोग उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे, किन्तु जब उसकी मृत्यु हुई तब उसके मुख में से एकाएक 'मेराया' नाम के प्रत्येक शब्द के लिए एक गुलाब का फूल निकला। इस प्रकार उसकी पावन भक्ति का संसार को प्रमाण मिल गया।

यह कहानी सुनकर बार्नेबी के हृदय में माता वर्जिन के प्रति और भी अधिक आश्चर्य-सिक्त स्नेह और भक्ति उमड़ आई, किन्तु इससे उसे अपनी अज्ञता पर संतोष नहीं हुआ; उसके प्रति तो उसका क्षोभ जैसा का तैसा बना रहा और बनी रही यह आकांक्षा भी कि मैं अपनी अलौकिक माता की उपासना के लिए कुछ न कुछ कला अवश्य प्रदर्शित

करूँ। परन्तु वह यह सब कैसे करे,—यह उसकी समझ में नहीं आता था; इसलिए दिन-प्रतिदिन वह और भी अधिक चिंतित और उदास रहने लगा।

एक दिन प्रातः-काल बार्नेबी जब सोकर उठा तब बहुत प्रसन्न था। दौड़ा-दौड़ा वह अन्दर गिरजे में गया और वहाँ लगभग एक घण्टे तक रहा। दोपहर को खाना खाने के बाद वह फिर गिरजे चला गया।

इस प्रकार जिस समय गिरजे में कोई नहीं रहता था तथा अन्य भिक्षु-गण चित्र और मूर्ति बनाने में व्यस्त रहते थे, बार्नेबी वहाँ जाता और बहुत देर तक रहता। धीरे-धीरे उसकी उदासी दूर होती गई और वह प्रसन्न रहने लगा। इस परिवर्तन ने भिक्षुओं के मन में बार्नेबी के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न कर दी। वे आपस में पूछ-ताछ करने लगे कि आख़िर बार्नेबी अकेले गिरजे में जाकर करता क्या है।

अध्यक्ष का कर्तव्य था कि वह अपने प्रत्येक शिष्य के प्रत्येक व्यवहार पर दृष्टि रक्खे। इसलिए एक दिन वह दो और वृद्ध भिक्षुओं को लेकर गिरजे पहुँचा। वहाँ जाकर उन लोगों ने देखा कि गिरजे के किवाड़ बाहर से बन्द हैं। तब उन्होंने किवाड़ों की सन्धि में से झाँका और देखा—

माता के सम्मुख वेदी के समीप बार्नेबी पैर ऊपर किये सिर के बल खड़ा छः ताँबे की गेंदों और बारह चाकुओं को पैरों से ही उछाल रहा है। जिस कला के लिए वह सुप्रसिद्ध था, उसी का प्रदर्शन वह अपनी देवी को प्रसन्न करने के लिए कर रहा था किन्तु यह न समझकर वे दोनों वृद्ध भिक्षु चिल्ला पड़े—"हाय! हाय! यह तो धर्म के विरुद्ध आचरण कर रहा है, यह पाप है!"

परन्तु अध्यक्ष-भिक्षु जानता था कि बार्नेबी की आत्मा कितनी शुद्ध है, इसलिए उसने समझा कि वह पागल हो गया है। यह विचार कर तीनों ने निश्चय किया कि वे बार्नेबी को सावधानी से

वहाँ से हटा दें। वे लोग चलने ही वाले थे कि उन्होंने देखा, माता अपने सिंहासन से उतरकर वेदी पर आईं और आकर अपने नीलांचल से उन्होंने बार्नेबी के सिर से पसीने की बूँदें पोंछ दीं!

यह देखकर अध्यक्ष भिक्षु वहीं पृथ्वी पर घुटने टेककर बैठ गया और कहने लगा :—

"सरलहृदय मनुष्य धन्य हैं, क्योंकि वे ईश्वर के दर्शन करेंगे।"

"तथास्तु" उन दोनों वृद्ध भिक्षुओं ने पृथ्वी को चूमकर कहा।

पेरिस की सुन्दरी

'इन्नोसैंत्स' के गिरजे में उस दिन संयोग से मेरे मास्टर साहब ऐबे कोयनार्द को ब्रदर जीन शवारे मिल गये और वे उनसे ब्रदर ओलीवर मेलार्द के विषय में बातचीत करने लगे; क्योंकि इधर कुछ दिनों से वे उनकी पद्यमय धर्मशिक्षा पढ़ रहे थे।

शवारे ने कहा, "इसमें कहीं-कहीं बहुत अच्छी बातें मिल जाती हैं..... उन पाँच सुन्दरी स्त्रियों और उनकी दलाल की कहानी विशेष रूप से अच्छी है......"

आप समझ ही सकते हैं कि ब्रदर ओलीवर लुई ग्यारहवें के समय में थे, इसलिए उनकी भाषा में कुछ भद्दापन है, और जो शब्द उन्होंने व्यवहृत किया है वह तो बहुत ही अश्लील है, परन्तु आज हमारे इस सुसंस्कृत युग में बोलचाल की भाषा में भी मीठापन और शालीनता अपेक्षित है, इसलिए मैंने दलाल कहा।

"तो दलाल कहने से आपका मतलब है" मेरे मास्टर साहब ने कहा कि, "वह औरत जो प्रेम तथा प्रेम करने के मामले में पुरुषों और स्त्रियों के बीच मध्यस्थ बनती है। लैटिन भाषा में तो ऐसी औरत के लिए बहुत से नाम हैं, यथा—लीना, कौंसिलियात्रिक्स और इंतरनन्शिया लबीदिनम—अर्थात् कुटनी, दूती, इत्यादि। ये चालाक औरतें बड़े-

बड़े काम कर डालती हैं; किन्तु वे यह पेशा पैसे के लिए करती हैं, इसलिए हम उन्हें निःस्वार्थ नहीं कह सकते। मेरे विचार से तो आप अपनी इस औरत को 'दात्री' कहिए। यह शब्द सुनने में भी बुरा नहीं लगता।"

"अच्छा, तो यही सही, ऐबे" ब्रदर जीन शवारे ने अपनी स्वीकृति देते हुए कहा, "पर कृपा करके आप इसे मेरी औरत न कहकर ब्रदर ओलीवर की कहिए। हाँ, तो एक दात्री 'पाँत दास तोर्नाले' में रहती थी। एक दिन उसके घर एक पुरुष आया और उसके हाथ में एक अँगूठी देकर बोला, देखो, यह ख़ालिस सोने की है और इसमें सच्चे हीरे का नग जड़ा है। तुम तो यहाँ पास-पड़ोस में बहुत सी सुंदरी युवतियों को जानती होगी। इनमें जो सबसे सुंदर हो, उससे जाकर कहो कि यदि वह मेरी तबियत ख़ुश कर देगी, तो यह अँगूठी उसे मिल जायगी।"

दात्री पाँच अनिंद्य सुन्दरी युवतियों को जानती थी, जो सब की सब सिते के आसपास ही रहती थीं। वे क्रमशः पिकार्दी, पोयातो, तोराँ, लियोज़ और पेरिस की रहनेवाली थीं।

दात्री सबके पहले पिकार्दीवाली सुन्दरी के घर पहुँची और दरवाज़ा खटखटाया। एक नौकरानी ने आकर किवाड़ खोले, और दात्री ने उसे अपना अभिप्राय बतलाया, किन्तु उत्तर में सुन्दरी ने कहलवा दिया—"तू अभी यहाँ से चली जा। मैं एक भी बात ऐसी नहीं सुनना चाहती।"

पिकार्दीवाली सुन्दरी सती नारी थी।

तत्पश्चात् दात्री पोयातोवाली सुन्दरी के पास पहुँची। सुन्दरी ने उसकी बात सुनकर उत्तर दिया, जिन साहब ने तुझे यहाँ भेजा है, उनसे जाकर कह दे कि मैं कोई वेश्या नहीं हूँ।

यह भी सती स्त्री थी, किन्तु पिकार्दीवाली से कम, क्योंकि वह अपने सतीत्व का बखान करती है।

इसके बाद दात्री तेरांवाली तीसरी सुन्दरी के पास गई और उसे अँगूठी दिखाकर अपना मतलब बतलाया।

'मैं!—इतना विश्वासघात!" उसने उत्तर दिया,"लेकिन—लेकिन अँगूठी है तो बहुत सुन्दर।"

"अगर राज़ी हो जाओ तो यह तुम्हारे लिए ही तो है। कोई ऐसी बड़ी बात तो है नहीं!"

"नहीं-नहीं। मैं इस अँगूठी के मूल्य में अपना सतीत्व नहीं दे सकती। और कहीं मेरे पति को मालूम हो गया कि मैंने ऐसा काम किया है, तो उन्हें बड़ा दुःख होगा। वे कितने अच्छे हैं। मैं व्यर्थ ही क्यों उनके मन को क्लेश पहुँचाऊँ!"

मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि यह औरत अपने हृदय से असती थी।

फिर दात्री लियोंज़वाली सुन्दरी के पास पहुँची। उसने चीख़-कर कहा—"उफ़! तुम तो मेरा भला चहती हो लेकिन मेरा वह पति तो बड़ा निर्दय है। उसके दिल में बड़ी जलन होती है। अगर उसे पता चल जाय कि मैं अब भी अँगूठियाँ लेती हूँ, तो वह मेरी नाक काट लेगा।"

मेरी राय में यह लियाँज़वाली सुन्दरी किसी काम की औरत नहीं थी।

अन्त में दात्री जल्दी से पेरिसवाली सुन्दरी के पास गई। पेरिसवाली बड़ी ही मुँहफट औरत थी। उसने तड़ाक से उत्तर दिया, "बुध के दिन मेरा पति बाहर अंगूर के बाग़ में काम करने चला जाता है। जिन्होंने तुम्हें भेजा है, उन साहब से कहना कि बुध को ही मैं उनसे मिलूँगी।"

"इस प्रकार ब्रदर पिकार्दो के मतानुसार जिस भाँति पिकार्दी से पेरिस तक की पाँच प्रकार की क्रमशः अच्छी-बुरी नारियाँ हैं, ठीक उसी भाँति पाँच प्रकार की अच्छी-बुरी नारियाँ समस्त नारी-जाति में हैं। इस विषय में आपका क्या मत है मास्टर साहब!"

मेरे मास्टर साहब ने उत्तर दिया—"परमात्मा की न्याय-दृष्टि के अनुसार इन पाँच प्रकार की नारियों के कर्मों और भावनाओं का विवेचन करना कुछ कठिन है। मैं इस विषय में कोई विशेष बात नहीं कह सकता। फिर भी मेरे ख़याल से तो उस लियोंज़वाली सुंदरी से वह पेरिस वाली सुन्दरी कहीं अच्छी थी, जिसे कोई डर नहीं था, जो बिलकुल निर्भय थी।"

किन्तु ब्रदर जीन शवारे ने कहा—"मैं यह कभी नहीं मान सकता। जो स्त्री अपने पति से डर सकती है, वह एक दिन नरक की ज्वाला से भी डर सकती है और इसी लिए हो सकता है कि वह अपने पापों को भी स्वीकार करके उनका प्रायश्चित्त कर ले और कुछ दान-पुण्य भी कर दे; क्योंकि वास्तव में यही तो एक बात है जिससे हमारा मतलब है। यदि यह भी न हो, तो बताइए कि फिर बेचारे ग़रीब कपूशिन को उस स्त्री से क्या मिलेगा, जो संसार में किसी से भी नहीं डरती!"

माली

"जब हम बच्चे थे, तब हमारे घर में एक छोटी-सी बगिया थी, जो सिर्फ़ बीस क़दम लम्बी थी, लेकिन हमारे सारे सुख-दुःख की वह जैसे एक समूची दुनिया थी," मान्सीयोर[१] बर्जारे ने कहा।

"तुम्हें पुतोया की याद है, क्यों लूसियाँ?" ज़ो ने अपनी आदत के अनुसार ओंठ दबाकर मुस्कराते हुए कहा। उसका सिर कढ़ाई के फ्रेम पर झुक रहा था और हाथ में सुई चल रही थी।

"पुतोया की याद नहीं होगी मुझे! लो, तुमने भी एक ही बात कही। अरे बचपन में जितने लोगों को देखा था, उन सबमें आज सिर्फ़ पुतोया की ही सूरत तो अच्छी तरह याद है। उसकी सूरत तो जैसे हूबहू मेरी आँखों के सामने है। उसकी छोटी से छोटी बात भी मैं नहीं भूला हूँ। उसका सिर लम्बा था।"

१—फ़्रांस में श्रीमान् के लिए शब्द है।

"माथा नीचा था......," मामसैले[१] ज़ो ने बीच में ही अपनी बात जोड़ी।

इसके बाद कुछ भारी आवाज़ और बनावटी गम्भीरता से दोनों भाई-बहन एक-एक करके कहने लगे, जैसे पुलिस को किसी की हुलिया बता रहे हों :—

"नीचा माथा।"

"फटी-फटी आँखें।"

"चोर की-सी नज़रें।"

"कनपटी पर लहसुन[२]!"

"गालों के हड्डे उठे हुए, लाल-लाल और चमकीले।"

"खुरदरे कान।"

"चेहरे पर कोई भाव नहीं—बिलकुल गुमसुम।"

"उसके मन की बात उसके हर वक्त हिलते हाथों से ही मालूम होती थी।"

"दुबला-पतला,...कमर किसी क़दर झुकी हुई।"

"लेकिन सचमुच उसमें ग़ज़ब की ताक़त थी।"

"अपनी उँगली और अँगूठे के बीच में दबाकर पाँच-फ़्रैंक का सिक्का तक तोड़ देता था!"

"उसका अँगूठा बहुत बड़ा था।"

"आवाज़ मरी-मरी और खिंची-खिंची-सी।"

"स्वर में कुछ मिठास-सा, स्नेह-सा!"

सहसा मान्सीयोर बर्जारे ने उत्सुक होकर कहा—"अरे ज़ो, उसके पीले-पीले बाल और छोटी-छोटी दाढ़ी गिनना तो हम लोग भूल ही गये! अच्छा, तो फिर शुरू से गिनायें।"

१—फ़ांस में श्रीमती के लिए शब्द है।

२—तिल से बड़ा चिह्न जो बहुत से लोगों के शरीर पर होता है। फ़्रांस में इसे 'कौवे का पैर' कहते हैं।

इस विचित्र वार्तालाप को पालीन अभी तक चुपचाप आश्चर्यचकित सुनती रही थी; किन्तु अब जब उससे और चुप न रहा गया, तब उसने अपने पापा और बुआ से पूछ ही तो लिया,—"आप लोगों को यह सब याद कैसे हो गया—यह कोई गाना तो है नहीं ? और आप इसे जैसे मन्त्र की तरह पढ़ रहे थे।"

मान्सीयोर बर्जारे ने गम्भीर होकर उत्तर दिया—"पालीन, जो कुछ तुमने अभी सुना, उसे तुम बर्जारे कुटुम्ब का गुरु-मन्त्र समझो और हम लोगों ने इसे तुम्हें इसलिए सुनाया है कि तुम इसे याद रक्खो, जिससे कि तुम्हारी बुआ और मेरी मृत्यु के साथ ही यह गुरु-मन्त्र कहीं मिट न जाय। तुम्हारे बाबा एलुयाए बर्जारे ऐसे आदमी नहीं थे जो छोटी-छोटी मामूली बातों में आनन्द लेते हों, फिर भी वे इस बात को बहुत मानते थे, क्योंकि इसका जन्म बड़ा रहस्यपूर्ण है। वे इसे 'पुतोया का शरीर-विज्ञान' कहते थे और कहा करते थे कि बहुत-सी बातों में पुतोया का यह 'शरीर-विज्ञान' कुआरेज़मेप्रानान्त के शरीर-विज्ञान से कहीं बढ़ा-चढ़ा है। यदि ज़नोमेनीज़ का लिखा हुआ वर्णन अधिक विद्वत्ता और पांडित्य से पूर्ण है, तो पुतोया का वर्णन अपने सुलझे हुए स्पष्ट विचारों तथा शैली की सरलता में अपनी समता नहीं रखता। तुम्हारे बाबा कहा करते थे इस विषय में, क्योंकि तब तक तोरां के डाक्टर लादुबेल ने 'राबेलाज़' के चौथे भाग का तीसवां, इकतीसवां और बत्तीसवां परिच्छेद नहीं लिखा था।"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आया" पालीन बोली।

"बात यह है बेटी, कि तुम पुतोया को जानती नहीं, इसी लिए तो। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि तुम्हारी बुआ ज़ो और मेरे बचपन में पुतोया से अधिक परिचित अन्य कोई व्यक्ति हम लोगों का नहीं था। तुम्हारे बाबा बर्जारे के घर में तो पुतोया का नाम हर किसी की ज़बान पर रहता था और धीरे-धीरे हम लोगों को भी यह विश्वास हो गया था कि हमने भी पुतोया को देखा है।"

"पर यह पुतोया था कौन?" पॉलीन ने पूछा।

किंतु इस प्रश्न का उत्तर देने के बजाय उसके पिता हँसने लगे और मॉमसैले ज़ो भी अपनी हँसी रोक नहीं सकीं पर उनके ओंठ बंद ही रहे।

पॉलीन कुछ चकराकर कभी पापा को देखती, कभी बुआ को। बुआ का इस तरह हँसना उसे बड़ा अजीब लगा और इससे भी अधिक अजीब लगा कि बुआ उसी बात पर हँस रही थी जिसपर उसके पापा, क्योंकि वैसे तो दोनों बहन-भाई अलग-अलग रुचि के थे।

"पापा, बताओ न पुतोया था कौन। तुम कहते हो न कि मुझे पुतोया की बात जाननी चाहिए।"

"बेटी, पुतोया माली था। आर्तोया के एक भले ईमानदार किसान का वह बेटा था। पहले उसने संत-उमर में एक खिलौनों की दुकान खोली, लेकिन वह अपने गाहकों को ख़ुश नहीं कर सका। इसलिए उसकी दुकान चली नहीं, चौपट हो गई। फिर वह दिन में मजूरी करने लगा, लेकिन उसके मालिक लोग उससे शायद ही कभी ख़ुश होते थे।"

मॉमसैले ज़ो की हँसी अभी तक रुकी नहीं थी। उन्होंने वैसे ही हँसते हुए कहा, "तुझे याद है लूसियाँ, जब तेरे बाबा को अपने डेस्क पर दवात, क़लम, क़ैंची या मोहर लगाने की लाख नहीं मिलती थी, तो वे कहा करते थे कि पुतोया आया होगा यहाँ!"

"हाँ, यह तो कहना मैं भूल ही गया," मॉन्सीयोर बर्जारे ने कहा, "पुतोया बेचारा बदनाम था।"

"बस इतनी ही बात है उसकी?" पॉलीन ने पूछा।

"नहीं बेटी, अभी और—पुतोया में कुछ विचित्र बात थी। वह हमसे परिचित था, हम उसे जानते थे, फिर भी वह......"

"था नहीं।" ज़ो ने बात पूरी की।

मॉन्सीयोर बर्जारे ने नाराज़ होकर ज़ो की ओर देखा।

"क्या कहती हो तुम ! तुम क्यों सारा मज़ा बिगाड़े दे रही हो ? पुतोया था नहीं ! यह तुम कैसे कह सकती हो ? क्या तुम यह साबित कर सकती हो ? यह कहने से पहले कि पुतोया था ही नहीं, तुम यह तो जान लो कि 'होना' कहते किसे हैं, कैसे-कैसे लोग होते हैं, हो सकते हैं। पुतोया था तो ! लेकिन हाँ, यह बात ज़रूर है कि उसका अस्तित्व कुछ विचित्र था।"

पॉलीन खीझकर बोली—"अब तो मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है।"

"बेटी, सब बात सच्ची-सच्ची तुम अभी ज़रा देर में समझ जाओगी। पहले यह समझ लो कि पुतोया जब पैदा हुआ था, तब वह पूरा आदमी था। तब मैं बच्चा था और तुम्हारी बुआ भी नन्हीं बच्ची ही थी। संत-उमर के एक पड़ोस के मुहल्ले में हम लोग एक छोटे-से मकान में रहते थे। हमारे मामा-पापा चैन से दिन बिताते थे, परन्तु इसमें विघ्न डालने सत-उमर की एक बुढ़िया मदाम कार्नोलो आ टपकी। शहर से बारह मील दूर वह अपने मांप्लासे वाले भवन में रहती थी और इत्तफ़ाक़ से वह हमारी मा की दादी-चाची निकल आई। इस नाते का उसने पूरा फ़ायदा उठाने के लिए हमारे मामा-पापा से घनिष्ठता बढ़ानी शुरू की और फल-स्वरूप उनपर यह ज़ोर डाला कि वे हर इतवार को उसके यहाँ मांप्लासे में खाना खाने आयें। पर वहाँ उनकी तबीयत ऊब जाती थी, किंतु वह बुढ़िया बराबर यही कहा करती थी कि इतवार के दिन तो नातेदारों को एक साथ बैठकर खाना ज़रूर ही खाना चाहिए; यह हमारा पुराना रिवाज है, और जो इसे नहीं मानते वे दोगले होते हैं। इससे पापा बड़े परेशान थे। कोई उनकी परेशानी देखता तो उसे उन पर दया आती। पर मा अपनी बूढ़ी चाची की इस ज़बर्दस्ती को हँसकर सह लेती थीं।"

"औरतों के करम में तो सहना ही लिखा है।" ज़ो ने कहा।

"सो बात तो नहीं है, ज़ो ! दुनिया में सभी को थोड़ा-बहुत दुख सहना पड़ता है। माँ और पापा अगर मना भी कर देते थे, तब भी मदाम कार्नोले की घोड़ा गाड़ी उन्हें लेने के लिए हर इतवार को तीसरे पहर आ जाती थी और उन्हें बे मन से मांप्लासे जाना ही पड़ता था। और यह एक ऐसा नियम बन गया था, क़ानून की तरह ही कड़ा, कि जिसे तोड़ने के लिए खुलकर विद्रोह करना ज़रूरी था। आख़िर, तंग आकर पापा ने एक दिन क़सम खाई कि अब कभी मदाम कार्नोले के घर नहीं जायेंगे, चाहे जो भी हो। और यह काम उन्होंने माँ पर छोड़ दिया कि वे न जाने के लिए हर बार कोई नया बहाना बना दें, किन्तु यह एक ऐसा काम था जिसके लिए माँ बिलकुल अयोग्य थीं, क्योंकि झूठ बोलना और बातें बनाना उन्हें आता नहीं था।"

"लूसियाँ, यह क्यों न कहा जाय कि वे झूठ बोलना चाहती ही न थीं और अगर चाहतीं, तो क्या इतनी सी बात नहीं बना सकती थीं?"

"यह बात ज़रूर है कि अगर कोई ठीक वजह निकल ही आती, तो फिर वे झूठा बहाना बनाना पसंद नहीं करती थीं। और शायद तुम्हें याद हो उस दिन की जब उन्होंने खाते वक़्त कहा था—"चलो अच्छा हुआ ज़ो को खाँसी बहुत है—अब इस बार तो मांप्लासे न जाने का अच्छा बहाना मिल गया।"

"हाँ यह बात थी तो" ज़ो ने कहा।

"पर, फिर तो तुम अच्छी हो गई थीं, ज़ो। एक दिन कार्नोले ने आकर माँ से कहा, 'देखिए इस बार इतवार को मैं मांप्लासे में आप लोगों के आने की राह देखूँगी। खाना बिलकुल तैयार रहेगा।' पर, क्योंकि पापा माँ से पहले ही कुछ न कुछ बहाना बनाने के लिए कह चुके थे, इसलिए न जाने के लिए बहाना उन्हें बनाना ही था। लेकिन कोई बात ठीक उन्हें सूझ नहीं पड़ती थी; यों ही कहने लगीं—'नहीं-नहीं, देखिए इस इतवार को तो हम लोग नहीं आ सकेंगे, क्योंकि उस दिन माली आनेवाला है।"

"यह सुनकर मदाम कार्नोले ने ड्राइंगरूम के चमचमाते दरवाज़े की तरफ़ नज़र फेरी तो बाहर उन्हें एक उजाड़ बग़िया दिखाई पड़ी, जहाँ कुछ पेड़ और घास यों ही जंगल की तरह खड़े थे।" कार्नोले यह देखकर कहने लगीं—'तुम्हें अपने माली का इंतज़ार है। किस लिए? क्या बगिया में काम करने के लिए?'

"तब माँ को एकाएक ख़याल आया कि मेरी यह माली वाली बात तो साफ़ बहाना मालूम पड़ती है। इतने में ही मदाम कार्नोले बोल पड़ीं, 'लेकिन क्या माली यहाँ सोमवार या मंगल को काम नहीं कर सकता? इन दोनों दिनों में से कोई भी एक दिन ठीक रहेगा। और फिर इतवार को तो कोई काम करना ठीक भी नहीं। तुम्हारा माली क्या पूरे हफ़्ते मन कहीं और काम में लगा रहता है'?"

"मैंने अक्सर देखा है कि कभी कभी बड़ी बेवक़ूफ़ी की बातों को भी काटना मुश्किल हो जाता है, वे लोगों को अवाक् कर देती हैं; किन्तु मदाम कार्नोले ने इस मामले में कुछ ज़रूरत से ज़्यादा छानबीन शुरू की, 'तुम्हारे माली का नाम क्या है, जी?' उन्होंने कुर्सी से उठते हुए पूछा 'नाम?—हाँ—पुतोया' माँ ने तुरंत ही उत्तर दिया।"

"पुतोया का नामकरण भी हो गया और तब से उसका अस्तित्व भी संसार में हो गया। जब मदाम कार्नोले उठकर जाने लगीं, तब कहती गईं, 'पुतोया! ओह—यह नाम मैंने कहीं सुना तो है—पुतोया?—हाँ—ठीक पुतोया! अरे, इसे तो मैं जानती भी हूँ—लेकिन याद नहीं आ रहा है इस वक़्त। तो वह रहता कहाँ है? वह शायद दिन में काम करने जाता है और जब किसी को उसकी ज़रूरत होती है, तो वह उसे वहाँ से, जहाँ वह काम करता होता है बुला भेजता है।... उफ़—लेकिन अब मुझे ख़याल आया—वह तो बड़ा अवारा है...बदमाश, कहीं का...नाकारा! तुम उससे होशियार रहना।"

"बस, उसी दिन से पुतोया का इस तरह चरित्र भी बन गया।"

× × × ×

२

मॉन्सीयोर गोबाँ और मान्सीयोर जीन मार्तो दोनों अंदर आये। मॉन्सीयोर बर्जारे ने बतलाया कि हम लोग पुतोया के बारे में बातचीत कर रहे थे। वह एकदम मेरी माँ के दिमाग़ की सूझ है—कपोल-कल्पित। सेत-उमर में उसने एक माली ख़ाली अपनी बात से ही पैदा कर दिया और फिर उसका नाम भी रख दिया और उसके बाद वह सब आदमियों की तरह काम-काज भी करने लगा।"

"मैं समझा नहीं?" मॉन्सीयोर गोबाँ ने अपना चश्मा रूमाल से साफ़ करते हुए कहा, ज़रा एक बार दोहरा दीजिए।"

"ज़रूर" मॉन्सीयोर बर्जारे ने स्वीकार किया और फिर कहने लगे, "कहीं कोई माली नहीं था—उसका अस्तित्व तक न था। मा ने सिर्फ़ यही कह भर दिया था—माली आनेवाला है। और बस, माली पैदा होकर काम-काज भी करने लगा।"

"लेकिन प्रोफ़ेसर साहब यह तो बताइए," मॉन्सीयोर ने पूछा, "अगर वह था ही नहीं तब काम-काज कैसे करता था?"

"नहीं, मेरे कहने का मतलब यह है कि एक तरह से वह था," मॉन्सीयोर बर्जारे ने उत्तर दिया।

"तब क्या आपका मतलब है कि वह हवाई था?" मॉन्सीयोर गोबाँ ने तीखे स्वर में कहा।

"तो क्या किसी का काल्पनिक अस्तित्व, अस्तित्व नहीं है?" प्रोफ़ेसर ने छूटते ही कहा, "क्या पौराणिक[१] व्यक्ति आप पर अपना प्रभाव नहीं डालते? मॉन्सीयोर गोबाँ, क्या पौराणिक गाथाओं के कल्पित पात्र

१—यहाँ पर पुराण और पौराणिक से अभिप्राय भारतीय पुराणों और तत्सम्बन्धी बातों से नहीं है, वरन् उन गाथाओं से है जो ऐतिहासिक काल से पूर्ववर्ती समय में रची गई हैं; वे अधिकतर काल्पनिक ही हैं।

यथार्थ चरित्रों की अपेक्षा हम सब लोगों के मन पर अपनी गहरी छाप नहीं छोड़ जाते, क्या हम उनसे अति प्रभावित नहीं होते? सभी देशों में, सभी युगों में ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनके अस्तित्व की यथार्थता पुतोया के अस्तित्व से किसी तरह अधिक वास्तविक नहीं है, फिर भी उन्होंने प्रेम और घृणा तथा भय और आशा से समूचे के समूचे राष्ट्रों को अनुप्रेरित किया है, उन्होंने बड़ी-बड़ी हत्याएँ कराई हैं, बड़े-बड़े बलिदान लिये हैं, राजनीतिक और सामाजिक नियम बनाये हैं, विधान बनाये हैं। मॉन्सी-योर गोवाँ, युग-युग की पौराणिक गाथाओं की बात सोचो ज़रा। यह मैं मानता हूँ कि पुतोया एक ऐसा पौराणिक पात्र है, जो सबसे निम्न श्रेणी का है और जिसे लोग नहीं जानते। देखिए वह सैटर[१] जो उत्तरीय किसानों के साथ बैठकर खाना खाता था, अमर चित्रकार जोर्देयाँज के चित्रों में अंकित किया गया, और ला फोतेन की एक कहानी में भी उसका ज़िक्र है। साइकोरैक्स के बड़े-बड़े बालोंवाले बेटे को शेक्सपियर ने अपनी महती कला में स्थान देकर अमर कर दिया। पुतोया बेचारा ज़रा अभागा है, इसलिए किसी कवि और चित्रकार की कृपा का पात्र नहीं बन सका है अभी तक। बात यह है कि उसमें न विशालता है और न रहस्य ही। न उसका कोई प्रखर व्यक्तित्व ही है। ऐसी अन्य कोई विशेषता भी उसमें नहीं है जो उसे प्रख्यात कर सकती। एक बहुत ही मामूली से दिमाग़ की उपज है वह। उसकी कल्पना करनेवाली साधारण पढ़ी-लिखी थी; कला को जन्म देनेवाली कोई प्रतिभा उसमें थी नहीं। अब तो आपकी समझ में आ गया होगा कि वास्तव में पुतोया कौन है, कैसा है।"

"हाँ, मैं समझ गया," मॉन्सीयोर गोवाँ ने उत्तर दिया।

फिर मॉन्सीयोर बर्जारे ने कहना शुरू किया—"पुतोया था। मैं

१—ईसाइयों का एक देवता जिसका नीचे का आधा शरीर बकरी का होता है और जो बड़ा विलासी तथा चंचल मन का समझा जाता है।

इस बात को मानता हूँ कि वह था। ज़रा सोचकर देखिए तो आप लोगों की समझ में आ जायगा कि 'होने' का अर्थ यह नहीं है कि कुछ हाड़-मांस—भौतिक पदार्थ—हो ही, तभी 'होना' हो। यह तो केवल कर्त्ता और गुण का सम्बन्ध मात्र है—यह केवल एक सम्बन्ध ही बतलाता है।"

"निस्संदेह," जीन मार्तो ने कहा, "फिर भी यदि गुण-रूप कुछ भी न हो, तो यह न होने के बराबर ही है। बहुत दिन हुए जब किसी ने कहा था—मैं जो हूँ, सो हूँ। मुझे अच्छी तरह याद नहीं—मुझे सब बातें याद नहीं रहतीं; हाँ लेकिन जिसने भी यह बात कही, उसने बड़ी बेवक़ूफ़ी दिखलाई। यह अर्थहीन शब्दावली कहने से उसका अभिप्राय यही था कि वह गुणहीन है और उसका किसी से संबंध नहीं है; अर्थात् दूसरे शब्दों में उसने कहा कि मेरा अस्तित्व ही नहीं है, और इस प्रकार उसने अपनी एक प्रकार से हत्या ही कर डाली। फिर उसके बाद तो उसका नाम कभी सुन नहीं पड़ा—मैं दावे के साथ कह सकता हूँ।"

"तब तो आपका दावा ग़लत है।" मॉन्सीयोर बर्जारे ने उत्तर दिया, "उसने वे जो अहंकारपूर्ण शब्द कहे थे, उनका प्रभाव दूर करने के लिए उसने अपने नाम के साथ अनेक अच्छे विशेषण लगा लिये थे। उसके विषय में लोग बहुत बातचीत करते थे, पर सब बेतुकी।"

"मैं समझा नहीं," मॉन्सीयोर गोबाँ ने कहा।

"ख़ैर, कोई बात नहीं," जीन मार्तो ने उत्तर दिया, "हाँ, तो फिर मॉन्सीयोर बर्जारे बतलाइए कि पुतोया का क्या हुआ।"

"आप पुतोया के विषय में जानना चाहते हैं, यह तो बड़ी अच्छी बात है।" प्रोफ़ेसर ने कहा, "पुतोया का जन्म सेत-उमर में उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ था, किंतु अच्छा होता यदि वह कुछ शताब्दियाँ पूर्व 'फ़ारेस्ट ऑफ़ आर्देन' या 'वुड ऑफ़ बोर्सिलियोंदे' में

पैदा हुआ होता, क्योंकि तब वह असाधारण शक्तिवाला प्रेत समझा जाता।"

"नहीं, सिर्फ़ चाय का एक प्याला, मॉन्सीयोर गोबाँ," पॉलीन बीच में बोल पड़ी।

"तब क्या पुतोया प्रेत था?" जीन मार्तों ने पूछा।

"वह था तो एक तरह से बुरा लेकिन बिलकुल नहीं," मॉन्सीयोर बर्जारे ने उत्तर दिया, "वह उन लोगों की तरह था जो बदनाम होते हैं, पर जिनके निकट सम्पर्क में आने पर पता चलता है कि उनमें कुछ अच्छाइयाँ भी हैं और मैं तो यह समझता हूँ कि बेचारे पुतोया के साथ अन्याय हुआ है। मदाम कार्नोले पहले से ही उसके विरुद्ध धारणा बनाये थीं। बिना किसी वजह के ही उन्होंने उसे आवारा, शराबी और चोर समझ लिया था। फिर यह सोचकर कि माँ ने इसे नौकर रक्खा है और यह कोई मालदार तो है नहीं, तब पुतोया को मजूरी देती ही कितनी होगी; इसलिए क्यों न फिर मैं इससे अपना काम कराऊँ? मैं अधिक सुविख्यात धनी हूँ। वह मेरे पास काम करने जल्दी चला आयेगा। इयू के पेड़ों को छाँटने का वक़्त भी जल्दी आनेवाला था। मदाम इलाँई बर्जारे ग़रीब होने की वजह से उसे कम मजूरी देती हैं और वह मालदार थीं इसलिए और भी कम मजूरी देकर उससे काम ले लेतीं, क्योंकि ग़रीब लोगों के मुक़ाबिले में रईस लोग हमेशा कम पैसा देते हैं। यह सोचते-सोचते मदाम कार्नोले ने कल्पना की आँखों से देखा कि मेरे बग़ीचे के इयू पेड़ तरह-तरह से काटे-छाँटे गये हैं—कोई गोलाकार, कोई दीवाल की तरह, और कोई पिरामिड की तरह और इतना सब काम बहुत थोड़ी मजूरी देने से ही हो गया। पुतोया की तलाश करनी चाहिए मुझे, मन ही मन कार्नोले ने निश्चय किया 'और तब मेरा ख़्याल है कि वह आवारा नहीं घूमेगा और न चोरी ही करेगा। मेरा कुछ नुक़सान तो है ही नहीं, पर फ़ायदा जरूर है। फिर सच बात तो यह है कि यदि मजदूर कभी-कभी कारीगरों से भी अच्छा

काम कर देते हैं।' बस मन में यह निश्चय करके, वे मेरी माँ से बोलीं, 'मेहरबानी करके आप पुतोया को मेरे पास भेज दीजिएगा। मैं उससे अपने बग़ीचे में भी कुछ काम कराऊँगी।' और मा ने वादा कर दिया! उन्हें आपत्ति भी क्या हो सकती थी, किन्तु यह बात तो असंभव थी। मदाम कार्नोले मांप्लासे में पुतोया की प्रतीक्षा करती रहीं, पर पुतोया न आया, न आया। वह अपनी बात की बड़ी पक्की औरत थी। एक बार जो इरादा कर लेती, उसे करके ही छोड़ती थी। जब मा से मिली तो पुतोया के न आने की शिकायत की, 'क्या आपने उससे कहा नहीं कि मैं उसकी राह देखती हूँगी?' मा ने उत्तर दिया—'नहीं। कहा तो था, पर वह बड़ा अजीब आदमी है, बिलकुल मनमौजी।'

"ओह, मैं ऐसे आदमियों को ख़ूब समझती हूँ। मैं आपके पुतोया की नस-नस पहचानती हूँ। फिर भी, कोई भी मज़दूर मांप्लासे में काम करने को बुलाये जाने पर अपना सौभाग्य समझता है, तब वह मना तो कर ही नहीं सकता। मेरे घर को, मैं समझती हूँ, सभी जानते हैं। पुतोया को आप जल्दी से जल्दी मेरे पास भेज दें, ताकि मैं उसे कुछ काम दे दूं। या मुझे ही उसका पता बता दीजिए, मैं ख़ुद जाकर उसे बुला लाऊँगी।'

"उत्तर में मा ने कहा, 'मुझे उसका घर तो मालूम नहीं। मेरे ख़याल से तो उसके न घर है, न द्वार। जहाँ रात को पड़ रहा वही घर है, और उसके बाद तो फिर वह मुझे कभी दिखाई ही नहीं पड़ा।"

"माँ इससे ज़्यादा सच और कैसे बोलतीं; तब भी मदाम कार्नोले को उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। उन्हें बराबर यही लगता रहा कि हो न हो, इन्होंने पुतोया को बहका दिया है जिससे वह मेरे पास काम करने न आये, क्योंकि उन्हें डर है कि तब शायद वह उनका काम छोड़ दे। और मन ही मन उन्होंने मेरी मा को घोर स्वार्थिन समझ लिया। इसी तरह इतिहास की भी अनेक ऐसी बातें हैं जिनका कोई वास्तविक अस्तित्व न कभी था, और न कभी होगा ही।"

"यह तो बिलकुल ठीक है।" पॉलीन बोली।

अधसोती ज़ो ने चौंककर पूछा—"क्या ठीक है?"

"यही कि इतिहास की बहुत-सी बातें प्रायः झूठ होती हैं—और मुझे याद है पापा, आपने एक दिन यह भी तो कहा था कि मदाम रोलाँ का यह कहना कि भविष्य उचित न्याय करेगा, बिलकुल मूर्खता की बात थी, क्योंकि उन्होंने यह कैसे सोच लिया कि यदि वर्तमान इतना क्रूर अन्यायी है, तब भविष्य अवश्य ही न्यायी होगा। हो सकता है, वह भी इतना ही निर्दयी और अन्यायी हो।"

"पालीन!" मामसैले ज़ो ने तीखे स्वर में पूछा, 'इस बात से और पुतोया से क्या मतलब है?'

"बहुत बड़ा मतलब है बुआ।",

"मुझे तो कुछ नहीं मालूम देता।"

"मान्सीयोर बर्जारे को इस तरह बीच में टोका जाना बहुत बुरा नहीं लगा, किन्तु अपनी पुत्री की बात का उत्तर उन्होंने स्वयं दिया—"यदि संसार से प्रत्येक अन्याय दूर हो जाय, तो फिर न्याय का प्रश्न ही न उठे। आख़िर भविष्य किस प्रकार विगत वर्तमान के साथ उचित न्याय कर सकता है? प्रति दिन देखते-देखते तो तिल का पहाड़, चींटी की भैंस और बात का बतंगड़ बनाया जाता है, तब तथ्य-अतथ्य का निर्णय कैसे किया जाय? और फिर बहुत-सी बातें भूल जाती हैं, ऐसी दशा में न्याय कैसे हो सकता है? न्याय है क्या? ख़ैर, जो भी हो; आख़िर मदाम कार्नोले को यह मानना ही पड़ा कि मा झूठ नहीं बोल रही हैं और पुतोया का सचमुच कोई पता-ठिकाना नहीं है।'

"यह सब होते हुए भी मदाम कार्नोले ने पुतोया का पीछा नहीं छोड़ा। अपने सब नाते-रिश्तेदारों, पास-पड़ोसियों, जान-पहचान-वालों, नौकरों और सौदागरों तक से उन्होंने पूछ डाला—'क्या आप पुतोया को जानते हैं?' दो-तीन लोगों ने तो यह ज़रूर कहा कि हमने

तो कभी उसका नाम भी नहीं सुना, पर अधिकतर ने यही उत्तर दिया कि हमने उसे कहीं न कहीं देखा ज़रूर है।

"नाम तो मैंने भी सुना है, पर सूरत नहीं देखी", रसोइये ने कहा।

'पुतोया! क्यों! वाह उसे तो मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ', सड़क की पैमायश करनेवाले ओवरसियर ने अपने कान खुजलाते हुए कहा, 'लेकिन मैं आपको ठीक-ठीक नहीं बतला सकता।'

"किन्तु सबसे ज़्यादा ठीक ख़बर रजिस्ट्रार मॉन्सीयोर ब्लाज़े ने दी, 'अरे, पुतोया तो १६ अक्टूबर से २३ अक्टूबर तक मेरे घर काम करता रहा था। मैंने उसे लकड़ी चीरने के लिए बुलाया था।'

"एक दिन सुबह मदाम कार्नोले दौड़ती-दौड़ती पापा के कमरे में चीख़ती हुई आई—'मैंने अभी हाल में पुतोया को देखा है—हाँ, हाँ—पुतोया को। पुतोया को ही देखा है न मैंने? नहीं, नहीं, वह पुतोया ही था। मॉन्सीयोर नेंशॉ की दीवार के सहारे-सहारे चला जा रहा था, फिर 'रू दाब अब्बासे' की तरफ़ मुड़ गया। वह जल्दी-जल्दी चला जा रहा था। मैं उसका पीछा नहीं कर पाई। लेकिन क्या वही पुतोया था? हाँ, इसमें कोई शक नहीं। कोई पचास साल का लगता था वह। दुबला-दुबला, कमर झुकी हुई, एक मैला कुर्ता पहने वह आवारा-सा लगता था।'

"हाँ, पुतोया की बिलकुल ऐसी ही हुलिया है", पापा ने कहा।

"हाँ, यही तो मैं भी कहती हूँ न! हाँ, तो मैंने पुतोया! पुतोया! कहकर उसे आवाज़ भी दी, पर तभी वह जल्दी से मुड़ गया। किसी अपराधी को ढूँढ़ना होता है, तो भेदिये इसी तरह पता लगाते हैं न! मैंने आपसे पहले ही कहा था कि यह वही है!... मैंने आपके पुतोया का पता पा लिया है अब। लेकिन वह देखने में तो पूरा शैतान लगता है! और आप लोगों ने भी उसे अपने यहाँ नौकर रखकर क्या बेवकूफ़ी की। मैं तो सूरत देखकर आदमी पहचानती हूँ; और हालाँकि मैंने उसकी सिर्फ़ पीठ ही देखी थी, फिर

भी मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि वह चोर तो है ही, पर शायद ख़ूनी भी है! उसके कान फटे-फटे हैं और ख़ूनी की यह एक ख़ास पहचान है।"

"ओह, तुमने यह भी देख लिया कि उसके कान फटे-फटे हैं?"

'हाँ, क्यों नहीं। मेरी नज़र बड़ी तेज़ है। उससे कोई चीज़ नहीं छिपती। और अब मैं आपसे कहती हूँ कि अगर आपको अपने बीवी-बच्चों और जान-माल की कुछ भी फ़िक्र है, तो आयंदा पुतोया को अपने घर में पैर भी मत रखने दीजिएगा। एक न एक दिन वह आप सबका ख़ून कर देगा और सारा माल ले जायगा। मेरी सलाह मानो तो आज ही सब सन्दूक़ों के ताले बदलवा दो और कुंजियाँ सँभालकर रक्खो।'

"अब कुछ दिनों बाद यह हुआ कि मदाम कानोंले की तरकारी की बग़िया में से तीन ख़रबूज़े चोरी गये। जब घर में किसी चोर का पता नहीं लगा, तब उन्होंने तुरंत यही निष्कर्ष निकाला कि हो न हो पुतोया ही ने ये ख़रबूजे चुराये हैं। उन्हीं दिनों आसपास के गाँवों में भी चोरों का एक दल चोरी करता घूम रहा था, किंतु इस चोरी में एक ही चोर का काम मालूम हुआ, क्योंकि चोरी बहुत होशियारी के साथ की गई थी। न तो चोर ने किसी और चीज़ का नुक़सान किया और न ज़मीन पर ही उसके पैरों के निशान पड़े। स्थानीय थाने के पुलिस-दारोग़ा की भी यही राय थी। पुतोया के बारे में उन्होंने बहुत कुछ बहुत दिनों से सुन रक्खा था। वे उसे पकड़ने के प्रयत्नों में संलग्न थे।

"सेत-उमर के स्थानीय समाचारपत्र 'जर्नल दे सेन्त-उमर' में मदाम कानोंले के तीन ख़रबूज़ों पर पूरा एक लेख निकला। इस लेख में पुतोया के विषय में—जो भी शहर में मशहूर था—उसका विस्तृत वर्णन था—'उसका माथा नीचा है' अख़बार में लिखा था, 'फटी-फटी आँखें, उचक्कों की सी नज़रें, कनपटी पर लहसुन; गालों के हड्डे

उठे हुए, लाल-लाल और चमकीले। उसके कान खुरदरे और फटे-फटे से हैं। दुबला, पतला-पतला और कमर कुछ झुकी हुई; देखने में दुबला लगता है, पर उसमें ग़ज़ब की ताक़त है। अपने हाथ के अँगूठे और तर्जनी उँगली के बीच में दबाकर वह पाँच फ्रैंक का सिक्का मोड़ सकता है। और यह विश्वास करने के अनेक कारण हैं कि इधर जो चोरियाँ हुई हैं, और डाके पड़े हैं, वे सब इतनी होशियारी और चालाकी से हुए हैं कि उनमें से अधिकतर में पुतोया का हाथ अवश्य रहा होगा।'

"शहर भर में पुतोया का नाम अब हर किसी की ज़बान पर था। एक दिन ख़बर उड़ी कि पुतोया गिरफ़्तार हो गया और जेल में बंद कर दिया गया, लेकिन फिर मालूम हुआ कि वह रिगोबर्त नामक एक फेरीवाला था, जिसे पुलिस ने ग़लती से पुतोया समझ लिया था और क्योंकि उस बेचारे के विरुद्ध कोई अभियोग सिद्ध नहीं हो सका, इसलिए पन्द्रह दिन की हवालात के बाद वह छोड़ दिया गया। किंतु पुतोया फिर भी फ़रार रहा। मदाम कार्नोले के यहाँ एक और बड़ी चोरी हो गई। उनके बर्तनों की अलमारी में से तीन चाँदी के चम्मच चुरा लिये गये थे। इस चोरी में भी पुतोया पर ही उनका शक गया, क्योंकि पुतोया की करतूतों से वे अब अच्छी तरह परिचित हो चुकी थीं। उस दिन, रात भर, वे अपने कमरे की कुंडी चढ़ाकर जगती रहीं।"

३

रात को दस बजे जब पॉलीन सो गई, तब मॉमसैले ज़ो ने अपने भाई से कहा, "यह बतलाना मत भूलो कि किस तरह पुतोया ने मदाम कार्नोले की नौकरानी को फँसाया।"

"हाँ, मैं भी अभी यही सोच रहा था," मान्सीयोर बर्जारे ने उत्तर दिया, "वही तो इस कहानी का सबसे मज़ेदार हिस्सा है—वही तो

कहानी की जान है। लेकिन धीरे-धीरे अपने ठीक मौके पर वह भी आ जायगा।...हाँ, तो फिर पुलिस ने पुतोया की बड़ी तलाश की, लेकिन वह नहीं मिला। जब सबको यह मालूम हो गया कि पुतोया ग़ायब हो गया, तब हर कोई उसे पकड़ने की कोशिश करने लगा; क्योंकि जो कोई भी उसे पकड़ने में सफल होता, उसी को सरकार और जनता से आदर-सम्मान प्राप्त होता। और इस प्रयत्न में कुचाली लोग लग गये, क्योंकि सेत-उमर और उसके पड़ोस में ऐसे लोगों की कोई कमी नहीं थी। उन लोगों को आये दिन पुतोया एक ही समय पर सड़क, मैदान और जंगल में दिखाई पड़ने लगा। इस प्रकार देवों और दैत्यों की सर्वव्यापकता का गुण भी उसके चरित्र में गिना जाने लगा। और यह आश्चर्यजनक है ही कि कोई व्यक्ति क्षण भर में एकदम मीलों यहाँ से वहाँ, और वहाँ से कहीं और ऐसी जगह पहुँच जाय, जहाँ उसके जाने की कोई भी आशा न हो। मदाम कार्नोले तो अब अपने मांप्लासे वाले घर से बाहर क़दम नहीं रखतीं। हर वक्त रखवाली के लिए घर पर ही मौजूद रहतीं। डर के मारे उनका दिल धक-धक करता रहता। पुतोया उनके लिए ऐसा अद्भुत जीव हो उठा था जो किवाड़ों की दरारों में से भी अंदर कमरे में घुस आ सकता था। इसी बीच में उनके घर में एक और दुर्घटना हो गई जिससे उनका भय दूना हो गया। उनकी खाना बनानेवाली को किसी ने अपने प्रेम-जाल में फँसा लिया। बहुत दिनों तक तो कुछ पता न चला फिर आख़िर बात कहाँ तक छिपती। उसके गर्भ जो रह गया था! पर वह गर्भ किससे रहा, यह बात नौकरानी हज़ार पूछने पर भी नहीं बतलाती थी।"

"उसका नाम गुदौली था।" मॉमसैले जो ने कहा, "हाँ, उसका यही नाम था। प्रेग की दाढ़ीवाली कुमारी-देवी का आशीर्वाद उसके कुमारीत्व की रक्षा करता था। किन्तु जब गुदौली का यौवन उभार पर आया और उसमें उन्माद की लहर आई, तब वह आशीर्वाद पुराना

पड़ गया और उसके कुमारीत्व की रक्षा नहीं कर सका। मदाम कार्नोले ने बहुतेरा पूछा कि कौन तेरा सर्वस्व अपहरण करके तुझे इस तरह मँझधार में छोड़ गया। उत्तर में गुदौली रो पड़ती, पर अपने प्रेमी का नाम उसने नहीं बतलाया, नहीं बतलाया! तब मदाम कार्नोले ने अलग से मामले की गहरी छानबीन शुरू की। माली से पूछा, सड़क की पैमायश करनेवाले ओवरसियर से पूछा, दुकानदारों से पूछा,—सबसे पूछा, पर गुदौली का सतीत्व अपहरण करनेवाले का पता नहीं लगा, नहीं लगा। फिर उन्होंने गुदौली से ही पूछा, 'आख़िर, तू बतलाती क्यों नहीं—मैं कोई तेरा बुरा तो चाहती नहीं; तेरी भलाई के लिए ही पूछती हूँ—बता न!'

"फिर भी वह चुप रही। तब सहसा कार्नोले को कुछ नई बात सूझ गई—'ओह! पुतोया होगा! ठीक—अब मैं समझी!'

"गुदौली रोती रही, कुछ बोली नहीं।

"तब से मेरी समझ में क्यों नहीं आया! पुतोया की यह करतूत है! उफ़! तू बड़ी अभागिन है री गुदौली! सर्वनाश हो गया तेरा तो—पुतोया का ही यह करम है!'

"इसके बाद गुदौली के बच्चा हुआ, तब कार्नोले को यह पूरा विश्वास था कि पुतोया ही उसका पिता है और सेत-उमर के जज से लेकर सड़क के भंगी तक को गुदौली और पुतोया से पैदा उसके बच्चे की बात मालूम हो गई। गुदौली की बड़ी हँसाई हुई। बहुत से लोगों को आश्चर्य हुआ; बहुतों ने पुतोया की प्रशंसा की। यह कहा जाने लगा कि पुतोया से ग्यारह हज़ार सुंदरी कुमारियाँ प्रेम करती हैं और उसमें कुमारियों को अपनी ओर आकर्षित करने की अद्भुत शक्ति है। इसी आधार पर यह भी कहा गया कि उसी वर्ष पाँच-छः अन्य कुमारियों के जो शिशु हुए, उनका पिता भी पुतोया ही था। 'पूरा राक्षस है वह'—लोग कहने लगे।

"इस तरह अदृश्य सैटर—पुतोया—से उस नगर की सभी कुमारियों को डर लगने लगा ! कहा जाता था कि उस नगर में आदि-काल से कभी कुमारियों का सतीत्व भ्रष्ट नहीं किया गया था और वे बड़ी पवित्र तथा सुरक्षित रहती थीं।

"हालाँ कि वह उस नगर और उसके पड़ोस में सर्वव्यापक समझा जाता था, फिर भी यह मशहूर था कि वह हमारे घर रहता है; हमारे ही फाटक में होकर आता-जाता है। कभी-कभी बग़ीचे की दीवार भी फाँद जाता है। परन्तु उससे मुठभेड़ किसी की नहीं हुई। फिर भी उसकी छाया, उसकी आवाज़ और उसके पदचिह्न सब बराबर हम लोगों को मिल रहे थे। कई बार तो हमने भी सड़क के मोड़ के पास उसकी पीठ देखी थी। मेरी बहन और मैं उसके बारे में अपनी धारणाएँ बदलते रहते थे। वह बदमाश और लुच्चा तो था, लेकिन धीरे-धीरे बच्चों की तरह सीधा और सरल होता जा रहा था। कहना चाहिए कि वह यथार्थ कम और कवित्वमय अधिक होता जा रहा था। बच्चों की परियों की कहानियों में उसकी चर्चा शुरू ही होनेवाली थी। उसका नाम ले-लेकर माताएँ अपने बच्चों को डराकर सुलाती थीं। सोने से पहले हम उसकी बातें सुनते थे। छत पर वह हमें बिल्लियों के साथ धम्‌धम् करता, कुत्तों के साथ भौंकता, और सड़क पर गानेवाले शराबियों की नक़ल करता मालूम पड़ता था। हमसे कहा जाता कि अगर तुम नहीं सोओगे तो रात में पुतोया तुम्हारी गुड़ियों के काली स्याही से मूँछें बना देगा।

"घर में हम लोगों की जितनी भी चीजें थीं, उन सब के साथ किसी न किसी रूप में पुतोया की बात जुड़ी हुई थी। इसी से हम लोगों की दिलचस्पी उसमें बहुत बढ़ गई थी। गुड़ियों, मेरी कापियों, जिनके पृष्ठों को उसने न जाने कितनी बार सोख़्ते से सुखाया था, बग़ीचे की वह दीवार जहाँ पर उसकी लाल आँखें परछाईं में चमकती दिखाई पड़ती थीं, नीला गुलदस्ता जो शायद सर्दी से न तड़ककर पुतोया द्वारा ही

चटखाया गया था; पेड़, सड़क, कुर्सी, मेज़ सभी चीज़ें देख-देखकर हम लोगों को पुतोया की, अपने पुतोया की, बच्चों के पुतोया की, रहस्यमय, अदृश्य, अद्भुत पुतोया की याद आती थी। लोग उस पर कविताएँ तक लिखने लगे थे और वह कम से कम आधा देवता तो समझा ही जाता था।

"किन्तु हमारे पापा के लिए पुतोया का चरित्र एक दूसरे रूप में था। वे इसे प्रतीकमय, सांकेतिक और दार्शनिक महत्त्व का समझते थे। पापा के दिल में मनुष्य मात्र के लिए बड़ी सहानुभूति थी। वे मनुष्य की सभी बातों को बहुत उचित नहीं मानते थे। यदि उसकी भूलों में निर्दयता तथा क्रूरता नहीं होती थी और यदि वे दुःखदायक नहीं होती थीं, तो वे उन्हें बड़ा आनन्द देती थीं। मानव-जाति के समस्त विश्वासों का पुतोया जैसे संक्षेप और सार रूप था। पापा व्यंग्य बहुत करते थे। वे जब पुतोया की बात करते तो इस तरह जैसे वह वास्तव में कोई सचमुच का मनुष्य हो। उसकी एक-एक बात वे ऐसे विस्तार और ऐसे ढंग से सुनाते थे कि माँ को बड़ा ताज्जुब होता था। वे कहने लगती थीं—'जो भी तुम्हारी बातें सुनेगा, वह ज़रूर यही समझेगा कि पुतोया की बातें सब सच्ची हैं और वह है ज़रूर! तुम यह जानते हो कि पुतोया नहीं......' 'हाँ', पापा उत्तर देते, 'सो ठीक है, लेकिन सारा का सारा सेत-उमर यही समझता है कि पुतोया है—और तब मैं ही एक भला आदमी होकर कैसे कह दूँ कि वह नहीं है! जिस एक बात में सभी लोग विश्वास रखते हों, उसके विरुद्ध कुछ कहने से पहले खूब अच्छी तरह सोच-समझ लेना चाहिए।

"ऐसी बातों से बहुत ही साफ़ दिल के आदमियों को तकलीफ़ होती है। हृदय से मेरे पापा गज़ांदी के अनुयायी थे। अपनी व्यक्तिगत विचारधारा और अपने समाज की विचारधारा के बीच में एक संतुलन रखा करते थे—सेत-उमर की जनता के साथ साथ वे भी पुतोया के अस्तित्व पर विश्वास करते थे, परन्तु यह कभी नहीं मानते थे कि

मदाम कार्नोले के तीन खरबूजे तथा चाँदी के चम्मच चुरानेवाला और उनकी नौकरानी गुदौली का कौमार्य भ्रष्ट करनेवाला भी पुतोया ही था। इन घटनाओं तथा शहर में हुई इसी प्रकार की अन्यान्य घटनाओं की बात करने में वे पुतोया का संबंध उनसे नहीं जोड़ते थे। इस प्रकार हमारे पापा ने, और मामलों की तरह, इस पुतोया के मामले में भी सूझ और समझदारी से काम लिया।

"अच्छा, और मा की बात यह थी कि पुतोया के जन्म की ज़िम्मेदार वे अपने को ही समझती थीं, और बात ठीक भी थी। क्योंकि पुतोया का जन्म मा के एक बहाना बनाने से हुआ, जैसे कैलीबान[१] का जन्म एक कवि की कल्पना से हुआ था। यह अवश्य है कि दोनों अपराधों में मात्रिक अंतर है, क्योंकि मा का दोष इतना अधिक नहीं था जितना शेक्सपियर का था। फिर भी, अपने एक ज़रा-से बहाने को उन्होंने इस विचित्र रूप में बढ़ते देखा तो उन्हें विस्मय हुआ, पर भय भी लगा! एक तनिक से झूठ की ऐसी अद्भुत सफलता हुई कि वह न केवल सारे शहर के कोने कोने में फैल गया था, वरन् वहाँ से निकलकर सारी दुनिया में भी फैलने लगा था। एक दिन उन्हें यह विश्वास होने लगा कि मेरा बहाना मात्र पुतोया सचमुच रूप धरकर मेरे सामने खड़ा हो रहा है, और यह ध्यान होते ही वे पीली पड़ गईं—उनका ख़ून सूख गया और उनकी जान-सी निकल गई। उन्हीं दिनों हमारे यहाँ एक नया नौकर आया था जो हमारे घर की बातों और हमारे पास पड़ोस से बिलकुल अपरिचित था। उसी दिन उसने मा से आकर कहा कि कोई आदमी आपसे मिलने आया है। वह बाहर खड़ा है।

'वह कैसा आदमी है?'

"मज़दूर-सा लगता है। एक मैला-सा कुर्ता पहने है वह।'

"क्या उसने अपना नाम बताया?'

१—कैलीबान—शेक्सपियर के 'टैम्पैस्ट' (नाटक) का एक पात्र।

"हाँ।'

"क्या?'

"पुतोया।'

"क्या उसने कहा कि मेरा नाम 'पुतोया' है?'

"हाँ, यही नाम बतलाया—पुतोया।'

"वह है कि गया?'

"हाँ, है; बाहर रसोईघर में इंतज़ार कर रहा है।'

'तुमने उसे देखा है?'

"हाँ, हाँ, देखा।'

"वह क्या काम बतलाता है?'

"सो उसने कुछ नहीं बतलाया। यही कहा कि मैं सीधे उन्हीं से बात करूँगा।'

"अच्छा, तो जाकर पूछ।'

"जब नौकर रसोईघर में लौटकर आया, तो पुतोया वहाँ नहीं था।

"पुतोया और हमारे नये नौकर की यह भेंट कभी समझ में नहीं आ सकी। लेकिन उसी दिन से मा को यह विश्वास हो गया कि पुतोया है अवश्य और शायद वह उसका केवल बहाना मात्र नहीं है।"

दाँत का दर्द

प्रोफ़ेसर बियाकोमो तेदेशी नेपिल्स के एक प्रसिद्ध डाक्टर हैं। उनका घर, जो निश्चय ही महकता रहता है, इन्कोरोनाता के पास है। सब तरह के लोग उनके यहाँ आते-जाते हैं, विशेष रूप से वे सुन्दरी कुमारी युवतियाँ जो संता लूशिया में समुद्री उपज बेचा करती हैं। डाक्टर सभी प्रकार के रोगों के लिए दवाइयाँ बेचा करते हैं; घाव में टाँके लगाने और हिलते हुए दाँत उखाड़ने से अधिक वे कुछ नहीं कर सकते। उनके चीर-फाड़ के कमरे में रोगी को लिटाने के लिए जो कुर्सी पड़ी रहती है, वह बहुत गंदी है, और उसकी चूल-चूल हिलती है। रोगियों

पर रोब जमाने के लिए वे समुद्र-तट की बोली बोलते-बोलते उसमें दो-चार लैटिन के बड़े-बड़े शब्द भी बोल दिया करते हैं।

डाक्टर लम्बे, छरहरे बदन के आदमी हैं। उनका चेहरा भरा हुआ है, जिसमें दो छोटी-छोटी हरी आँखें हैं और पतले होठों पर एक लम्बी नाक झुकी-सी पड़ती है; तोंद बढ़ी हुई है और लम्बी-लम्बी टाँगें पुराने फैशन की पतलूनों के तङ्ग पायचों की याद दिलाती हैं।

अवस्था ढल जाने पर जियाकोमो ने नवयुवती शियारा ममी से शादी की शियारा ममी का पिता एक प्रसिद्ध अभियुक्त था, जिसने कारावास से छूटने पर 'बोर्जो दि सन्तो' में नानबाई की दुकान खोल ली थी। और कुछ समय बाद जब उसकी मृत्यु हुई थी तो समस्त नेपिल्स नगर ने मातम मनाया था। तोरे के अंगूरों और सोरंतो के सन्तरों को पकानेवाली सूर्य की रश्मियों ने शियारा के सौंदर्य में यौवन की प्रगल्भता भर दी थी और उनके प्रकाश में वह पूर्ण यौवन अपनी प्रखर सुन्दरता से खिला पड़ता था।

प्रोफ़ेसर का यह अटल विश्वास था कि मेरी पत्नी जितनी सुन्दर है उतनी ही सती भी है। इसके अतिरिक्त वह यह भी जानता था कि चोर-डाकुओं के कुटुम्बों में नारी का बहुत आदर-सम्मान होता है; नारी पर कैसा भी अत्याचार करना वे अपनी शान और मर्यादा के विरुद्ध समझते हैं। पर वह डाक्टर भी था इसलिए नारी-स्वभाव की स्वाभाविक दुर्बलताओं से परिचित था। इसलिए जब मिलान के अस्कानियो रेनारी ने उसके घर बहुत आना-जाना शुरू किया, तब उसकी चिन्ता बढ़ी। अस्कानियो ने 'प्याज़ा दे मार्तिरी' में महिलाओं के लिए एक दर्ज़ी की दुकान खोल रक्खी थी। वह युवक था, और सुन्दर तथा हँसमुख भी। देशभक्त नानबाई उस वीर ममी की पुत्री तथा नेपिल्स की सभ्य नागरिक होने के नाते शियारा ममी मिलान के उस साधारण व्यक्ति द्वारा अपना सतीत्व भ्रष्ट नहीं होने देती। फिर भी डाक्टर की अनुपस्थिति में अस्कानियो

शियारा के पास जाता रहा, और शियारा भी बड़ी बेतकल्लुफी से बिना अपना बदन ठीक से ढके हुए उससे मिलती थी।

एक दिन अनायास ही डाक्टर अनुमानित समय से पहले ही घर लौट आये। उन्होंने देखा कि शियारा अस्कानिनो के साथ 'प्रेमलीला' में रत है।

डाक्टर जैसे आसमान से गिर पड़े—धरती उनके पैरों तले से खिसक गई। उनके आश्चर्य का कोई ठिकाना न था।

पति को देखते ही शियारा कपड़े सँभालती हुई उठ खड़ी हुई। वह तनिक भी डरी नहीं, लजाई तक नहीं! और उठकर बड़ी शान के साथ शाहज़ादी की तरह नपे-तुले धीमे क़दम रखती-रखती अपने कमरे में चली गई।

अस्कानियो भी उठ खड़ा हुआ था।

डाक्टर साहब बड़ी सावधानी और विनम्रतापूर्वक अस्कियानो के पास पहुँचे और बोले—वाह दोस्त, मालूम पड़ता है तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। अच्छा किया जो मेरी सलाह लेने चले आये। मैं डाक्टर हूँ, और लोगों का दुःख-दर्द दूर करना मेरा काम ही है। मैं जानता हूँ, तुम्हारे बड़ा दर्द है। तुम्हारा चेहरा तमतमा रहा है। शर्तिया तुम्हारे सिर में बड़े ज़ोर का दर्द है। मुझे दिखाने चले आये, यह बड़ी समझदारी का काम किया। और तब से तुम मेरा ही इंतज़ार कर रहे थे न! उफ़, बड़ा दर्द है तुम्हारे सिर में!

यह कहते-कहते साँड की तरह मज़बूत बूढ़ा डाक्टर अस्कियानो को अपने चीर-फाड़ के कमरे में खींच लाया और उसी लम्बी, गन्दी और टूटी कुर्सी पर बिठाल दिया, जिस पर चालीस वर्ष से नेपिल्स के रोगी बैठते आये थे।

वहाँ बिठाकर डाक्टर अस्कियानो को पकड़े ही रहे और कहने लगे—"ओह, अब मेरी समझ में आया, तुम्हारा दाँत दर्द कर रहा है—ठीक-ठीक—बस यही बात है। तुम्हारे दाँत हैं भी तो बहुत ख़राब!"

फिर उसे वहीं अचल बैठे रहने का आदेश देकर डाक्टर ने अपनी अलमारी से एक चिमटी निकाली और उससे मुँह खोलने को कहा।

अस्कियानो ने मुँह खोल दिया और डाक्टर ने चिमटी से पकड़कर उसका एक दाँत खींच लिया।

अस्कियानो के मुँह से ख़ून की धार बहने लगी। जबड़ों की असह्य पीड़ा से चीख़ता हुआ वह बाहर भागा।

डाक्टर जियाकोमो तेदेसी ने भयानक अट्टहास किया और दाँत को चिमटी में लटका देखकर चीख़कर कहा—"कितना ख़ूबसूरत है यह दाँत! कितना ख़ूबसूरत, वाह!"

——

वह चोर थी

कुछ कम या ज़्यादा क़रीब दस बरस पहले मैं औरतों की जेल देखने गया था।

हेनरी चतुर्थ के राज्य-काल में बनी हुई वह जेल एक पुरानी गढ़ी थी, जिसकी ऊँची-ऊँची स्लेटी छतें एक नदी के किनारे बसे हुए पास के एक छोटे तथा अँधेरे-से दक्षिणी नगर को जैसे आँखें तरेरकर देख रही थीं।

उस जेल के जेलर बहुत बूढ़े हो गये थे और अपने पद से अलग होनेवाले थे। उनके सिर और दाढ़ी के बाल बिलकुल सफ़ेद हो चुके थे। सिर की सफ़ेदी को वे एक काले विग[1] से ढके रहते थे। जेलर साधारण जेलरों की तरह नहीं थे, वे एक असाधारण व्यक्ति थे। उनके हृदय में बड़ी दया और सहानुभूति थी। जीवन के विषय में उनका एक स्वतन्त्र दर्शन था। अपनी जेल की तीन सौ महिला-बन्दियों के नैतिक आचार के विषय में उन्हें कोई भ्रम, कोई सन्देह नहीं था, फिर भी वे उन्हें संसार के किसी भी देश की तीन सौ विभिन्न नारियों से

१—सिर पर ओढ़ने का एक विशेष प्रकार का कपड़ा।

कम अच्छा नहीं समझते थे; दोनों की नैतिकता में कोई अन्तर नहीं मानते थे।

"किसी और जगह की औरतों की तरह ही यहाँ भी सब तरह की अच्छी-बुरी औरतें हैं और उनकी वैसी ही परिस्थितियाँ भी हैं," जेलर की अवस्था से थकी किन्तु विनम्र दृष्टि जैसे कहती हो।

जेल का आँगन पार करते वक्त हम लोगों को बन्दिनियों का एक दल बिलकुल मौन घूमकर लौटता दिखाई दिया। वे लोग फिर अपने-अपने काम पर जा रही थीं। उनमें से अनेक बूढ़ी थीं और उनकी मुद्राएँ कठोर तथा विकृत-सी थीं।

मेरे मित्र डाक्टर काबेन मेरे साथ थे। बन्दिनियों की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा—"इन सब औरतों के शरीराकार में विशेष प्रकार के दोष हैं; जैसे लगभग ये सभी टेढ़ी नज़र से देखती हैं, पक्ति हैं, और सब की सूरतों पर हत्यारिन होने के चिह्न हैं, अगर नहीं तो कम से कम इनकी शक्लें विकृत तो हैं ही।"

जेलर ने धीरे से अपना सिर हिलाया और मैं समझ गया कि वे अपराध-विज्ञान के शास्त्रियों के मतों से सहमत नहीं हैं। उनका अब भी यह पक्का विश्वास था कि हमारे समाज में निर्दोष कहे जानेवाले तथा प्रत्यक्ष सदाचारी व्यक्ति अभियुक्त अपराधियों से अपनी वास्तविक नैतिकता में बहुत भिन्न नहीं हैं।

जेलर हमें बन्दिनियों का काम दिखाने ले गये। हमने उन्हें रोटी बनाते, कपड़े धोते और सिलाई करते देखा। जिस सफ़ाई और सुथरेपन से वे काम कर रही थीं, उससे वहाँ के वातावरण में एक प्रकार का नीरव हर्ष सा छाया हुआ था।

जेलर साहब उन स्त्रियों के साथ बड़ी विनम्रता और सहानुभूति का बर्ताव करते थे। किसी बदमाश से बदमाश बन्दिनी की शैतानियों से भी वे खीझते नहीं थे, क्रुद्ध नहीं होते थे। बराबर सहनशील और शांत बने रहते थे। उनकी यह राय थी कि जिनके साथ तुम्हें रहना पड़ता है,

उनकी ग़लतियों को, जहाँ तक हो सके, माफ़ करते रहना चाहिए और विशेषकर अपराधी तथा पतित लोगों से तो कुछ अच्छाई की आशा ही नहीं करनी चाहिए। क्योंकि अपराधियों को दण्ड दिया जाता है, इसलिए यह कोई वजह नहीं कि चोरी तथा दलाली[१] करनेवाली औरतों को बहुत अच्छा और पूर्ण समझा जाय, जैसा कि बहुत से लोग समझने लगते हैं—ऐसा उनका मत था। दण्ड पाने से मनुष्य सुधर सकता है, इसमें उन्हें बिलकुल विश्वास नहीं था। उनका कहना था कि जेल सदाचार तथा नैतिकता की पाठशाला नहीं है; इसमें मनुष्य अच्छाई नहीं सीख सकता, सद्‌गुण नहीं अपना सकता। साथ ही उन्हें यह भी विश्वास था कि कष्ट सहने से ही कोई भला आदमी नहीं बन जाता, इसलिए वे उन अभागिन बन्दी स्त्रियों को यातनाएँ भी नहीं देते थे। यह तो मैं नहीं जानता कि जेलर साहब ये सब बातें किसी धार्मिक दृष्टिकोण से करते थे या स्वयं धर्मभीरु थे, पर यह मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि दंड-व्यवस्था के नैतिक महत्त्व को वे बिलकुल ही नहीं मानते थे।

"जेल के क़ायदे-क़ानूनों को क़ैदियों पर लगाने से पहले मैं उनको समझने की कोशिश करता हूँ," जेलर ने कहा—"और फिर उन्हें भी समझा देता हूँ। किसी एक क़ायदे को लीजिए। एक क़ायदा है कि क़ैदी बिलकुल चुप रहे। अब अगर सचमुच ही क़ैदी बिलकुल चुप रहने लगे, तो वह पागल हो जाय या गूँगा। और इस क़ायदे का यही मतलब है, यह मैं पल भर को भी नहीं सोच सकता। मैं क़ैदियों से कहता हूँ—'क़ायदा कहता है, तुम चुप रहो। इसका क्या मतलब? यही कि तुम्हारी पहरेदारिन तुम्हें बोलते हुए न सुने। अगर वह सुन लेगी तो तुम्हें सज़ा मिलेगी, और अगर वह नहीं सुनती तुम्हारा कुछ नहीं होगा। तुम क्या सोचती हो, क्या नहीं

१—वेश्यावृत्ति के लिए स्त्रियों को फँसाने का काम।

सोचती हो—यह तो तुम्हें मुझे नहीं बतलाना पड़ता और न तुमसे कभी पूछा ही जा सकता है। अगर तुम इतना धीमे बोलती हो कि तुम्हारे सोचने की तरह ही उसमें कोई आवाज़ न हो और मुझे सुनाई नहीं पड़े, तो मेरे लिए तुम्हारा बोलना तुम्हारे सोचने के ही बराबर है और तब फिर तुम्हारे बोलने से मुझे कोई मतलब नहीं, चाहे तुम जितनी बात किया करो।' इतना कह देने से वे फिर बहुत ही धीमे-धीमे बिना कोई आवाज़ किये बोलती हैं। इस तरह वे गूँगी और पागल होने से बच जाती हैं और क़ायदा भी नहीं टूटता।"

तब मैंने उनसे पूछा—"आपके अफ़सर लोग जेल के क़ायदे-क़ानूनों से आपके इस तरह मतलब निकालने से नाराज़ नहीं होते?"

मेरे सवाल का उन्होंने यह जवाब दिया—"बहुत से इंस्पेक्टर इस बात पर नाराज़ हुए और मुझे फटकारा भी। पर मैं उन सबको बाहर के फाटक पर ले जाकर उनसे कहता था—'आप यह रेलिंग देखते हैं, यह लकड़ी की बनी हुई है। अगर इस जेल में आपने आदमी बन्द किये होते, तो एक हफ़्ते भर में ही सारी जेल ख़ाली हो जाती। औरतों को भाग निकलने का ध्यान ही नहीं आता; लेकिन यह ज़रूर है कि अक़्लमंदी इसी में है कि उन्हें छेड़ा न जाय। और यह तो मानी हुई बात है कि जेल का जीवन न तो स्वास्थ्य के लिए अच्छा है, और न मन के लिए। अगर आप उन्हें बिलकुल चुप रहने की यातना देना ही चाहते हैं, तो मैं अपनी नौकरी से अभी इस्तीफ़ा देता हूँ।"

इसके बाद हम लोग शिशु-शाला और पंगु-गृह देखने गये। वह दो बड़े हालों में स्थित थीं, जो एकदम सफ़ेद पुते हुए थे। प्राचीन राजसी वैभव के उनमें कोई भी चिह्न अवशिष्ट नहीं थे, सिवा इसके कि दरवाज़ों के ऊपर मटीले पत्थर और संगमूसा में विविध सद्‌गुणों की प्रतीक-स्वरूप कुछ मूर्तियाँ अंकित थीं। इन्हीं मूर्तियों में एक न्याय की प्रतिमा भी थी, जो किसी इटैलियन वास्तुकलाकार

ने लगभग १६०० ई० में फ्लैमिश-कला[1] के अनुसार निर्मित की थी। न्याय की देवी का सिर खुला हुआ है, और उसकी जंघा के ऊपर के भाग अस्तव्यस्त वस्त्रों के बाहर निकले हुए हैं। अपने एक हाथ में वह तुला लिये है जिसकी डंडी का झुकाव दोनों पल्लों की ओर बराबर नहीं है और दोनों पल्ले आपस में टकरा-टकराकर जल-तरंग की-सी संगीतमय ध्वनि करते हैं। मूर्ति के आधार पर लोहे की एक छोटी सी पटिया है, जिस पर दुहरी तौलिया के बराबर पतली एक चटाई बिछी है। इस चटाई पर एक दुर्बल-सा शिशु लेटा है, जिसके पेट पर न्याय की देवी अपने दूसरे हाथ से तलवार की नोक रखे है, जैसे भोंक देना चाहती हो!

वहीं डाक्टर कार्वेन ने एक लड़की से पूछा, "कहो, कैसी तबियत है अब?"

"अच्छी हूँ अब तो।" उसने मुस्कराकर उत्तर दिया।

"ठीक तुम बहुत अच्छी लड़की हो, जल्दी अच्छी हो जाओगी।"

और उत्तर में उस लड़की ने डाक्टर की ओर अपनी बड़ी-बड़ी आँखों में आशा और हर्ष भरकर देखा।

"यह लड़की बहुत बीमार हो गई थी।" डाक्टर ने मुझसे कहा।

और हम लोग उसे छोड़कर आगे बढ़ गये।

"इसका क्या अपराध था?" मैंने पूछा।

"कोई साधारण अपराध नहीं, हत्या की थी इसने!"

"आयँ!"

"एक बच्चे को जान से मार डाला था!"

एक लम्बे दालान के सिरे पर पहुँचकर हम लोग एक छोटे कमरे में घुसे। यह कमरा भी बहुत साफ़-सुथरा था और अच्छा

१—फ्लैंडस फ्रांस में एक नगर है। वहाँ के निवासियों की ललित कलाओं की अपनी विशेष शैलियाँ थीं, विशेष रूप से चित्रकला तथा मूर्तिकला की जो फ़्लैमिश नाम से प्रसिद्ध हो गई हैं।

लगता था। इसमें अलमारियाँ रक्खी थीं तथा मेज़ और कुर्सियाँ पड़ी थीं। खिड़कियाँ भी थीं, जिनमें सीख़चे नहीं लगे थे। वहाँ से बाहर मैदान का दृश्य दिखाई पड़ता था।

एक बहुत सुंदर नवयुवती बैठी मेज़ पर कुछ लिख रही थी। उसी के पास एक और सुंदरी खड़ी अपनी कमर से लटकते चाबी के गुच्छे में कोई ताली ढूँढ रही थी। मैं उन दोनों को जेलर साहब की सुपुत्रियाँ समझ रहा था, किंतु जेलर ने बतलाया कि वे भी बंदिनी हैं!

"अरे, आपने देखा नहीं कि ये लोग क़ैदियों के ही कपड़े पहने हैं!"

"देखा तो था मैंने, लेकिन कपड़े वे दोनों और ढंग से पहने थीं।"

"इनके कपड़े तो औरों से कुछ अच्छे सिले मालूम होते हैं और इनकी टोपियाँ छोटी हैं, जिनमें से बाल बाहर निकले दिखाई देते हैं।" मैंने कहा।

"यह तो बहुत मुश्किल है कि किसी युवती के अगर केश सुंदर हों तो उसे यह आज्ञा दी जाय कि तुम इन्हें दिखाओ मत। इन दोनों क़ैदिनों पर भी जेल के वही मामूली क़ायदे लागू हैं जो सब पर और इन्हें भी काम करना पड़ता है।"

"ये कौन-सा काम करती हैं!"

"एक तो हिसाब-किताब रखती है, और दूसरी लाइब्रेरियन है।"

इन दोनों के क्या अपराध थे, यह पूछने की आवश्यकता नहीं पड़ी। मालूम हो गया कि वे प्रेम-संबन्धी थे। जेलर साहब ने यह भी कहा कि मैं छोटे-छोटे दोषों के अपराधियों की अपेक्षा हत्यारे अपराधियों को अधिक पसन्द करता हूँ।

"मैं कुछ ऐसे हत्यारों को जानता हूँ," उन्होंने कहा, "जो सचमुच हत्या से अलग हैं। वह भयानक अपराध उनके जीवन में बिजली की तरह अनायास ही जैसे आसमान से टूट पड़ा हो। उनमें मैंने सचाई,

साहस और सहानुभूति देखी है। यह बात मैं चोरों के बारे में नहीं कह सकता, क्योंकि वे लोग बिलकुल साधारण हैं और बार-बार कुकर्म करना उनकी नस-नस में समाकर जैसे उनकी आदत बन गया है। उनका सुधार किसी तरह नहीं हो सकता। और जिस नीचता के वश होकर उन्होंने पहले अपराध किया था, वह बराबर रह-रहकर उनके व्यवहार में उभरकर आती रहती है। उस पर जो दंड उन्हें दिया जाता है, वह बहुत कठोर नहीं होता, और क्योंकि उनमें शारीरिक अथवा मानसिक किसी प्रकार की जाग्रत्‌ चेतना नहीं होती, इसलिए वे उस साधारण दंड को बहुत आसानी से झेल लेते हैं।"

"लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि," उन्होंने फिर जल्दी से कहा, "ये अभागे लोग हमारी दया और सहानुभूति के पात्र नहीं, और यह कि हम इन्हें समझने की कोशिश न करें। जैसे-जैसे मेरी अवस्था और अनुभव बढ़ते जाते हैं, वैसे-वैसे ही मेरा यह विश्वास और भी दृढ़ होता है कि जिन्हें हम अपराधी कहते हैं, वे वास्तव में अभागे हैं।"

फिर बात करते-करते जेलर साहब हमें अपने कमरे में ले गये और एक वार्डरेस को आज्ञा दी, "जाओ, ५०२ नम्बर की क़ैदिन को ले आओ।"

फिर मुझसे कहने लगे, "मैं आज तुम्हें कुछ नई चीज़ दिखलाऊँगा, पर कहीं यह मत समझ बैठना कि इसका इंतज़ाम मैंने पहले से कर रक्खा है, सिर्फ़ तुम्हें दिखाने के लिए। क़ानून तोड़ने, अपराध करने और दंड-व्यवस्था पर यह चीज़ तुम्हें बहुत-सी नई बातें सोचने को मजबूर करेगी। जो कुछ तुम अभी देखोगे और सुनोगे, वह मैं यहाँ सैकड़ों बार देख-सुन चुका हूँ, और रोज़ ही देखता-सुनता रहता हूँ।"

वार्डरेस एक क़ैदिन को साथ लेकर अन्दर कमरे में आई।

क़ैदिन एक युवती कृषक-कुमारी थी—देखने में भोली, सरल और सुन्दर।

जेलर साहब ने उससे कहा, "आज तुम्हारे लिए कुछ खुशखबरी है। प्रजातंत्र के प्रेसीडेंट ने यह मालूम होने पर कि तुम्हारा चाल-चलन बहुत अच्छा है, तुम्हारी बाक़ी सज़ा माफ़ कर दी है। अगले शनीचर को तुम छोड़ दी जाओगी।"

अवाक् मुख कृषक-कुमारी ने यह आज्ञा सुनी किंतु उसकी समझ में बात कुछ अच्छी तरह आई नहीं।

"अगले शनीचर को तुम छोड़ दी जाओगी। तुम बिलकुल स्वतंत्र हो जाओगी।"

इस बार वह समझ गई। उसके हाथ उठे, ओंठ हिले—जैसे उसे बड़ी पीड़ा हो!

"क्या मुझे जाना ही पड़ेगा! लेकिन फिर मेरा होगा क्या! यहाँ तो मुझे खाना मिलता था, कपड़ा मिलता था, और सभी आराम था। अब मैं कहाँ जाऊँगी, क्या करूँगी! आप प्रेसीडेंट साहब से कह दीजिए कि मैं यहाँ इसी हालत में सुखी हूँ—मैं यहीं रहना चाहती हूँ। मेरा कहीं कोई नहीं है।"

फिर जेलर साहब ने उसे बड़ी शांति और स्नेह से, किंतु दृढ़तापूर्वक भी, समझाया कि तुम्हें जेल से जाना ही पड़ेगा और चलते वक़्त तुम्हें दस या बारह फ़्रैंक दे दिये जायँगे।

वह रोती हुई कमरे से चली गई।

मैंने पूछा—"इसका अपराध क्या था?"

जेलर साहब ने एक रजिस्टर उठाया और उसके पन्ने पलटे—

"५०३—एक ज़मींदार के यहाँ नौकरानी थी—...अपनी मालकिन का पेटीकोट चुराया......नौकरानी ने चोरी की—और तुम जानते ही हो कि ऐसे अपराधों के लिए सरकार कठोर दंड देती है।"

——

नववर्षाङ्क

'ल इतोआए' के संस्थापक, 'ला रैवोनेशनेल' और 'ले नोवाओ सेकिल इलस्त्रे' के राजनीति तथा साहित्य विभागों के संपादक हाँतों ने मुझे अपने आफ़िस में बुलाया, जहाँ वे अपनी संपादकीय आरामकुर्सी पर बैठे हुए थे।

उनके सम्मुख मैं एक कुर्सी पर जाकर बैठ गया।

मेरे बैठते ही वे मुझसे कहने लगे, "ले नोवाओ सेकिल' के विशेषांक के लिए मुझे अपनी एक कहानी दो। नव वर्ष संबंधी कोई तीन सौ लाइनों की कहानी हो जिसमें समाज के उच्चवर्ग का कुछ विनोदप्रद वर्णन हो।"

"विनोद और हास्य तो मैं लिखता नहीं। कम से कम वैसा तो नहीं लिखता हूँ, जैसा आप समझ रहे हैं। हाँ, एक कहानी आपको लिखकर अवश्य दे दूँगा।" मैंने उत्तर दिया।

"मैं चाहूँगा कि उस कहानी का शीर्षक हो—'धनी वर्ग के लिए एक कहानी'।"

"लेकिन मैं तो ग़रीबों के लिए कहानी लिखना पसंद करता हूँ।"

"अरे, यही तो मेरा मतलब है। ऐसी कहानी हो जो रईसों के दिल में ग़रीबों के लिए दया पैदा करे।"

"और यही बात तो मुझे बुरी लगती है। मैं नहीं चाहता कि मालदार आदमी ग़रीब आदमी पर दया करे।"

"भई, अजीब बात करते हो!"

"अजीब क्या, बिलकुल ढंग की बात कह रहा हूँ। ग़रीब के लिए अमीर की दया मानवता का अपमान है। अगर मैं होता, तो अमीरों से कहता, ग़रीबों के लिए अपनी दया अपने पास ही रख छोड़ो। उन्हें इसकी ज़रूरत नहीं है। दया क्यों, न्याय क्यों नहीं देते? तुम्हारा उनका आपस का हिसाब-किताब है, सीधा-सा व्यापारिक व्यवहार। उसे

तय कर लो और बस क़िस्सा निपट जाय। इसमें भावुकता की कोई बात नहीं है। अगर आप जो कुछ उन्हें ख़ुशी से अपने आप देना चाहते हैं, उसका मतलब उनकी ग़रीबी को बढ़ाना या उन्हें ग़रीब ही रहने देना है और अपनी अमीरी दिखाने के लिए है, तब तो ऐसा दान पाप है, पुण्य नहीं और यह अन्याय है। ब्रदर मेलाद के उपदेश देने के बाद अटर्नी ने जज से कहा था, 'आपको कमी पूरी करनी चाहिए।' आप दान इसलिए देते हैं कि आप ग़रीबों को कमी पूरी नहीं करना चाहते, उनकी ग़रीबी दूर नहीं करना चाहते। आप थोड़ा देते हैं, इसलिए कि आपके पास बहुत बच रहे। दान आप इसलिए देते हैं कि आपके धन की वृद्धि हो। आपके पास धन की वृद्धि का मतलब है दूसरों के पास धन की कमी हो जाय, वे ग़रीब हो जायँ। क्योंकि कुल धन तो जितना है, उतना ही रहता है और रहेगा। अपनी सम्पत्ति बढ़ाने के लिए ही सामोज़ के अत्याचारी पोलीक्रेनीज़ ने समुद्र में अपनी अँगूठी फेंकी थी। किन्तु देवताओं की प्रतिहिंसा-देवी ने वह भेंट स्वीकार नहीं की। उस अँगूठी को एक मछली निगल गई। वह मछली किसी मछुए के जाल में फँस गई और इस तरह अत्याचारी की वह अँगूठी वापिस आ गई। इसके फल-स्वरूप पोलीक्रेनीज़ की सारी सम्पत्ति नष्ट हो गई।"

"तुम मज़ाक़ कर रहे हो।"

"नहीं, मैं बिलकुल मज़ाक़ नहीं कर रहा। सच कह रहा हूँ। मैं तो चाहता हूँ कि अमीर आदमी यह समझें कि वे मुफ़्त में ही दानी कहलाना चाहते हैं, कुछ न देकर ही दयावान् कहलाना चाहते हैं, और ऊपर से यह भी चाहते हैं कि दान लेनेवाला फिर उनकी प्रशंसा करे—उनकी जान और माल की रक्षा के लिए भगवान् से प्रार्थना करे।...मैं समझता हूँ कि यही बातें उनके बड़े काम की होंगी।"

"और यही विचार हैं जिन्हें तुम 'ले नोवाओ' में प्रकाशित करना चाहते हो जिससे कि उसके जो ग्राहक बनते हों, वे भी न बनें। नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता। नहीं हो सकता।"

"आप यह क्यों चाहते हैं कि अमीर आदमी दूसरे अमीरों और अपने से अधिक सम्पन्न तथा शक्तिशाली लोगों और ग़रीबों के प्रति एक-सा बर्त्ताव न करे? एक अमीर आदमी दूसरे आदमी को वही देता है जो उसका हक़ होता है, या जो उसका उस पर है, और अगर पावना नहीं होता तो वह उसे कुछ नहीं देता। अगर अमीर आदमी ईमानदार हैं, तो उन्हें ऐसा ही ग़रीबों के साथ भी करना चाहिए। पर मैं समझता हूँ कि एक भी अमीर आदमी यह नहीं सोचता। यह दूसरी बात है कि किसका किस पर कितना चाहिए और कितना हक़ है। इस विषय पर मतभेद हो सकता है और उसे मिटाने की कोई ऐसी जल्दी भी नहीं है। इस बात को यहीं छोड़ दिया जाय, क्योंकि यह तो निश्चित ही है कि हर आदमी को किसी न किसी का कुछ न कुछ देना रहता है, लेकिन कितना किसको देना है, यह अनिश्चित है, और इसलिए जो भी जिसे भी वह समय-समय पर देता रहता है, वह उसी हिसाब में चुकता होता जाता है। इसे कहते हैं मनुष्य मात्र की भलाई के लिए कुछ करना और यही उचित तथा लाभप्रद भी है।"

"लेकिन भई, तुमने जो कुछ कहा वह सब पागलपन है। जनाब को मालूम होना चाहिए कि मैं आपसे बड़ा सोशलिस्ट हूँ, लेकिन मैं दुनियादार हूँ और सोच-समझकर काम करता हूँ। दुःख दूर करना, सुख देना और समाज के किसी अन्याय का प्रतिकार करना कुछ करना है और भलाई, चाहे वह कितनी ही कम क्यों न हो, भलाई ही है और वह कुछ अर्थ रखती है। यह माना कि इतनी थोड़ी-सी बातें ही सब कुछ नहीं हैं, फिर भी वे बहुत कुछ हैं और न होने से अच्छी हैं। जैसी कहानी मैं कहता हूँ, अगर तुम लिखो, तो वह मेरे सैकड़ों अमीर ग्राहकों के हृदय को छू जायगी और उन्हें कुछ न कुछ देने के लिए आप ही मजबूर करेगी। इस तरह उनकी जेब से कुछ निकलेगा और ग़रीबों का कुछ तो दुःख दूर होगा ही। इस तरह धीरे-धीरे ग़रीबों की दशा सहने योग्य हो जायगी।"

"सहने योग्य! लोग ग़रीबी सहने योग्य हो जायँ, क्या यह बहुत अच्छी बात है! अमीरी के लिए ग़रीबी ज़रूरी है। ग़रीब न हों, तो लोग अमीर कैसे हो जायँ? ग़रीबों की दशा को सुधार की नहीं, दबाव की आवश्यकता है। मैं तो अमीरों की दान-प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना उचित नहीं समझता, क्योंकि दान देने से दानी का लाभ होता है और दानी अमीर है ही, यानी लाभ अमीर का ही होता है। और दान पानेवाले की हानि होती है, क्योंकि धन का गुण है क्रूरता और कठोरता, निर्दयता और अन्याय। यदि वही धन दान, दया और धर्म का रूप रखकर आता है, तो यह धोखा है, झूठ है! आप चाहते हैं कि मैं अमीरों के लिए एक कहानी लिखूँ, तो मैं यह लिखूँगा—'ग़रीब लोग, तुम अमीर लोगों के कुत्ते हो।' तुम उनके सामने टुकड़ा फेंकते हो इसलिए कि वे काटना सीखें, तुम्हारा झूठा यशोगान करें, तुम्हारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करें, जप करें। और फिर यही कुत्ते ख़ूँख़्वार बनकर अपने ही ग़रीब श्रमजीवी भाइयों को काटने दौड़ें! रही ईमानदार मज़दूरों की बात, सो वे न कुछ माँगते हैं और न उन्हें कुछ मिलता ही है।"

"लेकिन बूढ़े, अपाहिज, अनाथ......!"

"उन्हें भी जीवित रहने का उतना ही अधिकार है, जितना हमें। उनके लिए हमें दया की नहीं, न्याय की आवश्यकता है।"

"ये सब बातें कोरी करने की हैं। इनसे होता कुछ नहीं। असलियत पर उतरकर आओ।......तो तुम मेरे लिए नव-वर्ष पर एक कहानी लिख दो, जिसमें समाजवाद की भी चर्चा कर सकते हो, क्योंकि आजकल समाजवाद का ही फ़ैशन है। फ़ैशन ही नहीं, आजकल की ख़ासियत है। गुआँदे या जरिज़ के समाजवाद की बात मैं नहीं कहता, लेकिन ऐसा साधारण-सा समाजवाद जो वर्गवाद के विरोध में संसार के सभी विद्वान् और न्यायप्रिय व्यक्तियों को मान्य है। अपनी कहानी में कुछ पात्रियाँ रक्खो, जो सुन्दरी और नवयुवती हों। मैं कहानी को सचित्र छापूँगा;

क्योंकि पाठक मज़ेदार चित्र चाहते हैं। प्रमुख दृश्य में एक बहुत सुन्दरी कुमारी युवती होनी चाहिए, तभी आनन्द रहेगा। ऐसा करना कोई बहुत कठिन तो नहीं है न।"

"नहीं, बिलकुल आसान है।"

"और उसमें फिर एक चिमनी साफ़ करनेवाले को नहीं ला सकते क्या किसी तरह? मेरे पास एक रंगीन चित्र अभी तैयार है, जिसमें एक सुन्दरी कुमारी मदेलीन की सीढ़ियों पर खड़ी हुई एक चिमनी साफ़ करनेवाले को भिक्षा दे रही है। बस, यही तो अवसर है जिस पर मैं इस चित्र को ठीक से काम में ला सकता हूँ। जाड़े के दिन हैं। बर्फ़ गिर रही है और वह सुन्दरी चिमनीवाले के हाथ में एक फ़्रैंक डाल रही हो। समझ गये न?"

"हाँ, समझ गया।"

"आगे तुम बढ़ा लेना।"

"हाँ, मैं बढ़ा लूँगा।...धन्यवाद देने और कृतज्ञता प्रकाशित करने के लिए वह चिमनीवाला अपनी बाँहें उस सुन्दरी के गले में डाल देता है। वह सुन्दरी संयोगवश काँमते दिलिनोते जैसे धनी और बड़े आदमी की पुत्री है। चिमनीवाला उसे चूम लेता है। उसके होंठ काले थे ही, इसलिए कुमारी के कपोलों पर एक गोल दाग़ पड़ जाता है—बिलकुल गोल-गोल और काला-काला और बहुत ही सुन्दर लगता था वह दाग़। चिमनीवाला उसे प्यार करने लगता है। और एद-मेई इतने सच्चे प्यार की उपेक्षा नहीं कर सकी। मैं समझता हूँ कि यह कहानी बड़ी करुण रहेगी।"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं। तुम इसे ज़रूर बढ़िया बना दोगे। आख़िर लेखक हो न।"

"तो फिर आप मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन दे रहे हैं न! हाँ, तो जब एदमेई अपने महल से घर में लौटकर आई, तो आज पहली बार उसका जी अपना मुँह धोने को नहीं चाहा। उसका मन

कर रहा था कि प्रेमी के सरस ओठों का मधुर चुंबन मेरे कपोलों पर सदैव ऐसे ही अंकित रहे, उसका चिह्न कभी न मिटे। इसी बीच वह नवयुवक चिमनीवाला भी उसके पीछे-पीछे उसके घर तक चला जाता है और प्रेम से विभोर होकर उसकी खिड़की के नीचे खड़ा-खड़ा ऊपर अपनी प्रेयसी को निहारता है...कहिए, ठीक है न!"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं, बिलकुल ठीक।'

"अच्छा तो फिर मैं और आगे बढ़ता हूँ।...दूसरे दिन सवेरे अपनी श्वेत शय्या पर लेटे-लेटे ही उसने खिड़की में से अपने प्रेमी चिमनीवाले को आते देखा। बिना किसी संकोच के वह एदमेई के पास तक चला आया और उसे अपने आलिंगन में कसकर अपने धुएँ से काले ओठों से बार-बार चूमने लगा। हाँ, मैं यह तो कहना भूल ही गया कि वह युवक भी बहुत सुन्दर था। वे दोनों इसी तरह प्रेमलीला में रत थे कि लड़की की मा कोमनेज़ दि लिनोते वहाँ आ पहुँचीं। यह तमाशा देखकर वे सहायता के लिए चिल्लाने लगीं। पर युवक और कुमारी प्रेमपाश में इतने बेसुध थे कि उन्हें कोमनेज़ के आने का पता ही न चला और न उनकी चीखें ही सुनाई पड़ीं।"

"क्या कह रहे हो मार्तो......"

"यही तो कि वे दोनों प्रेमालिंगन में इतने बेसुध थे कि उन्हें कोमनेज़ के आने का पता ही न चला और वे अपनी प्रेमलीला में संलग्न रहे। कोमनेज़ दौड़कर उस कमरे में आये। अपनी अमीरी और शान का उनमें सच्चा जोश और जोम था। उन्होंने जाकर चिमनी-वाले युवक को पीछे से पतलून की कमर पकड़कर उठा लिया और तेज़ी से खिड़की के बाहर फेंक दिया...!"

"अरे, अरे, यह क्या किये देते है मार्तो...!"

"बस, अब कहानी समाप्त होनेवाली है।...नौ महीने बाद उस नीच चिमनीवाले युवक की उस ऊँचे घराने की सुन्दरी कुमारी एदमेई से शादी हो जाती है, क्योंकि मामला ही ऐसा आ पड़ा था कि देर

करने से गड़बड़ हो जाती। तो दान देने का उस कुमारी धनवान् सुन्दर कन्या को यह पुरस्कार मिला !"

"भई मार्तो, तुम बहुत देर से मुझे सताकर स्वयं आनन्द ले रहे हो।"

"तुम्हें तो बिलकुल नहीं सताया—रत्ती भर भी नहीं। हाँ, अभी उपसंहार शेष है। युवती से विवाह करने के बाद चिमनी-वाला युवक पादरी हो गया, किंतु थोड़े दिनों बाद ही अपनी सारी सम्पत्ति उसने घुड़-दौड़ का जुआ खेलने में नष्ट कर दी। आज 'रू दि ला गायते' में मांपार्साजे पर उसकी अँगीठियों की दुकान है। दुकान पर उसकी पत्नी बैठती है और अठारह फ्रैंक में एक अँगीठी बेचती है। यह अठारह फ्रैंक ख़रीदार आठ महीने में थोड़े-थोड़े करके भी दे सकता है।"

"भई मार्तो, यह अंत तो बिलकुल ऊलजलूल है।"

"ज़रा सोच-समझकर कुछ बोलिए होतों साहब! जो कुछ अभी मैंने आपको सुनाया है वह वास्तव में लामार्तीन की 'शुते द अन आंजे' और अल फ्रेद दे विजने की 'इलोआ' की दो कहानियाँ हैं। लेकिन यह दोनों मिलकर आपकी अनेक आंसू बहा देनेवाली उन करुणा-पूर्ण कहानियों से अच्छी हैं, जिनमें पाठकों को यह झूठा विश्वास दिलाया जाता है कि कहानी के धनी पात्र-पात्रियाँ निर्धनों के प्रति बड़े दयालु और सहानुभूतिपूर्ण हैं, उनके साथ बड़ी भलाई करते हैं, जब कि वास्तव में वे न तो दयावान् हैं और न रत्ती भर भलाई ही करते हैं। संसार में उदार होना और भलाई करना आसान काम नहीं है। मेरी यह कहानी एक सदुपदेश है। दूसरे यह आशावादी है और साथ ही सुखान्त भी। क्योंकि अपनी 'रू दि ला गायते' वाली दुकान में एदमेई को वह सुख और आनन्द मिला है, जो उसे किसी बड़े अफ़सर या रईस आदमी से शादी हो जाने पर बड़ी बड़ी दावतों और मेले-तमाशों में ढूंढने पर भी नहीं मिलता। तो फिर सम्पादकजी, तय रहा न कि

आप मेरी यह कहानी 'नोवाश्रो सेकिल इलस्त्रे' के नव-वर्षांक में प्रकाशित करेंगे ?"

"क्या आप मज़ाक कर रहे हैं ?"

"मज़ाक कैसा ? मैं आपसे सच कह रहा हूँ। अगर आप नहीं छापेंगे, तो मैं इसे कहीं और छपा लूँगा।"

"कहाँ ?"

"किसी बड़े पत्र में।"

"अच्छा, तो फिर देखना है !"

"यही सही।"

× × ×

'फ़िगारो' का सम्पादन मॉन्सीयोर दि रोदाज़ करते थे। मार्तो की वही कहानी 'एदमेई ओदा ला चारिते क्यों प्लैसे' शीर्षक से उसके नववर्षांक में प्रकाशित हुई। उस पत्र के पाठकों के लिए वह जैसे नववर्ष की भेंट थी।

खोया प्यार

मॉन्सीयोर कोयेनार्द बड़े भले आदमी थे। उनके एक पुराने स्कूल के साथी 'रू गीत-ले-कोयेर' में एक गली में रहते थे। उन्होंने एक दिन हमारे मास्टर साहब को खाना खाने के लिए आमन्त्रित किया। जब मास्टर साहब शाम को उनके घर जाने लगे, तो मुझे भी साथ लेते गये।

हमारे मेजवान धर्मशास्त्रों के प्रकांड पंडित थे और प्रिमौन्सत्रे तैन्शियन फ़ादर[१] थे। उन्होंने मॅमसैले फ़ाँशन के दुःखों का वर्णन

१—ईसाइयों का एक सम्प्रदाय।

करते हुए एक पुस्तक लिखी थी, जिसके कारण अपने विहार के प्रायर (अध्यक्ष-गुरु) से उनका झगड़ा हो गया। फल यह हुआ कि वहाँ से निकलकर वे हेग की मधुशाला के अध्यक्ष हो गये थे। इधर कुछ दिनों पहले वे हेग से फ्रांस लौट आये थे और भजनोपदेश लिख-लिखकर किसी तरह मुश्किल से गुज़र-बसर कर रहे थे। उनके भजनों में बड़ा ओज और सुतर्क रहता था।

खाना खिलाने के बाद मेज़बान साहब हमें मॅमसैले फ़ॉशनवाली अपनी पुस्तक के कुछ भाग पढ़कर रात को देर तक सुनाते रहे।

जब हम वहाँ से लौटने लगे, तब ग्रीष्म का सुखद आकाश सितारों से जगमगा रहा था जिसे देखकर मुझे तुरंत यही आभास हुआ कि डायना की प्राचीन प्रेम-गाथाओं में रात्रि के नीरव और रजत चन्द्रिका-स्नात वातावरण के जो वर्णन हैं, वे अत्यंत स्वाभाविक हैं और विषय के सर्वथा अनुकूल हैं। अपना यही भाव जब मैंने मास्टर साहब पर प्रकट किया, तो उन्होंने बड़ा तीखा उत्तर दिया—"संसार में प्रेम ही बुराई और पाप की जड़ है। समझे तोर्नब्रोशे! क्या तुमने अभी वहाँ भिक्षु के मुँह से नहीं सुना कि किस तरह एक सार्जेंट को, मन्सीयोर ले लेफ़्टिनेंट-क्रिमनेल लेब्लोंक के छोटे लड़के को और मन्सीयोर गॉलोत के क्लर्क को प्यार करने के कारण मॅमसैले फ़ॉशन को अस्पताल में रहना पड़ता था! क्या तुम भी ऐसा ही कोई सार्जेंट, क्लर्क, या सरकारी नौकर होना पसंद करोगे?"

मैंने कहा—"अवश्य!"

मेरे इस निर्भीक उत्तर से मास्टर साहब बहुत ख़ुश हुए और लूक्रेशिया के कुछ पद मुझे यह समझाने के लिए सुनाने लगे कि एक सच्ची पवित्र आत्मा की शांति के लिए प्रेम विष के समान है।

इसी प्रकार बातें करते-करते हम लोग पोंत-तोव के मोड़ पर आ पहुँचे। वहाँ बुर्ज की दीवार पर झुककर हम लोग सामने शातेलेत के

टावर[१] को देखने लगे, जो शुभ्र ज्योत्स्ना में छाया का कालिमा-स्तम्भ-सा खड़ा था।

"इस सभ्य कहे जानेवाले संसार के न्याय पर बहुत कुछ कहा जा सकता है," मास्टर साहब ने एक आह खींचकर कहा, "प्राय: अपराधों से अधिक निर्मम और निर्दय होता है वह दंड जो सरकार उन्हें उन अपराधों के लिए देती है। मैं यही नहीं मान सकता कि शासन-व्यवस्था की रक्षा करने और उसे सुचारु रूप से संचालित करने के लिए यह तनिक भी आवश्यक है कि मनुष्य अपने साथी मनुष्य के साथ ऐसा अमानुषिक और बर्बरता का व्यवहार करे, क्योंकि युग-युग से शासन के अपराधियों के ऊपर एक के बाद एक अत्याचार बंद होता आया है, और उससे जनसाधारण के सुख और संरक्षण को कोई भी हानि नहीं पहुँची है। मेरा यह विश्वास है कि आज भी जो अमानुषिकताएँ शासन की दंड-व्यवस्था में शेष रह गई हैं, वे भी उतनी ही व्यर्थ हैं जितनी कि वे थीं जिनका व्यवहार आज वे बंद कर चुके हैं। फिर भी मनुष्य स्वभाव से ही कठोर है, निर्मम है। चलो, यहाँ से अब चलें तोर्नब्रोशे। यह सोचकर मेरा हृदय फटा जाता है कि ऐसी सुंदर और सुखद रात में वे अभागे बंदी सीखचों में बंद, उदास और हताश पड़े जग रहे होंगे। माना कि उन्होंने अपराध किये हैं, पर इससे क्या वे मानव-सहानुभूति के पात्र नहीं रह गये? हम लोगों में से ही ऐसा कौन-सा व्यक्ति है जो सर्वथा निरपराध और दोषरहित हो?"

हम अपने रास्ते पर फिर चल पड़े और पुल पर पहुँचे। इस समय पुल सुनसान था। हमें रास्ते में केवल एक भिखारी और भिखारिन मिले, जो पुल के खम्भों पर एक खुले चबूतरे की तरफ दबे पैरों से बढ़ गये। वहाँ पर एक छोटी सी दुकान थी जिसकी चौखट के पास बैठकर वे दोनों बाहर झाँकने लगे। आपस में एक-दूसरे

१—पेरिस की एक जेल।

के दुःख को बाँट कर वे बड़े संतुष्ट से मालूम पड़ते थे, और जब हम उनके पास से निकले, तब वे अपनी और ही बातों में मग्न थे और हमसे उन्होंने भीख नहीं माँगी। फिर भी मास्टर साहब ने, जो अत्यन्त दयालु थे, उनकी ओर आधी फ़ार्दिंग फेंक दी। उनकी जेब में एक यही बची पड़ी थी।

"हमारी इस भीख को ये उठा लेंगे," वे बोले, "जब इन्हें अपनी दुरवस्था का ध्यान आवेगा। मैं चाहता हूँ कि ये दोनों आपस में इस फ़ार्दिंग के लिए लड़ें नहीं।"

इस विषय को वहीं छोड़कर हम लोग आगे बढ़ गये और क्वाये देज़ ओयेसलोर्ज़ घाट के किनारे हमने एक युवती को तेज़ किंतु दृढ़ चाल से जाते देखा। उसे समीप से देखने के लिए हम लोगों ने भी अपनी चाल तेज़ कर दी और पास पहुँचने पर देखा कि युवती की पतली कमर है, उठे हुए कठिन उरोज हैं, और उसके केश लहरा रहे हैं, जिनमें चन्द्रकिरणें थिरक-थिरककर अपना रजत-हास बिखेर रही थीं। पहनावे से वह किसी नागरिक की बहू-बेटी सी लगती थी।

"देखो, यह एक सुंदरी युवती जा रही है," मास्टर साहब ने कहा, "पर इतनी रात गये यह अकेली घर से बाहर क्यों है?"

"हाँ, है तो," मैंने उनकी बात मानते हुए कहा, "इस तरह की लड़कियाँ तो प्रायः इतनी रात गये इधर नहीं दिखाई देतीं।"

हमारा यह आश्चर्य शीघ्र ही घबराहट में बदल गया, क्योंकि वह युवती घाट पर सीढ़ियों से उतरकर नदी की ओर बढ़ रही थी। हम लोग जल्दी से उसकी ओर भागे और चिल्लाये, लेकिन वह रुकी नहीं, जैसे उसने हमारी बात सुनी ही न हो। नदी की धार बहुत तीव्र थी और उसकी लहरों की कलकल दूर से सुनाई पड़ती थी। अपने हाथ ढीले करके और सिर पीछे डालकर कुछ क्षणों तक वह निश्चल खड़ी रही, जैसे बड़ी क्लांत और निराश हो। तत्पश्चात् उसने अपनी सुंदर ग्रीवा झुकाकर दोनों हाथों से अपना मुँह ढँक लिया।

कुछ क्षणों तक वह ऐसे ही मुँह ढँके खड़ी रही। इसके बाद उसने मुँह पर से हाथ हटा लिये और अपने साये के दामन को पकड़कर ऊपर उठाया—जैसा कि औरतें कूदने से पहले हमेशा करती हैं।

वह कूदने वाली ही थी कि तब तक मास्टर साहब और मैं वहाँ पहुँच गये और उसे ज़बर्दस्ती पीछे खींच लिया। उसने हमारी पकड़ से छूटने के लिए हाथ-पैर चलाये। नदी अभी बाढ़ से नीचे उतर चुकी थी, इसलिए किनारे गीले थे और उन पर बेहद रपटन थी। मास्टर साहब लड़की के साथ खिंचने लगे और मेरा पैर भी फिसलने वाला ही था कि एक पौदे की जड़ में जाकर फँस गया। इस तरह मैं पानी में गिरने से बच गया और मास्टर साहब तथा जीवन से निराश उस सुंदरी को अपनी बाँहों में जकड़े ही रहा। उसने जब देखा कि मेरा छूटना अब असंभव है और उसके हाथ-पैरों की शक्ति भी जवाब देने लगी, तब वह मास्टर साहब की छाती से लिपट गई। फिर हम तीनों जैसे-तैसे किनारे पर चढ़ आये। मास्टर साहब ने सीढ़ी पर चढ़ने में उसे बड़ी तमीज़ के साथ सहायता दी। मास्टर साहब का व्यवहार सदैव अत्यन्त शिष्ट रहता था। इसके बाद मास्टर साहब हम दोनों को समीप के एक बीच के पेड़ के नीचे ले गये, जहाँ लकड़ी की एक बेंच पड़ी थी। उस पर उन्होंने युवती को बिठा दिया और स्वयं उसके पास बैठ गये।

"मॅमसैले, डरो नहीं। यह विश्वास रक्खो कि इस समय तुम किसी ख़तरे में नहीं हो और हम लोग भले आदमी हैं। तुम्हारे साथ भलाई ही करेंगे," मास्टर साहब ने युवती को आश्वासन देते हुए कहा। इसके बाद मेरी तरफ़ मुड़कर बोले, "तोर्नब्रोशे, हमें अपना बड़ा सौभाग्य समझना चाहिए कि हम लोग इस युवती के प्राण बचाने में सफल हुए। पर मेरा हैट वहीं किनारे पर गिर गया है; वह है तो पुराना और बदसूरत भी, क्योंकि उसका फ़ीता वग़ैरः सब उखड़ गया है, और बरसों से पहनते-पहनते बिलकुल छन गया है, फिर भी बुढ़ापे में इस सिर को—जिसने कि

जीवन की बड़ी-बड़ी आपत्तियाँ सह ली हैं—धूप और पानी से बचाने के लिए वह ज़रूरी है। जाओ, देखो तो, शायद वह अब भी मिल जावे। हाँ, और मेरे जूते बाँधने की एक चेन भी वहीं कहीं गिर गई है, उसे भी ढूँढ़ लेना। तब तक मैं इस युवती की देख-भाल करता रहूँगा।"

मैं दौड़कर उसी जगह गया, जहाँ से अभी-अभी हम लोग लौटे थे। मास्टर साहब का हैट तो मिल गया लेकिन उनके जूते की चेन मुझे कहीं नहीं दिखाई पड़ी। वैसे मैंने उसे तलाश करने की कोई ख़ास कोशिश भी नहीं की, क्योंकि मैंने उनके एक जूते को हमेशा बिना चेन के ही देखा है।

मास्टर साहब के हैट को लेकर जब मैं पेड़ के नीचे पहुँचा, तब मैंने युवती को वैसे ही मौन निश्चल पेड़ के तने से सिर टेके पाया। इस समय मैंने ध्यान दिया कि वह तो अनिंद्य और अनुपम सुन्दरी है। गोटे लगी सिल्क की एक बढ़िया चादर बड़े सलीक़े से ओढ़े थी वह; पैरों में हल्के जूते पहने थी जिसकी सफ़ेद निकिल की चेन चाँदनी में चमचम कर रही थी।

इसके आगे मैं उसके सौंदर्य को और अधिक निहार नहीं सका, क्योंकि अनायास ही उसने अपनी तन्द्रिल पलकें खोल दीं और हम लोगों की ओर देखा। उसकी उस दृष्टि में अभी तक धुँधलापन था। बड़े धीमे से उसने कहना शुरू किया—"मनुष्यता के नाते आप लोगों ने मेरे लिए जो कष्ट उठाया है, उसके लिए मैं अकृतज्ञ नहीं हूँ, लेकिन मैं आपसे सच कहती हूँ कि आपकी इस कृपा से मुझे कोई ख़ुशी नहीं हुई है, क्योंकि मेरे जिन प्राणों की आज आपने रक्षा की है, वे मेरे लिए अभिशाप हो उठे हैं, अत्यन्त पीड़क; कठोर यातना है मुझे।"

युवती के स्वर में बड़ी कोमलता और शिष्टता थी, जिससे स्पष्ट प्रकट होता था कि वह किसी सुसंस्कृत घराने की है। उसके ये शब्द सुनकर मेरे मास्टर साहब, जिनकी मुद्रा से दया टपकी पड़ रही थी, मुस्करा दिये,

क्योंकि यह बात उनकी कल्पना से परे थी कि ऐसी सुन्दरी और नवयुवती को जीवन सचमुच अभिशाप हो सकता है !

"मेरी बच्ची !" मास्टर साहब ने उससे स्नेह-सिक्त स्वर में कहा—"जब चीज़ दूर होती है, तब हमें वह एक तरह की दिखाई देती है, और वही चीज़ पास आने पर दूसरी तरह की मालूम पड़ती है। अभी जीवन से हाथ धो बैठने का समय नहीं आया है। मुझी को देखो—भाग्य के कड़वे से कड़वे और तीखे से तीखे थपेड़े खाकर भी आज तक मैं जीवित हूँ। जीवन में केवल यही आनन्द रह गया है, ग्रीक से फ्रेंच में अनुवाद करना और कभी-कभी अपने अच्छे दोस्तों के घर दावत खा लेना, फिर भी मैं इन प्राणों का बोझा ढोये चला जा रहा हूँ। बतलाओ, तुम भी क्या मेरी ही तरह जीवित रहना पसन्द नहीं करोगी।"

सुन्दरी ने मास्टर साहब को एक बार ऊपर से नीचे तक देखा और सिर हिला दिया। उसकी आँखें उस समय जैसे हँस पड़ी थीं। किन्तु दूसरे ही क्षण वह फिर उदास और शोकाकुल होकर टूटे स्वर में बोली, "संसार में मुझसे अधिक दुखी कोई दूसरा नहीं होगा।"

"मेरी बच्ची," मास्टर साहब ने उत्तर दिया, "मैं अपने गुण, कर्म, स्वभाव तीनों में ही संयत और संकुचित रहता हूँ, मैं तुम्हारी बात काटता नहीं और न मैं तुम्हारा विश्वास ही बदलना चाहता हूँ, पर मैं देखता हूँ कि तुम्हारी दृष्टि तुम्हारी सच्ची बात आप ही कह रही है—उसे देखकर कोई भी कह सकता है कि तुम्हें प्रेम में निराशा हुई है। और यह तो कोई ऐसी बात नहीं है, जिसका इलाज न हो सके। मैं स्वयं एक बार प्रेम में निराश हो चुका हूँ, परन्तु फिर भी इतने वर्षों से जीवित हूँ।"

अब मास्टर साहब ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और अनेक प्रकार से स्नेह प्रदर्शित किया, जिससे उसके व्यथित हृदय को कुछ शान्ति और सान्त्वना मिले और उसका सन्ताप दूर हो; फिर कहा—

"मुझे इस समय केवल इस बात का दुःख है कि मैं तुम्हारे रात के रहने के लिए कोई प्रबन्ध नहीं कर सकता। मेरा घर एक तो पुरानी गढ़ी में है जो यहाँ से बहुत दूर है। वहाँ मैं अपने इन साथी, 'तोर्नब्रोशे की ओर सङ्केत करके कहा,' मास्टर तोर्नब्रोशे की सहायता से एक ग्रीक पुस्तक का अनुवाद कर रहा हूँ।"

मास्टर साहब ने बात बिलकुल सच कही थी। उस समय हम लोग न्यूली गाँव में 'शैत्यो[१] देज़ साब्लोंज़' में मॉन्सीयोर द आज़तारक के साथ रहते थे और एक बड़े भारी रसायन-शास्त्री से वेतन पाते थे। उस रसायन-शास्त्री की थोड़े दिन बाद ही बड़ी बुरी तरह मृत्यु हो गई।

"लेकिन अगर तुम्हें कोई ऐसी जगह मालूम हो, जहाँ तुम्हें रात भर के लिए आश्रय मिल सकता हो, तो मुझे बताओ। हम लोग ख़ुशी से तुम्हें वहाँ पहुँचा देंगे," मास्टर साहब ने पूछा।

इस प्रश्न के उत्तर में सुन्दरी बोली, "मैं आपकी इस कृपा के लिए अत्यन्त आभारी हूँ। मैं यहाँ अपनी एक रिश्तेदार के साथ रहती हूँ। वहाँ मैं किसी भी समय जा सकती हूँ, लेकिन अब अच्छा यही होगा कि मैं सवेरे जाऊँ। मैं व्यर्थ ही उन बेचारे सोते हुए लोगों को इस समय जगाकर परेशान नहीं करना चाहती। दूसरा डर यह भी है कि फिर वही पुरानी चीज़ें देखकर मेरी व्यथा उमड़ आयगी।"

यह कहते-कहते उसके आँसू आ गये और कपोलों पर बहने लगे।

यह देखकर मास्टर साहब ने कहा—"मेरी बच्ची, अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो, तो लाओ मुझे अपना रूमाल दो, मैं तुम्हारे आँसू पोंछ दूँ। फिर तुम्हें हैलेज़ की बारहदरी में ले चलूँगा, जहाँ हम लोग ओस से भी बचेंगे और रात काट देंगे।"

सुंदरी अपने आँसुओं में से मुस्करा पड़ी। "मैं आपको और अधिक कष्ट देना नहीं चाहती", उसने कहा, "आप लोग जाकर अब आराम कीजिए, और विश्वास रखिए कि मैं आपका एहसान कभी नहीं भूल सकती।"

१—गढ़ी।

फिर भी मास्टर साहब के हाथ आगे बढ़ाने पर सुंदरी ने उनका हाथ पकड़ लिया और हम तीनों हैलेज़ की ओर चल दिये।

रात ठंडी होने लगी थी। आकाश में कुछ दूधिया झलक-सी छाने लगी थी और तारों की झिलमिल मंद होती जा रही थी।

ऊँघते हुए गाड़ीवान और मरी-मरी-सी चाल चलते हुए घोड़ों द्वारा हैलेज़ की सब्ज़ीमंडी की ओर चलती हुईं तरकारी की गाड़ियों की खड़खड़ाहट भी सुनाई पड़ने लगी थी।

उस बारहदरी में पहुँचकर हम लोगों ने एक दरवाज़े के पास, जहाँ संत निकोलस की मूर्ति गड़ी थी, बैठने के लिए पत्थर की एक सीढ़ी पर जगह ठीक की और हम तीनों वहाँ बैठ गये, लेकिन बैठने से पहले मास्टर साहब ने अपना लबादा सुंदरी के बैठने के लिए बिछा दिया था, क्योंकि पत्थर बर्फ़ की तरह ठंडा था।

इसके बाद मास्टर साहब सुंदरी के मन को ख़ुश करने के लिए अनेक विषयों पर तरह-तरह की मज़ेदार बातें करते रहे और कहा—"तुमसे मिलने के अपने इस सौभाग्य को मैं जीवन भर नहीं भूलूँगा और तुमने मेरे हृदय में इतनी जल्दी अपने लिए स्नेह प्राप्त कर लिया—मैं तुम्हें कभी नहीं भूल सकता—जीवन में मेरा ऐसा सौभाग्य पहले कभी नहीं हुआ था………"

ये बातें करने पर भी मास्टर साहब ने सुंदरी से न तो उसका नाम ही पूछा और न उसके अभाग्य कहानी ही। उन्हें यह विश्वास था कि वह स्वयं ही सब कुछ बतला देगी।

इतने में सुंदरी फिर फूट-फूटकर रोने लगी और बोली, [illegible] मैं आपकी बातों का उत्तर चुप रहकर दूँगी, तो यह मेरी बड़ी [illegible] होगी। आप पर मेरा पूरा-पूरा विश्वास है। मेरा नाम है [illegible]—; आपने सच ही कहा कि मुझे प्रेम में निराशा हुई है। [illegible] को मैं प्राणों से भी अधिक प्यार करती थी, उसी ने मुझे [illegible]। आप यदि यह समझते हैं कि मुझे अकारण ही बहुत दुःख

है, तो आप नहीं समझते कि मैं अपने प्रेमी पर कितना विश्वास करती थी, उनके प्रेम में कितनी पागल थी, और मेरा वह अपना स्वर्ग कितना सुंदर था, जो आज नष्ट हो गया है।"

फिर, उसने अपने सुंदर नयन हम लोगों की ओर उठाये और कहा—"परन्तु मैं ऐसी औरत नहीं हूँ जैसा कि आपने शायद मुझे यहाँ इतनी रात गये अकेला देखकर समझा हो। मेरे पिताजी एक बड़े व्यापारी थे। अपने काम से वे एक बार अमरीका गये, और रास्ते में ही जहाज़ डूबने से मर गये—साथ ही उनका सारा माल-असबाब भी डूब गया। इस दुर्घटना से मेरी मा को इतना आघात पहुँचा कि वे बीमार पड़ गईं और मुझे अकेला छोड़कर मर गईं। मैं तब बच्ची ही थी। मेरी एक चाची ने मुझे पाल-पोसकर बड़ा किया। जब तक मैं उस युवक से नहीं मिली थी, जो बाद को मेरा प्रेमी बन गया था, तब तक मैं बड़ी अच्छी लड़की थी, लेकिन उसके प्रेम में दिवानी होकर मैं आज इस दशा को पहुँची हूँ!"

अब सोफ़ी ने अपना मुँह रूमाल से ढँक लिया, और एक ठंडी आह भरकर बोली, "मेरे प्रेमी की हैसियत बहुत बड़ी थी। वे इतने ऊँचे घराने के थे कि मैं उनके साथ विवाह तो कर ही नहीं सकती थी, बस चुपचाप गुप्तरूप से उनकी होकर रहती। मैं यह सोचकर मन ही मन फूली नहीं समाती थी कि वे हमेशा मेरे होकर रहेंगे। वे शपथें खाकर कहते थे कि मैं तुम्हें प्राणों से अधिक प्यार करता हूँ। तुम मेरे हृदय की रानी हो। और भी न जाने क्या क्या। इसी लिए मैंने उनपर पूरी तरह से विश्वास कर लिया और उन्हें अपना सर्वस्व समर्पण कर बैठी। मेरी चाची इन सब बातों को जानती थीं, पर उन्होंने कोई रोक-टोक नहीं की, क्योंकि एक तो वे मुझे प्यार बहुत करती थीं, इसलिए मेरी छोटी से छोटी ख़ुशी का भी ख़्याल रखती थीं, और दूसरे उनकी ऊँची हैसियत और रईसी से वे बहुत प्रभावित थीं और न जाने क्या क्या कल्पनाएँ किया करती थीं।

मैं इस तरह साल भर तक प्रेम के संपूर्ण सुख में डूबी रही। उस सुख की बराबरी अब यह दु:ख ही कर सकता है। आज सवेरे वे मुझसे मिलने आये। न जाने क्यों मेरा मन पहले से ही आशंकित हो उठा था। सुबह-सुबह जब मैंने बाल काढ़े थे, तब दर्पण हाथ से गिरकर चूर-चूर हो गया था। जैसे ही मैंने उनका मुख देखा, मेरी आशंकाएँ और भी उभर आईं। उनके मुख पर एक अजब तरह का दुराव-सा था। उफ़! क्या कोई भी स्त्री मेरे बराबर दुखी हुई होगी।"

उसकी आँखें फिर आँसुओं से भर गईं, किन्तु उसने उन्हें निकलकर बहने नहीं दिया। इसी दशा में उसने अपनी कहानी भी समाप्त कर डाली, जिसे सुनकर मास्टर साहब को कोई विशेष नई बात तो मालूम नहीं पड़ी पर उनका दिल पसीज उठा।

"...हाँ, तो उन्होंने बड़े रूखेपन से, पर बहुत परेशान से होकर, मुझसे कहा—'पिताजी ने मेरे लिए फ़ौज में नौकरी तलाश कर दी है और मुझे फ़ौरन वहाँ जाकर काम शुरू कर देना है। दूसरे सब घरवाले यह चाहते हैं कि मैं कलक्टर की लड़की से शादी कर लूँ, जिससे कुछ माल व दौलत मिल जाय और हमारे घराने की हैसियत भी बढ़ जाय और नाम हो जाय।' यह सब वह विश्वासघाती बिना हिचक के कह गया और मुझसे एक बार भी नज़र मिलाने का साहस उसे नहीं हुआ। उसने नहीं देखा कि मेरी जान निकली जा रही थी, परन्तु ऊपर से जले पर नमक छिड़कने के लिए उसी प्यार के मीठे स्वर में कहने लगा, 'अब कम से कम कुछ दिनों तक तो मैं तुमसे नहीं मिल सकूँगा। पर विश्वास रखो, मैं तुम्हें भूलूँगा नहीं—और इतने दिनों तक तुम मेरे साथ जो रही हो, उसके लिए यह रुपया लो।' यह कहकर उसने मेरे सामने एक थैली रख दी।

वैसे वे हमेशा ही मुझे कपड़े, ज़ेवर, फ़र्नीचर, मकान, यह, वह, [illegible] भर की चीज़ें लेने के लिए मजबूर करते थे और कहते थे कि [illegible] चाची के पास से कहीं अच्छी आराम की जगह ले चलूँगा

'रू टू-रोलें वाले अपने आलीशान मकान में रक्खूँगा तुम्हें रानी !' लेकिन मैं आपसे सच कहती हूँ कि मैंने उनकी एक भी चीज़ स्वीकार नहीं की। मैं उनका प्रेम ही चाहती थी। दो-चार हीरे जो मैंने स्वीकार भी किये थे, सो इसलिए नहीं कि वे क़ीमती थे, बल्कि उनके दाता का मेरे हृदय में असीम मूल्य था। वह थैली देखते ही मेरा स्वाभिमान जाग उठा और अपने इस अपमान से मेरे अंतर में एक अद्भुत शक्ति आ गई। मैं उसे अब अच्छी तरह पहचान गई थी और उससे घृणा भी करने लगी थी, इसी लिए मैंने उसे एकदम अपने सामने से मुँह काला करने को कहा। लेकिन मेरे इस क्रोध का उस पर कोई असर नहीं पड़ा, और अत्यन्त उपेक्षापूर्वक वह यही कहता रहा कि तुम एक हैसियतवाले शरीफ़ और इज़्ज़तदार आदमी की ज़िम्मेदारियाँ नहीं समझती और जब ठंडे दिल से सोचोगी, तब मेरी बात की सचाई तुम्हारी समझ में आयगी। फिर थैली उठाकर उसने अपनी जेब में रख ली और कहा कि किसी न किसी तरह मैं यह धन तुम्हारे पास पहुँचा दूँगा या तुम्हारे काम में ख़र्च कर दूँगा। उसका कहने का यही मतलब था कि वह मेरे प्रेम का बदला पैसा देकर चुका देना चाहता है! कोई एहसान अपने सिर पर नहीं ले जाना चाहता...लेकिन मैंने फिर उसकी एक बात भी नहीं सुनी और एकदम घर से निकल जाने को कह दिया।

"उसके चले जाने से मेरे मन में इतनी शांति छा गई कि मुझे स्वयं आश्चर्य हुआ, किन्तु यह मेरे आत्महत्या करने के दृढ़ संकल्प से उत्पन्न हुई थी। इसके बाद मैंने अच्छी तरह कपड़े पहने और चाची के नाम एक पत्र लिखा 'जो दुख मेरी आत्महत्या से तुम्हें होगा, उसकी कारण मैं ही हूँ, इसलिए मैं क्षमा माँगती हूँ'।

"तत्पश्चात् मैं घर से चल दी और दिन भर और रात को कुछ देर तक मैं इधर से उधर कोलाहल से भरी हुई सड़कों और सुनसान गलियों में घूमती रही; क्योंकि मैंने रात के अँधेरे और सुनसान में नदी

में डूब मरने की बात सोची थी, जिससे कोई विघ्न न पड़े। मरकर मैं सब मुसीबतों से छुटकारा पा जाऊँगी, इस विचार से मुझे काफ़ी ख़ुशी हो रही थी और एक तरह का शोकमय संतोष भी था। रात के दो बजते ही मैं नदी के किनारे पहुँच गई। इसके बाद जो कुछ हुआ वह तो आप जानते ही हैं। आपने मुझे मेरी जल-समाधि से बाहर खींच निकाला। मैं आपकी यह भलाई करने के लिए हृदय से धन्यवाद देती हूँ—यद्यपि मुझे दुःख है कि आपने व्यर्थ ही मेरी जान बचा ली। संसार अभागिनों से भरा हुआ है। उसके भार को मैं अपने अभागे जीवन से बढ़ाना नहीं चाहती।"

यह कहकर सोफ़ी चुप हो गई और फिर रोने लगी। मास्टर साहब ने बड़े स्नेह से उसका हाथ पकड़कर कहा, "मेरी बच्ची! मैं मानता हूँ कि तुम्हारा जीवन बहुत दुखी है, किन्तु मैं जानता हूँ कि तुम्हारा यह दुःख दूर भी हो सकता है। तुम्हारा प्रेमी नीच स्वार्थी था। वह तुम्हारा प्यार पाने योग्य कदापि नहीं था और मैं यह भी देख रहा हूँ कि उसके लिए जो तुम्हारा प्रेम था, वह केवल वासनाजन्य और आवश्यकता से अधिक भावुकता का फल था। ऐसी दशा में तुम उससे क्या, किसी भी व्यक्ति से इतना ही प्रेम कर सकती हो। तुम्हारे इस संबंध में अगर कोई अच्छी बात थी, तो केवल यही कि तुम्हारा प्रेम निर्मल था। और अभी कुछ खोया नहीं है, क्योंकि प्रेम का यह निर्मल स्रोत जिस हृदय में है, वह अभी तक सुरक्षित है। तुम्हारी आँखों में ज्योति की जो उज्ज्वल झलक है, वह हर जगह, जहाँ भी तुम जाओगी, अपने सौंदर्य से लोगों का मन आकर्षित करती रहेगी।"

मास्टर साहब ने इसी सिलसिले में अनेक अच्छी बातें बतलाईं कि किस प्रकार मन को वश में रखना चाहिए, इंद्रियों पर संयम रखना चाहिए और प्रेमी लोग कैसी-कैसी भूलें करते हैं, आदि। पर उनके बात करते-करते ही सोफ़ी उनके कन्धे पर ही सिर टेककर सो गई। जब

मास्टर साहब ने देखा कि उनकी बातों से सांत्वना पाकर सोफ़ी सो गई, तब उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई, लेकिन उन्होंने बातचीत बंद नहीं की, क्योंकि उन्हें डर था कि एकाएक चुप हो जाने से कहीं घबराकर सोफ़ी जाग न पड़े।

"तोर्नब्रोशे," उन्होंने मुझसे कहा, "अपने दुःखों का ज्ञान हो जाने से देखो, वह उनसे छुटकारा पा गई। तुम समझ लो कि उसका दुख काल्पनिक ही था और उसके मन से ही उपजा था। प्रेम में जो एक प्रकार का गर्व और अहंकार होता है, वही उसे पीड़क बना देता है और उसी से दुःख उत्पन्न होता है। क्योंकि अगर हम सचमुच अपनेपन को भूलकर अपनी आत्मा की विनयशीलता के साथ अथवा सरल हृदय से ही प्रेम करें, तो जो कुछ भी हमें प्रेम में मिल जाय, उसी से हमें संतोष करना चाहिए और अगर हमारी कोई हानि हो जाय तो हमें धोखा और दग़ा कहकर शोक नहीं करना चाहिए। यदि प्रेमी के बिछुड़ जाने पर भी हमारे हृदय में प्रेम करने की कुछ शक्ति शेष रह जाती है, तब हमें शांतिपूर्वक उस अवसर की प्रतीक्षा करनी चाहिए जब ईश्वर हमारे प्रेम के लिए कोई अन्य उचित पात्र भेज दे।"

किन्तु अब पौ फटनेवाली थी और चिड़ियों का चहचहाना इतना बढ़ गया कि उसमें मास्टर साहब की आवाज़ खो गई। इससे उन्हें कुछ बुरा नहीं लगा।

"सुनो", वे बोले, "गौरैयों का चहचहाना। ये मनुष्य की अपेक्षा अधिक बुद्धिमानी से प्रेम करते हैं।"

जब दिन का उजाला खूब फैल गया, तब सोफ़ी की आँख खुली, और मैंने उसमें अलसाया सौंदर्य देखा। क्लांति और शोक के कारण उन आँखों के चारों ओर कुछ सुकोमल सुरमई रंग छा गया था। ऐसा लगता था मानो उसमें जीवन पुनः जाग्रत् हो उठा हो।

इसके बाद हम तीनों उठकर मतूराइन की दुकान पर पहुँचे, जो चॉकलेट बेचता था। मास्टर साहब ने सोफ़ी को एक प्याला चॉकलेट

दी, जो उसने खुशी से पी ली। किन्तु जैसे-जैसे वह पूरी तरह से अपने आपे में आने लगी, उसकी चिंता छोटी-छोटी व्यावहारिक बातों के विषय में बढ़ने लगी—

"चाची क्या कहेंगी ? पूछेंगी, रात भर कहाँ रही तब मैं क्या उत्तर दूँगी ?" सोफ़ी ने कुछ अन्यमनस्क होकर पूछा।

मतूराइन की दुकान से कोई सौ गज़ की दूरी पर संत-यूसताशे के बिलकुल सामने सोफ़ी की चाची का घर था। उधर ही हम लोग सोफी को लेकर चल दिये। मास्टर साहब देखने में बहुत सज्जन मालूम पड़ते थे, हालाँ कि उनके एक जूते में चेन नहीं थी। सुंदरी सोफ़ी के घर पर पहुँचकर मास्टर साहब ने तुरन्त एक कहानी गढ़ ली—

"आपकी भतीजी पर जिस समय चार बदमाश पिस्तौल लेकर आक्रमण करनेवाले थे, उसी समय संयोगवश मैं वहाँ पहुँच गया और उन्हें पकड़ने के लिए इतने ज़ोर से चीख़ा कि वे चोर डर के मारे सिर पर पैर रखकर भाग खड़े हुए। इतने में ही मेरी चीख़ सुनकर सार्जेंट दौड़े आ रहे थे और उन्होंने रास्ते में ही भागते हुए चोरों को गिरफ़्तार कर लिया। आपस में कुछ संघर्ष भी हुआ, जिसमें मैंने भी भाग लिया था और उसी में मेरा हैट भी खो गया। फिर हम सब लोग लेफ़्टिनेंट क्रिमनेल (मजिस्ट्रेट) के सामने ले जाये गये, जिसने हमारे साथ बड़ी मेहरबानी की और सवेरा होने तक अपने कमरे में ही आराम से रक्खा और फिर हमारी गवाही लेकर बिदा कर दिया।"

मास्टर साहब की इस कहानी के उत्तर में चाची ने रूखेपन से उत्तर दिया—"जनाब, आपने मेरी भतीजी की जान बचाकर बड़ी मेहरबानी की। इसके लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूँ, लेकिन सच तो यह है कि सोफ़ी की उम्र की लड़की के लिए, जो रात को पेरिस की सड़कों पर अकेली घूम सकती है, ऐसी आफ़त से डरना नहीं चाहिए।"

मास्टर साहब ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया, किंतु सोफ़ी बड़े भावुक स्वर में बोल पड़ी, "चाची, सच मानो, इन्हीं ने मेरी जान बचाई है।"

× × × ×

इस विचित्र घटना के कुछ वर्ष बाद मेरे मास्टर साहब लियोंज़ गये, किंतु फिर वे वहाँ से कभी लौटकर नहीं आये, क्योंकि राह में ही कुछ बदमाशों ने उनकी हत्या कर दी और मेरी गोदी में ही उन्होंने दम तोड़ दिया।—उफ़! वह दृश्य मेरी आँखों के सामने से कभी नहीं हटता और उसका शोक मेरे हृदय में हमेशा के लिए बस गया है। किंतु उनकी हत्या-संबंधी घटनाओं से और मेरी इस कहानी से कोई संबंध नहीं है। उनका वर्णन मैंने कहीं अन्य स्थल पर किया है जो स्मरणीय है और मेरा विश्वास है कि वह कभी भुलाया नहीं जा सकता।

मैं इस यात्रा के संबंध में एक बात और भी कह दूँ। यह यात्रा सब तरह से बड़ी बुरी थी। राह में मास्टर साहब की मृत्यु के बाद मेरी प्रेमिका ने भी मुझे छोड़ दिया। वह मुझसे प्रेम करती थी, पर साथ ही और पुरुषों से भी। उसके इस विछोह से मेरा दिल टूट गया। और यह समझना कि आदमी एक मुसीबत सहने के बाद दूसरी मुसीबत आसानी से सह लेता है, बिलकुल ग़लत है बल्कि बात बिलकुल उलटी होती है। फिर छोटी से छोटी मुसीबत से भी उसे भय लगता है, जैसे दूध का जला छाछ को फूँक-फूँककर पीता है। मैं जब पेरिस लौटा, तब मेरी निराशा वर्णन से परे थी।

एक दिन शाम को मैं यों ही टहलता हुआ 'कामेदी' थियेटर चला गया, जहाँ 'रैसीन'[१] का सुप्रसिद्ध नाटक 'बाजाज़े' खेला जानेवाला था। मैं अंदर खेल देखने चला गया।

१—रैसीन—फ़्रांस का एक सुविख्यात नाटककार।

जो अभिनेत्री रोम्ज़ाँ[1] का अभिनय कर रही थी, उसकी कला में मौलिकता और कौशल दोनों ही थे, किंतु मुझे विशेष रूप से उसकी सुंदरता अत्यंत आकर्षक मालूम पड़ी। रोम्ज़ाँ के हृदय में प्रेम का जो उन्माद था, उसे अभिनेत्री ने इतनी स्वाभाविकता से प्रदर्शित किया था कि देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। और जब उसने स्वर में बड़ा प्यार, बड़ी व्यग्रता, बड़ी कोमलता, बड़ी मधुरता, बड़ी विनय—सब एक साथ भरकर कहा—

"सुनो न ! बाजाज़ें, मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।" तब मेरा रोम-रोम सिहर उठा था।

जब तक वह रंगमंच पर रही, तब तक मैं बराबर निर्निमेष दृष्टि से उसके संगमर्मर-जैसे शुभ्र श्वेत ललाट के नीचे चमकते हुए नयनों की अनुपम सुन्दरता का पान करता रहा। ललाट पर उसकी मोतियों से गुथी अलकें जैसे मुकुट की तरह शोभायमान थीं। उसकी पतली कमर की सुन्दरता भी मेरे हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ गई। जब-जब वह मेरी दिशा में अभिनय करती थी, मुझे उसकी सुन्दरता को ध्यान से निहारने का अवसर मिल जाता था। और जितना ही अधिक मैं उसे देखता था, उतना ही अधिक मेरा अनुमान विश्वास में परिणत होता जाता था कि हो न हो, मैंने इसे पहले कहीं देखा अवश्य है, पर कहाँ, सो याद नहीं पड़ता था। मेरे पास जो साहब बैठे थे वे अक्सर यह थियेटर देखने आया करते थे। उन्होंने मुझे बतलाया कि यह सुंदरी अभिनेत्री मॅमसैले ब—हैं और यहाँ उनकी पूजा देवी की तरह होती है। परन्तु, उसने कहा, यह समाज में भी बहुत सम्मानित और प्रतिष्ठित हैं, यहाँ तक कि आजकल मान्सीयोर ले दक दि ला ने उन्हें नगर की सुंदरियों के फ़ैशन का आदर्श बना रक्खा है और शीघ्र ही वे मॅमसैले लेकोवरे से भी आगे बढ़ जायँगी।

१—नाटक की एक पात्री।

ख़ैर, मैं खेल देखकर चलनेवाला ही था कि रंगमंच के अंदर से एक नौकरानी ने लाकर मुझे एक चिट्ठी दी, जिसमें पेंसिल से केवल यह लिखा था—

"मॅमसैले रोम्ज़ां थियेटर के बाहर फाटक पर अपनी गाड़ी में आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं।"

मुझे विश्वास नहीं हुआ कि यह चिट्ठी मेरे लिए ही हो सकती है, इसलिए मैंने नौकरानी से पूछा कि कहीं वह भूल से तो मुझे किसी दूसरे की चिट्ठी नहीं दे रही है।

"अगर मैं भूल कर रही हूँ," उसने उत्तर दिया, "तो मैं समझती हूँ कि आप मॉन्सीयोर दि तोर्न ब्रोशे नहीं हैं। बस मैं यही कह सकती हूँ।"

मैं शीघ्रतापूर्वक बाहर फाटक पर पहुँचा। वहाँ एक गाड़ी खड़ी थी, जिसमें मैंने पहचान लिया कि मॅमसैले ब—बैठी थीं और उनका सिर एक काले साटन के रूमाल से ढका हुआ था।

उन्होंने मुझसे गाड़ी में बैठने के लिए कहा, और जब मैं उनके पास बैठ गया, तब वे बोलीं—

"तुम अपनी सोफ़ी को नहीं पहचानते, जिसे तुमने सीन नदी में डूबने से बचाया था?"

"कौन—तुम—सोफ़ी! —रोम्ज़ां—मॅमसैले ब—, क्या यह सब सच है?"

मैं चकरा गया था, और इससे वह कुछ नाराज़-सी भी हुई मालूम पड़ी।

"मैंने तुम्हें एक तरफ़ कोने में बैठे देख लिया था," वह बोली, "और एकदम पहचान गई। फिर मैं तुम्हारे देखने के लिए ही उतना अच्छा अभिनय कर रही थी। कहो, तुम्हें कैसा लगा? अच्छा था न? तुमसे मिलकर कितनी ख़ुशी हुई है आज मुझे!"

तत्पश्चात् उसने मुझसे मास्टर साहब का समाचार पूछा, और जब मैंने बताया कि उनकी तो इस बुरी तरह हत्या कर दी गई, तो सुनकर वह रोने लगी।

इसके बाद उसने अपना हाल सुनाया—"मेरी चाची मदाम दि सेत-रेमी के फ़ीते ठीक किया करती थीं, और यह तो तुम जानते ही हो कि सेत रेमी कितनी मशहूर ऐक्ट्रेस है। उस विकट रात के, जब कि तुमने मेरी जान बचाई थी, कुछ दिन बाद मैं उनके घर कुछ फ़ीते लेने गई थी। मुझे देखकर वे कहने लगीं कि तेरे चेहरे में मुझे कुछ विशेषता मालूम पड़ती है। इसके बाद उन्होंने मुझे एक किताब दी और उसमें से कुछ कविताएँ पढ़वाईं और कहा कि तुममें बहुत से गुण हैं। और उन्होंने मुझे अभिनय की शिक्षा देनी शुरू कर दी। पारसाल मैंने पहली बार इस थियेटर में अभिनय किया था। जो प्रेम मैंने अपने जीवन में अनुभव किया है, उसी का रंगमंच पर प्रदर्शन करने की चेष्टा करती हूँ, और जनता कहती है कि मैं कला में निपुण हूँ। ख़ैर, जो भी हो, पर मॉन्सीयोर लि दक दि ला मुझ पर बड़ा प्यार दिखाते हैं और उनसे मुझे कभी कोई दुःख और निराशा अब नहीं होगी, क्योंकि अब मेरा यह स्वभाव बन गया है कि मैं पुरुषों से केवल उतना ही माँगती हूँ, जितना वे दे सकते हैं। इस समय वे खाने के लिए मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे और मैं उनसे वादा भी कर आई हूँ—इसलिए मुझे जाना ही है।"

यह सुनकर मैं कुछ निराश-सा हुआ, किंतु उसने यह निराशा मेरी आँखें देखकर ताड़ ली और बोली—"लेकिन कोई बात नहीं; मैंने कोचवान से कह दिया है कि गाड़ी को वह, धीरे-धीरे लम्बे रास्ते से ले चले।"

सात पत्नियाँ

प्रथम परिच्छेद

परिचय

ब्लूबियर्ड नामक सुविख्यात व्यक्ति के विषय में अनेक प्रकार की विचित्र-विचित्र असद्धारणाएँ हैं। किंतु इससे अधिक और हास्यास्पद कोई धारणा नहीं थी कि कुछ लोग उसे सूर्य का मानव रूप बतलाते थे। तुलनात्मक पुरातत्त्व के एक विज्ञ वर्ग ने इस धारणा की उत्पत्ति चालीस वर्ष पहले की थी। उसने संसार को सूचित किया कि ब्लूबियर्ड की सात पत्नियाँ सप्ताह के सातों दिवस की उषावेलाएँ हैं और उसके दो साले क्रमशः प्रातःकाल तथा सांध्य द्वाभा[1] हैं और डायोस्क्यूरी का अवतार हैं, जिसने हेलिना[2] की रक्षा थीसीयस के बलात्कार से की थी।

किंतु जो पाठक इस पुराण-गाथा में विश्वास करना चाहते हों, उन्हें मैं यह भी बतला देना चाहता हूँ कि सन् १८१७ ई० में एजिन के एक विद्वान् पुस्तकालयाध्यक्ष, जीन-बापतिस्ते पेराज़ ने अत्यन्त विश्वसनीय ढंग से यह सिद्ध कर दिया था कि नैपोलियन का अस्तित्व ही कभी संसार में नहीं था और इस महान् सेनानी की कहानी नितांत कपोलकल्पित एक पौराणिक गाथा के समान ही है। फिर भी विद्वान् लोग कुछ भी क्यों न कहें, हम संभवतः यह विश्वास नहीं कर सकते कि नैपोलियन और ब्लूबियर्ड कल्पित चरित्र हैं।

१—फ्रेंच भाषा में पुँल्लिंग में ही व्यवहृत हुआ है।

२—होमर के महाकाव्य, 'औडैसे' की एक प्रमुख पात्री यूलीसीज़ की पत्नी।

एक इसी प्रकार की और भी गाथा है जो ब्लूबियर्ड को मार्शल दे रईस बतलाती है, जिन्हें २६ अक्टूबर १४४० ई० को नानतीज में फाँसी हुई थी। बिना यह जाने हुए, जैसा कि मॉन्सीयोर सोलोमन रेनाश का भी मत है, वास्तव में जिन अपराधों का अभियोग मार्शल पर लगाया गया था, वे उन्होंने किये भी थे या नहीं, और यह भी कि क्या उनकी विशाल सम्पत्ति, जिसे देखकर राजकुमार भी ईर्ष्या करते थे, उनको उस अभियोग से मुक्त कराने अथवा उसे हल्का कराने में कुछ सहायक हुई थी या नहीं, हम यह कैसे कह सकते हैं कि मार्शल और ब्लूबियर्ड एक ही व्यक्ति थे; क्योंकि ब्लूबियर्ड के जीवन में कोई अन्य ऐसी घटनाएँ नहीं हैं जो मार्शल के जीवन से मिलती हों। इसलिए ब्लूबियर्ड और मार्शल को एक ही व्यक्ति न समझने के लिए इतने प्रमाण ही यथेष्ट हैं।

सन् १६६० ई० में चार्ल्स पिरौल को इस सुविख्यात व्यक्ति का जीवनचरित लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने इसे अत्यन्त कुशल खलनायक और विश्व में निर्दयता की साकार मूर्ति के रूप में चित्रित किया। यद्यपि हम चार्ल्स पिरौल की ईमानदारी और सचाई में संदेह नहीं करते, फिर भी इतना विश्वास हमें अवश्य है कि उन्हें उसके जीवन के विषय में जो सूचनाएँ और सामग्री प्राप्त हुई, उसमें कुछ न कुछ भूलें थीं। इसी लिए हो सकता है कि वह अपने नायक के प्रति पहले से ही उदासीन हो गया हो, किंतु वही ऐसा कवि तथा इतिहासकार नहीं था जो अपने चरित्रों को आवश्यकता से अधिक काला रँग देते हैं। यदि हम ताइबेरियस के उन दो चित्रों को देखें, जो क्रमशः ताइतस और तैसीतस के चित्रित किये हुए हैं, तो हमें स्पष्ट ही विदित हो जायगा कि तैसीतस ने अपने चित्र में ताइबेरियस को जितना काला बनाया है, उतना काला वह वास्तव में था नहीं। इसी प्रकार मैकबेथ को लीजिए। वह वास्तव में बड़ा ही न्यायी और विद्वान् राजा था, किंतु दंतकथाओं और शेक्सपियर ने उस

पर कैसे-कैसे भयानक अपराध आरोपित किये हैं। उसने कभी डंकन के साथ विश्वासघात नहीं किया, और न कभी उसकी हत्या ही की। जब डंकन युवक ही था, तभी एक लड़ाई में मारा गया था और दूसरे दिन प्रातःकाल उसका शव 'आर्मरस' शाप' नामक स्थल पर पाया गया था। स्वयं डंकन ने ही मैकबेथ की प्रिय पत्नी और ग्रूशनो के अन्यान्य सगे सम्बन्धियों की हत्या की थी। इसके विपरीत मैकबेथ ने तो स्कॉटलैंड की श्रीवृद्धि की थी, व्यापार को प्रोत्साहन दिया था, और वही एक तरह से प्रजा का सच्चा रक्षक और पालक था। इसी कारण धनी तथा सम्पन्न उच्च वर्ग के लोग उससे क्रुद्ध थे, इसलिए उन्होंने उसे डंकन को पराजित करने तथा कारीगरों को शरण देने के कारण क्षमा नहीं किया। फल-स्वरूप उसे मार डाला और उसकी सुस्मृति का भी नाश कर दिया। मृत्यु के बाद उसके विषय में जो कुछ भी वृत्तान्त मिलते हैं, वे सब उसके शत्रुओं द्वारा वर्णित। शेक्सपियर की प्रतिभा ने इन झूठे वृत्तान्तों को समस्त मानवता के मस्तिष्क में भर दिया है। मैं बहुत दिनों से यह संदेह करता था कि ब्लूबियर्ड को इसी प्रकार के अन्याय और असत्य का शिकार बनना पड़ा है। उसके जीवन के विषय में जो भी मैंने पढ़ा, उससे मुझे सन्तोष नहीं हुआ—उसमें मुझे कोई उचित तर्क, कोई कारण, कोई सफ़ाई ऐसी नहीं मिली जिसे मैं विश्वास का आधार बना सकता। बहुत सोच-विचार के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि इस कहानी के तथ्य-अतथ्य का निर्णय करने में दुर्निवार कठिनाइयाँ हैं। ब्लूबियर्ड की नृशंसता का इतना अधिक वर्णन है कि क्षण भर के लिए तो उसकी कम से कम आंशिक सत्यता में विश्वास होने ही लगता है। किन्तु ऐसी धारणाओं ने मुझे भटकाया नहीं है। मानवस्वभाव का कुछ ज्ञान मुझे है, और उसी से जो मेरी धारणाएँ[1] बनी हैं, वे अकाट्य प्रमाणों

१—इंटुईशन्स (Intuitions)

पर आधारित होने के कारण शीघ्र ही निश्चय के रूप में आपके सम्मुख आयँगी।

संत जीन-देज़-गो में एक पत्थर-तराश के घर में ब्लूबियर्ड-संबंधित कई काग़ज़ात मुझे मिले हैं, जिनमें से एक उसकी अपनी सफ़ाई है, और दूसरी किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा उसके हत्यारों के विरुद्ध की गई एक शिकायत है, जिस पर कोई कार्यवाही नहीं हुई, क्यों ?—यह मैं नहीं जानता। इन प्रमाणों से मुझे यह विश्वास हो गया है कि वह भला आदमी था, पर बेचारा अभागा था। उसके दुश्मनों ने उसे बदनाम कर रक्खा है।

मैं यह भली भाँति जानता हूँ कि सत्य प्रकाशित करने का मेरा यह प्रयत्न विस्मृत हो जायगा—कोई इस पर ध्यान नहीं देगा, इसकी चर्चा नहीं करेगा। और, ठीक भी है, क्योंकि बेचारा नंगा सत्य झूठ के चमचमाते आकर्षण के सम्मुख कैसे ठहर सकता है ?

द्वितीय परिच्छेद

छः पत्नियाँ

सन् १६५० के लगभग काम्पेयनी और प्यारेफ़ांद्स के ज़िलों के बीच जो रियासत थी, वह एक रईस की थी जिसका नाम बर्नार्द दे मौंत्रागो था। मौंत्रागो के पूर्वज राज्य-शासन में बड़े-बड़े पदाधिकारी थे। किन्तु मौंत्रागो राजदरबार से दूर शान्ति-पूर्वक अपनी गढ़ी में रहता था।

बाहर से वह गढ़ी बड़ी अनगढ़-सी थी। वह बड़ी जंगली और वीरान दिखाई देती थी। उसकी ऊँची-ऊँची नुकीली बुर्ज़ें सूखे पेड़ों के ठूँठ की तरह मालूम पड़ती थीं। किंतु अंदर से गढ़ी बहुत सुंदर लगती थी। कमरे इटैलियन फ़ैशन से सजे हुए थे। पहली मंज़िल पर जो बड़ा दालान था, उसमें बड़े-बड़े पर्दे और तसवीरें लगी हुई थीं।

इसी दालान के एक कोने में एक छोटी कोठरी है, जिसे चार्ल्स पेरॉल्त 'काल कोठरी' कहता था। इसकी दीवारों पर एक फ्लोरेन्टाइन चित्रकार-द्वारा सूर्य की पुत्री दर्स के दुर्दांत जीवन की घटनाएँ चित्रित थीं। इस कोठरी का एक दरवाज़ा गढ़ी की खाई में खुलता था, पर खाई में पानी नहीं था।

गढ़ी से कुछ दूर अश्वशाला का भवन था। उसमें साठ घोड़ों और बारह गाड़ियों के खड़े होने का स्थान था। परन्तु गढ़ी की मनोहर सुन्दरता उस जंगल और उन नहरों में थी, जो उसे चारों ओर से घेरे हुई थीं। इनमें मछली मारने और शिकार करने का जी भरकर आनंद लिया जा सकता था।

आस-पास पड़ोस के निवासी मॉन्सीयोर डि मॉन्त्रागो को ब्लूबियर्ड के नाम से ही जानते थे। उनकी दाढ़ी नीली थी, पर यह नीली इस-लिए लगती थी कि बिलकुल काली थी।

हेनरी द्वितीय के राजदरबार में जैसी नुकीली दाढ़ी मॉन्त्रागो के बाबा रखते थे, वैसी नुकीली दाढ़ी उनकी नहीं थी, और न उनकी दाढ़ी अपने परबाबा की दाढ़ी की तरह पंखे की तरह हिलती थी। उनके परबाबा मैरिग्नन की लड़ाई में मारे गये थे। हल्की-हल्की मूछें थीं और ठोड़ी पर गोल घने बाल थे; उनके गालों पर कुछ नीली झलक मारती थी। उनके विषय में और चाहे जो कहा जाय, परन्तु यह तो कहा ही नहीं जा सकता कि वे बदसूरत थे और उन्हें देखकर डर लगता था। वे सिर्फ़ ज़्यादा तगड़े लगते थे, और इसी लिए कुछ कड़ापन उनके चेहरे पर था, लेकिन वह ऐसा नहीं था कि जिसे देखकर औरतें उनसे नफ़रत करने लगें। वे बड़े शरीफ़, लम्बे-तगड़े और चौड़ी छातीवाले आदमी थे। लोग उन्हें बहुत पसन्द करते थे। हाँ, लेकिन यह ज़रूर था कि ड्राइंगरूम में बैठने की अपेक्षा वे जङ्गल में शिकार खेलने के अधिक योग्य थे। फिर भी यह सच है कि ऐसी तन्दुरुस्ती और इतने रईस होते हुए भी वे स्त्रियों को खुश नहीं कर

सकते थे। इसकी वजह थी उनकी दाढ़ी नहीं, उनका शर्मीलापन। नारी को देखकर वे एकदम आकर्षित हो जाते थे, अपने को भूल जाते थे, लेकिन न जाने क्यों कुछ भय-सा भी उनके हृदय में समा जाता था। वे नारी से उतना ही डरते थे, जितना उसे प्यार करते थे। बस, उनके दुर्भाग्य का यही उद्गम था और यही प्रथम कारण भी। सुन्दरी को प्रथम बार देखने पर वे उसके लिए प्राण तो दे सकते थे, पर एक शब्द भी उससे बोल नहीं सकते थे। वे उसके सन्मुख चुपचाप मूर्ति-से खड़े रहते थे और अपनी भावना को एक विचित्र भयावह प्रकार से अपनी पुतलियाँ घुमाकर प्रकट करते थे। उनका यह दब्बूपन ही उनके सारे दुःखों का एकमात्र कारण था—केवल इसी कारण वे लजीली सुन्दरियों के प्रेम और कृपा के पात्र नहीं बन सके और तेज़-तर्रार औरतों ने उन्हें मुँह की खिलाई। यही उनके जीवन का एकमात्र दुःख और दुर्भाग्य था।

जवानी आते ही वे अनाथ हो गये थे। बड़े घरानों की अच्छी लड़कियों के जितने विवाह-प्रस्ताव आये उन्हें वे अपने शर्मीलेपन को वजह से स्वीकार नहीं कर सके थे। फिर मॅमसैल़े कोलेते पासेज से उन्होंने शादी कर ली। यह लड़की उन्हीं दिनों उनकी ज़मींदारी में आकर बस गई थी। पहले वह रीछ का नाच दिखाया करती थी। वह उसमें कुछ आकर्षण था—उभरे हुए कठिन उरोज और गुलाबी रङ्ग। इतने बड़े रईस से शादी हो जाने से उसकी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं था। वह फूली नहीं समाती थी। पति का, जो इतना बड़ा और तन्दुरुस्त आदमी था, उसे प्यार मिला था—वह उसके अत्यन्त आज्ञाकारी सेवक की तरह था और प्रेमी की तरह ही उसकी पूजा करता था। परन्तु कुछ महीनों के बाद ही उसका जी बन्धन के इस सुख से भर गया और वह बाहर खुले मैदान में घूमने के लिए तरसने लगी। इतना प्यार, सुख और सम्पत्ति पाने पर भी उसे सबसे अधिक आनन्द

अपने रीछ के पास जाकर बैठने, उसे थपथपाने, उसकी आँखें चूमने और रोने में आता था। उसके स्वच्छन्द जीवन का वह बालोंदार साथी एक कोठरी में जंजीर से बँधा पड़ा रहता था।

अपनी पत्नी को इतना अधिक चिन्तित देखकर ब्लूबियर्ड भी चिन्तित हो उठे, पर उनकी इस चिन्ता से उनकी पत्नी की व्याकुलता और भी बढ़ गई। जिस प्यार और उत्सुकता से वे उसकी ख़ातिर करते थे उसका उल्टा असर हुआ—अभागिन का सिर फिर गया। एक दिन सबेरे उठकर माँत्रागो ने देखा कि वह बिस्तर पर नहीं है। उन्होंने तुरन्त उसकी खोज की—सारी गढ़ी का कोना-कोना छनवा डाला, पर वह न मिली, न मिली।

काल-कोठरी का पिछला खाई की तरफ़ वाला दरवाज़ा खुला हुआ था। इसी दरवाज़े से वह अपने रीछ को लेकर बाहर निकल गई थी। ब्लूबियर्ड को शोकाकुल देखकर लोगों का कलेजा मुँह को आता था। चारों ओर अनगिनती आदमी भेजकर उन्होंने कोलेते पासेज की तलाश कराई, पर उसके नाम-निशान तक का फिर पता नहीं चला।

मत्रागो अभी तक अपनी पत्नी के शोक में डूबे हुए थे कि एक दिन गढ़ी के मेले में उन्हें जीन दि ला क्लोशे के साथ नाचना पड़ा। वह कॉम्पेयनी के पुलिस लेफ्टिनेंट की लड़की थी। माँत्रागो उसके सौंदर्य से मुग्ध होकर उससे प्रेम करने लगे और उसके पिता से उसका विवाह अपने साथ करने के लिए कहा। वे राज़ी हो गये। क्लोशे का विवाह माँत्रागो के साथ हो गया। क्लोशे को शराब का शौक़ था और उसे ख़ूब पीती थी। उसकी यह लत यहाँ तक बढ़ी कि कुछ ही महीनों बाद वह ख़ाली चमड़े की उस बोतल की तरह लगने लगी जिसके मुँह पर लाल रबर की डाट लगी होती है। बोतल तो एक ही जगह रक्खी रह सकती है, पर क्लोशे सारी गढ़ी में चीख़ती, चिल्लाती, गाली-गलौज करती और शराब वमन करती फिरती थी। माँत्रागो

परेशान हो उठे। फिर भी उन्होंने साहस किया और उसकी यह आदत छुड़ाने के अनेक प्रयत्न किये—धमकाया, जादू-टोना किया, पूजा-पाठ किया—पर सब व्यर्थ। फिर उन्होंने अपने कमरे में शराब रखनी ही बंद कर दी लेकिन तब वह बाहर से नौकरों से मँगा-मँगा-कर और भी ज़्यादा पीने और नशे में चूर रहने लगी। तब मांत्रागो ने शराब का नशा दूर करने के लिए उसमें एक दवा मिलानी शुरू कर दी, लेकिन क्लोशे को लगा कि यह तो मुझे ज़हर पिला रहा है। बस, फिर क्या था, उस पर पागलपन सवार हो गया और उसने तरकारी बनाने का चाक़ू अपने पति के पेट में भोंक दिया, जिससे तीन इंच गहरा घाव हो गया। मांत्रागो को आशा तो यही थी कि अब मैं मर जाऊँगा, फिर भी वे क्लोशे पर दया करते रहे। वे कहते थे—बेचारी दया की पात्र है, भर्त्सना की नहीं।"

एक दिन वे काल-कोठरी का द्वार बंद करना भूल गये। नशे में चूर क्लोशे उसमें घुस गई और उन सजीव चित्रों को दीवार पर देख-कर समझी कि सचमुच इस कोठरी में स्त्रियों की हत्या की जा रही है। बस, यह ध्यान आते ही वह "मार डाला! मार डाला!" चीख़ती-चिल्लाती गद्दी से बाहर भागी। ब्लूबियर्ड को अपने पीछे पकड़ने के लिए भागते आते देखकर वह भय से पागल हो गई और रास्ते में ही, एक तालाब में जा गिरी और डूबकर मर गई।

यह जानकर आश्चर्य अवश्य होता है, लेकिन बात बिलकुल सच है कि ब्लूबियर्ड इतने स्नेही व्यक्ति थे कि ऐसी खोटी पत्नी की मृत्यु से भी अत्यन्त दुखी हुए।

इस दुर्घटना के लगभग दो मास पश्चात् ब्लूबियर्ड ने अपने कारिंदे त्रैग्नल की पुत्री जिगोने से विवाह कर लिया। वह लकड़ी की चट्टियाँ पहनती थी और उसके शरीर से प्याज़ की बू आती थी। वैसे वह देखने में बहुत अच्छी लगती थी, लेकिन उसकी एक आँख टेढ़ी थी और एक पैर से लँगड़ाती थी! विवाह होते ही इस छोटे

घराने की लड़की के दिमाग़ आसमान पर चढ़ गये। उसे अपने बहु-मूल्य वस्त्राभरणों, हीरे के आभूषणों, घोड़ों, गाड़ियों, बग़ीचों और सरोवरों—किसी से भी सन्तोष नहीं था। इन सबको वह अपने लिए कम समझती और तुच्छ दृष्टि से देखती थी। ब्लूबियर्ड को ऐसी शान बनाने की आकांक्षा कभी नहीं हुई थी। इसलिए अपनी पत्नी की नई-नई फ़रमायशों से वे तंग हो उठे। वे भोले थे, इसलिए उनकी समझ में यह नहीं आता था कि मैं ही स्वयं शौक़ करना नहीं जानता या मेरी पत्नी झूठी शान बनाना चाहती है, उल्टे उन्होंने सारा दोष अपने ही मत्थे मढ़ लिया और उसके शौक़ पूरे करने के लिए सब कुछ ख़र्च करने को भी तैयार हो गये। कभी-कभी उसे यह समझाने का प्रयत्न अवश्य करते थे कि संसार में बहुत भोग-विलास विष की तरह घातक होता है। वे स्वयं बुद्धिमान् तो थे, पर पत्नी के प्रेम में अंधे होकर अपनी बुद्धि खो बैठते थे। जिगोने बस संसार में प्रसिद्ध होना चाहती थी, राजदरबार में सम्मान पाना चाहती थी और राजा की रानी बनने का स्वप्न देखा करती थी। किन्तु जब उसकी आकांक्षाओं पर पानी फिरने लगा, इच्छाएँ पूरी नहीं होती दिखाई दीं और स्वप्न छिन्न होने लगे, तब वह अतृप्ति के कारण मन ही मन घुटने लगी। फल-स्वरूप उसकी तिल्ली बढ़ गई, उसे पीलिया रोग हो गया और उसी में वह मर भी गई। ब्लूबियर्ड को अत्यंत शोक हुआ। उन्होंने उसकी स्मृति में एक भव्य स्मारक बनवा दिया।

इस प्रकार अपने गृहस्थ जीवन से लगातार दुःख पाकर सम्भव था कि ब्लूबियर्ड फिर और विवाह न करते, लेकिन जब अश्व-सेना के एक अफ़सर की पुत्री मॅमसैले ब्लोशे दि जिबोमे ने स्वयं ही उन्हें अपना पति चुन लिया, तब उन्हें उसे अपनी पत्नी बनाना ही पड़ा। जिबोमे बड़ी चतुर थी। वह अपनी सब चतुरता अपने पति को धोखा देने में लगाती थी। पास-पड़ोस के सभी सम्पन्न पुरुषों के साथ उसने प्रेम-सम्बन्ध कर लिया। उसकी वासना इतनी प्रबल थी कि कई बार तो उसने गद्दी में

ही, अपने पति की उपस्थिति में, पर पुरुषों को आमन्त्रित किया, किन्तु ब्लूबियर्ड को पता नहीं लगा। उन्हें सन्देह तो हो गया था, पर वे कभी उसे पकड़ नहीं सके। वह अपने पति की आँखों में धूल झोंकने में तो सफल हो गई, पर अपने अन्य प्रेमियों को धोखा नहीं दे सकी। एक दिन वह काल-कोठरी में एक पुरुष के साथ प्रेम में ऐसी रत और बेसुध थी कि दूसरे प्रेमी के आने का नियत समय समीप आ गया है, इसका उसे ध्यान ही नहीं रहा। दूसरा प्रेमी भी वहीं आ पहुँचा। अपनी प्रेमिका को अन्य पुरुष के साथ देखकर उसके क्रोध का वारा-पार न रहा और उसने उसी आवेश में उसकी छाती में तलवार घुसेड़ दी। कुछ घंटों के बाद गढ़ी के एक नौकर ने वहाँ उसकी लाश पड़ी देखी और कोठरी का भयावह वातावरण और भी भयानक हो उठा।

बेचारे ब्लूबियर्ड को अपने इस घोर अपमान और पत्नी की मृत्यु की सूचना एक साथ ही मिली। पत्नी के भ्रष्ट हो जाने से उन्हें इतना दुःख नहीं हुआ जितना उसकी मृत्यु से। वे ब्लोशे को प्यार करते थे—इतना प्यार तो उन्होंने जीन दि ला क्लोशे, जिगोने या क्लोते पासेज से भी नहीं किया था। यह जान लेने पर कि वह मुझे शुरू से ही धोखा देती रही थी और अब आगे धोखा न दे सकेगी, उनकी व्यथा और मन की उद्विग्नता और भी अधिक बढ़ गई और समय व्यतीत होने के साथ उनका घाव भरा नहीं, बल्कि दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही गया। फल-स्वरूप उनकी यातना इतनी असहनीय हो उठी कि वे एक घातक मानसिक रोग के शिकार हो गये और अपने जीने की आशा भी खो बैठे।

डाक्टरों ने अच्छा से अच्छा इलाज किया और जब सभी तरह के प्रयत्न करने पर भी वे ब्लूबियर्ड को रोग से मुक्त नहीं कर सके, तब उन्होंने कहा कि आपके रोग का केवल एक निदान है। वह यह कि आप एक नवयुवती कुमारी से विवाह कीजिए। विवाह का प्रश्न जब फिर सामने आया, तब ब्लूबियर्ड ने लड़की की खोज की और सबसे पहले

उन्हें अपनी चचेरी बहन ऐंजिले दि ला गारेन्दाइन का ध्यान आया। गारेन्दाइन ग़रीब थी, इसलिए उन्होंने सोचा कि उससे विवाह सरलता से हो जायगा; किन्तु जिस बात ने उन्हें उससे विवाह करने के लिए प्रोत्साहित किया वह था उसका भोलापन और सांसारिक प्रपंचों से अज्ञता। चतुर स्त्री से वे धोखा खा चुके थे, इसलिए एक मूर्खा से सुख पाने की आशा उन्होंने की। लेकिन गारेन्दाइन से विवाह करते ही ब्लूबियर्ड को अपने अनुमान की भूल मालूम हो गई। ऐंजिले सीधी थी, भोली थी और उन्हें प्यार करती थी। स्वयं वह कोई भी बुराई नहीं करती थी, करना नहीं जानती थी। कोई दुर्भावना उसके मन में नहीं उठती थी, किन्तु वह ज़रूरत से ज़्यादा अच्छी, सीधी और अनजान थी। तनिक सा चालाक आदमी भी चाहे जब उसे बहका सकता था। बस, उससे इतना कहना काफ़ी होता—"देख यह कर डाल, नहीं तो तेरे भूत चिपट जायँगे या तुझे भेड़िये खा डालेंगे" अथवा "आँखें मींचकर यह खा पी ले,"—और अनजान लड़की इस तरह जो भी बदमाश लोग उससे कहते, वही करने को तैयार हो जाती। बदमाश लोग उससे भला और क्या चाह सकते थे, सिवा उस चीज़ के जो स्वाभाविक रूप से वे स्त्री से ले सकते हैं, क्योंकि ऐंजिले तो सुन्दरी भी थी। इस प्रकार वह पर-पुरुषों के संग ख़ूब आनन्द करती थी। इस भोली और अनजान पत्नी से मांत्रागो को इतना धोखा और दुःख हुआ जितना ब्लोशे दि जिवोमे के यह सब करने से नहीं हुआ था, क्योंकि वह तो छिपा-चोरी करती थी, पति को मालूम नहीं होने देती थी, लेकिन ऐंजिले इतनी सीधी थी कि वह उनसे ऐसी बात भी छिपा नहीं सकती थी। बुराई-भलाई कुछ जानती नहीं थी। जो बात होती, सो आकर साफ़-साफ़ पति से कह देती—"उन्होंने मुझसे यह कहा—उन्होंने मेरे साथ ऐसा किया—उन्होंने मुझसे यह चीज़ ले ली—मैंने यह देखा—वह देखा—मुझे ऐसा मज़ा आया!" इस भोलेपन से वह अपने

पति को कल्पनातीत यातना देती। ब्लूबियर्ड चुपचाप सब सहते रहे। आख़िर खीझकर उन्होंने उससे कह दिया कि तू कुलटा है, और उसे पीटने लगे। जब पास-पड़ोस में ब्लूबियर्ड के पत्नी को इस प्रकार मारने की बात फैली, तो लोग उन्हें निर्दय और क्रूर कहकर बदनाम करने लगे। एक दिन जब ब्लूबियर्ड बाहर चिड़ियों का शिकार करने गये हुए थे, तब गढ़ी के पास से एक संन्यासी भिक्षु गुज़रा। उसने मदाम ऐंजिले को गुड़िया के लिए पेटीकोट सीते देखा। इस चतुर भिक्षु ने यह देखकर समझ लिया कि यह युवती जितनी सुंदर है, उतनी ही मूर्ख भी। वह सीधा उसके पास गया और कहा कि ऐंजिल गैब्रील वहाँ जंगल में एक जगह बैठे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे तुमसे बहुत प्रसन्न हैं और तुम्हें मोतियों का एक हार देंगे। बस, यह सुनते ही ऐंजिले राज़ी हो गई और भिक्षु उसे अपने गधे पर बिठाकर भगा ले गया। इसके बाद फिर कभी उसका पता नहीं लगा, इसलिए लोगों ने सोचा कि भेड़िये उसे खा गये होंगे।

इतने कड़ुवे और तीखे अनुभव के बाद अब ब्लूबियर्ड विवाह करने की बात क्या सोच भी सकते थे?—यह कल्पना करना भी असंभव होता, यदि हम यह नहीं जानते कि दो सुंदर नयनों के तीर उदार हृदय को बेध देते हैं।

पड़ोस में एक और गढ़ी थी। ब्लूबियर्ड वहाँ प्रायः आया-जाया करते थे। वहीं एक बार उनकी भेंट ऐलिक्स दि पोतासी से हुई। ऐलिक्स अच्छे घराने की कुमारी थी, किन्तु अनाथ और निर्धन; क्योंकि उसकी समस्त सम्पत्ति उसके एक अभिभावक महोदय हज़म करके बैठ गये थे। दुखी ऐलिक्स ने अनाथ-आश्रम में जाने की तैयारी कर ली थी, पर कुछ भले मित्रों ने बीच में पड़कर उसे मौंत्रागो से विवाह करने के लिए राज़ी कर लिया। ऐलिक्स अनिंद्य सुन्दरी थी। ब्लूबियर्ड ने उसके प्रेमालिंगन में अनंत सुखानन्द की कल्पना

की ओर विभोर हो उठा, किंतु इस बार उसके स्वप्न ऐसे धूल में मिले और उसे इतनी अधिक निराशा और वेदना हुई जितनी आज तक किसी अन्य पत्नी से नहीं हुई थी और वे जिस स्वभाव के थे, उसके कारण उन पर इस अकल्पित व्यथा का अति दुःखद प्रभाव पड़ा। विवाह होने के बाद ऐलिक्स उनके साथ दैहिक संबन्ध करने को राज़ी नहीं हुई। मौंत्रागो ने बड़ी अनुनय-विनय की, पर वह किसी तरह राज़ी नहीं हुई। पति के अभ्यर्थना करने, आँसू गिराने और पैरों पड़कर गिड़गिड़ाने तक का उस पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। अपने शरीर को वह उन्हें स्पर्श तक नहीं करने देती थी, प्यार करने देने की बात तो दूर रही। उनका हाथ पकड़कर झटक देती और भाग खड़ी होती और काल-कोठरी में घुसकर अंदर से किवाड़े बंद कर रात-रात भर अलग रहती। उसका ऐसा आचरण—प्राकृतिक और मानवीय दोनों ही प्रकार के नियमों के विपरीत था और इसका ठीक-ठीक कारण किसी को आज तक नहीं मालूम हो सका।

कुछ लोग कहते हैं कि वह अपने पति की नीली दाढ़ी से डरती थी, किंतु पहले ही कहा जा चुका है कि उनकी नीली दाढ़ी में डराने-वाली कोई बात नहीं थी, इसलिए ऐलिक्स की दैहिक अरुचि का यह कारण नहीं हो सकता। जो हो, इस विषय पर विवाद करना कठिन है। फल-स्वरूप हुआ यह कि अभागा पति तरस-तरसकर तड़प-तड़प उठता और अपनी वासना के अतृप्त रह जाने के कारण उसे भयंकर मानसिक त्रास भी होता। अपना ध्यान बँटाने और मन बहलाने के लिए फिर वे हताश होकर शिकार खेलने लगे। किंतु जब अत्यंत थककर वे घर लौटते, तो पत्नी का मुख देखते ही उद्विग्न हो उठते। उनकी कामाकांक्षा भड़क उठती, पर मन मसोस-मसोस-कर रह जाते और उनके हृदय और शरीर दोनों में भयंकर पीड़ा होती। अंत में जब वे इस उत्पीड़न को अधिक सह नहीं सके तब उन्होंने रोम के प्रमुख पोप के यहाँ तलाक़ की अर्ज़ी दी और लिखा कि

मेरी यह शादी बिल्कुल जाल है, धोखा है, जंजाल है। अर्ज़ी के साथ-साथ उन्होंने कुछ भेंट भी पोप की सेवा में भेजी, जिसके फल-स्वरूप शीघ्र ही वह स्वीकृत हो गई और उन्हें अपनी इस नाममात्र की पत्नी से हमेशा के लिए छुटकारा मिल गया। जो उचित सम्मान पुरुष को नारी का करना चाहिए वही मॉन्सीयोर दि मॉन्रागो ने ऐलिक्स का किया—उसको बेंतों से पीटा नहीं, इसका कारण यही था कि ब्लूबियर्ड उदार और सहृदय थे। जहाँ वे अपनी गद्दी के पूर्ण स्वामी और शासक थे वहाँ अपने ऊपर भी उन्हें पूरा अधिकार था। ऐलिक्स को तलाक़ देकर उन्होंने शपथ खाकर प्रतिज्ञा की कि अब फिर कभी घर में औरत का पैर नहीं पड़ने देंगे।

पर वे अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहते, तो वास्तव में सुखी हो जाते!

तृतीय परिच्छेद

सातवीं पत्नी

अपनी छठी पत्नी को छोड़े हुए ब्लूबियर्ड को कुछ वर्ष बीत चुके थे और इनकी गृह-कलह की कुछ धुँधली-सी याद पास-पड़ोस में लोगों को रह गई थी। कोई नहीं जानता कि उनकी पत्नियों का हुआ क्या, किन्तु उनके विषय में गाँव में रात को ऐसी-ऐसी कहानियाँ कही जाती थीं कि सुननेवाले के रोंगटे खड़े हो जाते थे। इसी समय देम सिदोनी लेपॉज़े नाम की एक अधेड़ विधवा 'ला मोते-गिरों' के भवन में अपने बच्चों को साथ लेकर रहने आई। ला मोते-गिरों गद्दी से कोई दो फलाँग की दूरी पर था। वह कहाँ से आई थी, कौन उसका पति था, यह किसी को नहीं मालूम। कुछ लोगों की धारणा थी, जैसा उन्होंने सुना था, कि उसका पति सैवॉय या स्पेन में कोई पदाधिकारी था।

कुछ कहते थे कि वह इन्डीज़ में मर गया। बहुतों का ख़याल था कि विधवा के पास बहुत माल और रियासत है, लेकिन ऐसे लोग भी थे जो इस बात को बिलकुल ग़लत समझते थे। जो हो, पर वह रहती शान और ठाठ-बाट से थी। अपने घर पर वहाँ के बड़े-बड़े आदमियों को दावत देती थी।

उसके दो लड़कियाँ थीं, जिनमें से बड़ी का नाम अन्ना था। अन्ना की अवस्था भी यौवन पार कर आई थी, पर अभी तक वह अविवाहित ही थी। उसके व्यक्तित्व में बहुत चुस्ती थी। उससे छोटी जीन थी, जिसकी अवस्था भी विवाह योग्य हो गई थी। वह ऊपर से देखने में तो बड़ी सीधी और भोली लगती थी, लेकिन संसार का सारा अनुभव किये बैठी थी। देम दि लेपाँज़े के दो लड़के भी थे—बीस और बाईस बरस के। उनमें से एक घुड़सवार था और दूसरा साधारण सैनिक। लेकिन पहलेवाले को काला घुड़सवार कहा जाय तो ज़्यादा ठीक होगा, क्योंकि जब काले घुड़सवार पैदल चलते, तब तो मालूम नहीं होते थे, पर जब घोड़े पर सवार होकर चलते थे, तब ख़ाकी घुड़सवारों में वर्दी के रंग से उनकी पहचान न होकर उनके घोड़ों के रंग से होती थी। वे सभी सुनहरी पट्टीदार नीले कोट पहनते थे। और साधारण सैनिक तो अपनी बालोंदार टोपी से पहचान लिया जाता था, क्योंकि उस पर एक पूँछ-सी लगी होती थी, जो कानों तक लटकती थी। ये लोग गुंडे और बदमाश नाम से बदनाम थे। उन दिनों इसी लिए जिधर से निकल जाते, उधर ही यह गाने का स्वर उनके कानों में पड़ता—

"भागो-भागो, सैनिक आया!"

लेकिन सरकार की समस्त सेना में आपको काज़्मे दे लेपाँज़े से बड़ा गुंडा कोई दूसरा नहीं मिलता और इसे देखते हुए तो इसका भाई बड़ा ईमानदार लड़का था। वह जुआ खेलता और शराब पीता था; लड़कियों के साथ भोग-विलास करता और ताश जीतता था। बस, यही ईमानदारी का पेशा था जिससे कि पियारे दे लेपाँज़े का

गुज़ारा होता था। उधर इनकी माँ मोते-गिरों में ठाट कर रही थी। सच तो यह है कि उसके पास एक पाई भी नहीं थी और सब ठाट क़र्ज़ लेकर बनाये थे—अपने मुँह के दाँत तक उसने उधार बनवाये थे। कपड़े, फ़र्नीचर, घोड़ा-गाड़ी और नौकर तक उसने पेरिस के महाजनों से उधार लिये थे। वे महाजन उसे धमका रहे थे कि या तो तुम अपनी बेटी की शादी किसी रईस से जल्दी कर डालो, नहीं तो सब चीज़ें वापस ले ली जायँगी। इसी लिए बेचारी इज़्ज़तदार सिदोनी का दिल हर घड़ी धक्-धक् करता रहता था कि न जाने कब किस वक़्त महाजन आकर अपना सब सामान ले जाय और उसे नंगा करके छोड़ जाय। उसे दामाद ढूँढ़ने की जल्दी थी और इसी जल्दी में उसकी दृष्टि मांत्रागो पर पड़ गई। मांत्रागो के विषय में उसने यह धारणा बनाई कि वह सीधा-सच्चा आदमी है, उसे आसानी से धोखा दिया जा सकता है। अत्यन्त विनयशील है और सरलता से प्रेम-जाल में फँसाया जा सकता है। अपनी माँ के इन मंसूबों में उसकी बेटियों ने मदद की—जब कभी वे ब्लूबियर्ड से मिलतीं तो अपनी तिरछी चितवन से उन्हें देखतीं। सहृदय ब्लूबियर्ड के कलेजे में वे नज़रें प्रेम के तीरों की तरह चुभतीं। शीघ्र ही वे दि मासैले दि लेपाँज़े की दोनों बेटियों के सौंदर्य के शिकार हो गये। विवाह न करने की अपनी प्रतिज्ञा वे तुरन्त ही भूल गये और उन दोनों लड़कियों में से किसी के भी साथ विवाह करने के लिए बेचैन हो उठे। कुछ हिचकिचाहट के बाद वे अपनी हैसियत के अनुरूप शान से मोते-गिरों भवन गये। उन्होंने देम दि लेपाँज़े से अपने साथ किसी एक बेटी की शादी कर देने का प्रस्ताव किया। मदाम लेपाँज़े ने बड़ी कृतज्ञता से उनका प्रस्ताव स्वीकार किया और कहा—मैं आपकी बड़ी इज़्ज़त करती हूँ और आपको बहुत मानती हूँ। आप मेरी बेटियों से मनचाहा प्रेम कीजिए। फिर जिसे भी आप पसंद करें उसी को मैं ब्याह दूँगी। सफलता होने पर सबसे पहले मैं ही आपको बधाई दूँगी।"

घनिष्ठता बढ़ाने और लड़कियों से प्रेम करने की सुविधा प्राप्त करने के लिए ब्लूबियर्ड ने इन लोगों को पन्द्रह दिन के लिए अपनी गढ़ी में रहने के लिए निमंत्रण दिया। देम दि लेपाँज़े अपनी दोनों बेटियों, दोनों बेटों और बहुत से नौकरों नौकरानियों को लेकर उनकी गढ़ी में पहुँची। फिर तो गढ़ी में रोज़ शिकार खेला जाने लगा, नृत्य होने लगा, और बड़ी-बड़ी दावतें होने लगीं। लेपाँज़े की बेटियाँ अपने साथ एक नवयुवक शवेलिये दि मर्लस को लेती आई थीं। वही शिकार का प्रबन्ध करता था। ब्लूबियर्ड के पास जैसे बढ़िया शिकारी कुत्ते थे वैसे वहाँ आस-पास दूर-दूर तक किसी रईस ताल्लुकेदार के पास नहीं थे। हिरन का शिकार खेलने में माँ-बेटियाँ ब्लूबियर्ड और शवेलिये से भी ज़्यादा फ़ुर्ती दिखाती थीं, हालाँकि कभी उन्होंने मारा एक हिरन भी नहीं। बल्कि होता यह था कि वे अलग-अलग इधर-उधर जङ्गल में भागते थे और फिर जब जिसे अपने मन का साथी या साथिन मिल जाती, उसी के साथ जोड़ा बनाकर वह किसी एकांत स्थान में जाकर उसके साथ आनंद करता। शवेलिये दि मर्लस हमेशा ही जीन दि लेपाँजे को साथ लेकर कहीं उड़ जाता था और शाम तक उसके साथ कहीं एकांत में प्रेम-लीला करके रात को जब लौटता, तब अपनी बहादुरी बखानता।

कुछ दिनों तक इस प्रकार साथ रहने के बाद और भली भाँति निरीक्षण तथा विचार करके माँत्रागो ने जीन को ही चुना, क्योंकि उन्हें यौवन का उभार उसी में अधिक मालूम हुआ, न कि इसलिए कि उसने अपनी बड़ी बहन की अपेक्षा कुछ कम भोग किया हो और अपने कुमारीत्व को कुछ कम बिगाड़ा हो। बड़ी बहन में कुछ शेष नहीं रह गया था। उसका यौवन बीत चुका था। अपनी पसंद उन्होंने छिपाई नहीं, वरन् शीघ्र ही सब पर प्रकट कर दी; क्योंकि वे सीधे और साफ़ व्यवहार में विश्वास करते थे। उन्होंने अपनी भावी पत्नी पर, जितना भी उनसे हो सकता था उतना, प्रेम

प्रदर्शित किया। परन्तु उन्हें अपनी भावी पत्नी पर शवेलिये की दृष्टि का पता नहीं लगा, हालाँकि और सभी को मालूम था, और यदि उन्होंने देखी भी हो, तो उसमें कोई ख़ास बुराई की बात न पाई हो। उन्हें स्त्री-जाति के स्वभाव का इतना अनुभव नहीं था कि वे उचित संदेह कर सकते दूसरी बात यह थी कि वे जब प्यार करते थे, तब पूरा-पूरा विश्वास भी करते थे, इसलिए किसी संदेह का प्रश्न ही नहीं उठता था। मेरी दादी कहा करती थीं कि वैसे तो अनुभव भी जीवन में व्यर्थ ही होता है, क्योंकि मनुष्य को प्रतिदिन नये-नये अनुभव होते रहते हैं और उसके पुराने अनुभव कोई काम नहीं आते। मैं समझता हूँ कि दादी ठीक ही कहती थीं, क्योंकि जो कहानी अब मैं बतलाने जा रहा हूँ, वह इस सत्य को प्रमाणित करती है।

गढ़ी में जो समारोह हो रहे थे, उनमें ब्लूबियर्ड विशेष अनुराग और उत्साह प्रदर्शित करते थे। रात होते ही गढ़ी के घास के मैदान दीपावलियों से जगमगाने लगते थे। वहाँ मेज़ें बिछ जाती थीं और उन पर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित सुंदरी नौकरानियाँ भोजन और बढ़िया से बढ़िया पकवान परोसती और नृत्य करती थीं। गायक बराबर मधुर राग अलापते रहते थे। दावत के अंत में गाँव के स्कूल के मास्टर साहब और मास्टरनी अपने लड़के-लड़कियों के साथ आते और सीन्योर माँत्रागो और उनके मेहमानों के सम्मानार्थ अभिनन्दन-पत्र पढ़कर उन्हें भेंट करते। लम्बी नुकीली टोपी लगाकर एक ज्योतिषी आता और स्त्रियों के हाथ देख-देखकर उनके प्रेम-सम्बन्धों के विषय में भविष्य वाणी करता। ब्लूबियर्ड अपने सब नौकरों तथा मुसाहिबों को शराब पीने को देते और स्वयं अपने हाथ से ग़रीबों को भोजन बाँटते।

दस बजते ही ओस से बचने के लिए सब लोग अंदर कमरों में चले जाते, जो अनगिनती मोमबत्तियों के प्रकाश से आलोकित होते और जहाँ सभी तरह के खेलों—ताश, शतरंज, चौसर, गंजीफ़ा, बिलियर्ड आदि—के लिए मेज़ों का प्रबन्ध होता था। ब्लूबियर्ड सभी खेलों में बहुत रक़म

हारते थे, लेकिन उन्हें कोई खेद इसलिए नहीं होता था कि उनका वह धन उनकी भावी पत्नी और उसकी माँ तथा बहन के पास ही जीत में जाता था। जीन शवेलिये को जिताने में मदद करती थी। उसने बहुत सा सोना जीत लिया था। देम दि लेपाँज़े के दोनों बेटे भी ख़ूब जीतते थे। जब तक ये खेल होते रहते थे, तब तक सभी जागते रहते थे, और ब्लूबियर्ड के सर्वप्रथम जीवनचरितकार के कहने के अनुसार "वे रात भर एक दूसरे के साथ चालाकी खेलने में बिता देते थे।" चौबीस घंटों में यही घंटे सबसे अधिक आनन्दप्रद होते थे; क्योंकि जो स्त्री-पुरुष परस्पर आनन्द लूटना चाहते थे, वे हँसी-खेल के बहाने इधर-उधर अँधेरे में छिप जाते थे और अपनी तबियत पूरी करते थे। जिस कमरे में जुआ होता, उसके इधर-उधर छोटी-छोटी कोठरियाँ और दालान थे, जिनमें उस समय अँधेरा और सुनसान पड़ा रहता था। जब सब सोने चले जाते, तब शवेलिये भूत और भेड़िया बनकर सोते हुओं को डराने के बहाने अपने कमरे से निकलता और चुपचाप जीन के कमरे में खिसक जाता। इन खेलों में माँत्रागो को भी वे लोग भूले नहीं। मदाम के दोनों बेटे उनके बिस्तर पर काँटे बिछा आते और शयनगृह में ही ऐसी चीज़ें जलाते जिनसे चिरायँध उठती। और कभी कमरे के दरवाज़ों के ऊपर किसी बर्तन में पानी भरकर उसे लटका देते, जो दरवाज़ा खोलकर कमरे में ब्लूबियर्ड के घुसते ही उनके ऊपर बिखर जाता। कहने का मतलब यह कि वे लोग ब्लूबियर्ड के साथ सब तरह का मज़ाक़ करते थे और उससे दूसरे ख़ुश होते थे, पर ब्लूबियर्ड बुरा नहीं मानते थे।

सब उत्सव जब समाप्त हो गये और माँत्रागो ने छोटी लड़की पसंद कर ली, तब उन्होंने मदाम से कहा कि अब शीघ्र विवाह कर दो। मदाम ने स्वीकृति तो दे दी, लेकिन यह कहकर कि अपनी बेटी आपको ब्याहते हुए न जाने क्यों मेरा दिल घबराता है।

मोते गिरां भवन में विवाहोत्सव बड़ी शान के साथ मनाया गया। दे मोसैले जीन फ्रैंच रीति-रिवाज के अनुरूप ही शृंगार करके पूर्ण रूप से सुसज्जित वधू बनी थी। उसके केशों में अनगिनती मोतियों की लड़ियाँ गुथी हुई थीं। उसकी बड़ी बहन हरी मख़मल की सुनहरी गोटवाली पोशाक पहने थी। और मा के वस्त्र सुनहरी ज़री के थे जिनपर काली मख़मल की महीन कोर लगी थी, और वे गले में एक मोतियों का हार और हीरे का लॉकिट पहने थीं। मॉन्सीयोर मॉत्रागो काली मख़मल का सूट पहने थे जिस पर उनके सभी बढ़िया हीरे जवाहरात टँके हुए थे। उनकी मुद्रा का लजीलापन और भोलापन उनकी नीली दाढ़ी और बलिष्ठ शरीर में अलग दिख रहे थे। वधू के भाई भी बहुत सुंदर वस्त्रों से सुसज्जित थे। किंतु लाल मख़मल का सूट पहने, जिसमें किनारियों पर मोती जड़े थे, सबसे अधिक सुंदर लग रहा था और जगमगा-सा रहा था जीन का प्रेमी शवेलिये।

जिस यहूदी महाजन ने यह सब क़ीमती वस्त्र और आभूषण वधू के कुटुम्बियों और उसके प्रेमी शवेलिये को किराये पर दिये थे, वह, उत्सव समाप्त होते ही, आ पहुँचा और अपना सब सामान वापस लेकर पेरिस लौट गया।

चतुर्थ परिच्छेद

षड्यंत्र

लगभग एक मास तक ब्लूबियर्ड अत्यंत सुख से रहे। वे अपनी नई पत्नी को पवित्रता की देवी समझते और उसकी पूजा करते थे, परन्तु वह बिलकुल इसके विपरीत थी। ब्लूबियर्ड तो भोले और सीधे थे, पर वह चतुर से चतुर पुरुष की आँखों में भी धूल झोंकने की क्षमता रखती थी। वह अत्यंत चुस्त और चालाक थी और अपनी

मा के कहे पर चलती थी, जो फ्रांस की सबसे चालाक कुटनी थी। वह भी गढ़ी में अपनी बड़ी बेटी और दोनों लड़कों को लेकर रहने लगी थी। इसके अतिरिक्त शवेलिये भी ब्लूबियर्ड के साथ छाया की तरह लगा रहता था। यह बात यद्यपि ब्लूबियर्ड को बुरी लगती थी, फिर भी वे चुपचाप सहते थे, क्योंकि उनको प्रिय पत्नी ने उनसे कह रक्खा था कि यह मेरा धर्म-भाई है और मुझे बहुत चाहता है।

चार्ल्स पिरौल के कथनानुसार इस नई शादी के एक महीने बाद ब्लूबियर्ड को किसी ज़रूरी काम से बाहर जाना पड़ा। यह कौनसा ज़रूरी काम था, इसका उन्हें पता नहीं लग सका, इसलिए वे इसे ब्लूबियर्ड की एक चालाकी समझते हैं जो उन्होंने अपनी पत्नी के प्रेम और पातिव्रत्य की परीक्षा के लिए प्रयुक्त की थी। उन दिनों ऐसा रिवाज भी था। किंतु सच बात दूसरी है। ब्यून्स की लड़ाई में ब्लूबियर्ड के चचेरे भाई लड़ते-लड़ते तोप के गोले से मारे गये थे। लै पर्शे में उनकी रियासत थी, जिस पर अब ब्लूबियर्ड का हक़ था। इसी रियासत पर क़ब्ज़ा करने उन्हें जाना पड़ा था।

जाने से पहले मॉन्सीयोर दि मॉन्त्रागो ने अपनी नवेली पत्नी से कहा—"मेरे पीछे तुम दुखी मत होना। सब तरह से मन बहलाती रहना। अपनी सहेलियों को बुला लेना और उनके साथ जंगल में घूमने चली जाना, घोड़े की सवारी करना, शिकार खेलना और इस तरह अपना समय ख़ुशी-ख़ुशी काटना।" और फिर गढ़ी की सब चाबियाँ उसके हवाले कर दीं, यह जताने के लिए कि मेरे पीछे इस सब सम्पत्ति की रानी तुम्हीं हो।

उन्होंने पत्नी से कहा, "यह चाबी है दो बड़ी कपड़ों की आलमारियों की, यह है उस सोने और चाँदी के बर्तनों की जो रोज़ाना के काम में नहीं आते, यह रही मेरे दो फ़ौलाद के सन्दूक़ों की जिनमें मेरे सोने-चाँदी की ज़ेवरात और जवाहरात हैं और यह सब कमरों का खोलने की है। और यह जो छोटी चाबी है, उस कोठरी की है जो नीचे

दालान के उस किनारे पर है। अब जो जी चाहे सो खोलना और जी चाहे वहाँ बैठना और मौज करना।

"लेकिन उस कोठरी में घुसने के लिए मैं तुम्हें मना करता हूँ और आज्ञा देता हूँ कि तुम उसमें क़दम भी मत रखना।"

जिस कोठरी में जाने से उन्होंने पत्नी को रोका था, वह वही अभागिन राजकुमारियों की काल-कोठरी तो थी, जिसके विषय में पहले भी चर्चा हो चुकी है। उन्होंने उस काल-कोठरी की चाबी देते हुए अपनी प्यारी जेनी से यह भी कहा था कि यह कोठरी मेरे गृहस्थ-सुख के लिए काल बन चुकी है इसलिए तुम इसमें मत जाना।

इसके बाद ब्लूबियर्ड ने अपनी प्रिया को आलिङ्गन में कसकर चूम लिया और ले पर्शे को चल दिये।

मित्रों और पड़ोसियों ने जेनी के निमन्त्रण की प्रतीक्षा नहीं की। ब्लूबियर्ड के पीठ फेरते ही वे गढ़ी में घुस आये। वे जेनी की सम्पत्ति देखने के लिए अधीर थे। इसके बाद उन्होंने जेनी के साथ घर का एक-एक कमरा और एक-एक चीज़ देखनी शुरू की और एक से एक अच्छी चीज़ उन्होंने देखी और प्रशंसा के पुल बाँध दिये। अपनी पड़ोसिन के सौभाग्य पर उन्हें ईर्ष्या भी कुछ कम नहीं थी।

पर अपनी यह सब सम्पत्ति देखकर मदाम मौंत्रागो को कोई हर्ष नहीं हुआ, क्योंकि वह राजकुमारियोंवाली कोठरी खोलने के लिए आतुर थी। वह उठकर चली गई और एक गुप्त चक्करदार ज़ीने में होकर इतनी तेज़ी से नीचे उतरकर कोठरी में पहुँची कि कई बार तो सीढ़ी पर से उसका पैर फिसलते-फिसलते बचा।

यह बात बिलकुल सच है कि वह उस कोठरी में गई, किन्तु क्यों गई और वहाँ शीघ्र ही पहुँचने के लिए इतनी आतुर क्यों थी, इसका कारण अभी तक किसी ने नहीं बतलाया है। पर सची बात यह थी कि वहाँ उसका प्रेमी शवेलिये बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

जब से वह इस गद्दी में आई थी, तभी से प्रतिदिन नियमित रूप से शवेलिये से इस कोठरी में मिलती थी, और कभी-कभी तो दो-दो बार भी; इतने पर भी उससे मिलने की उसकी प्यास नहीं बुझती थी। एक नवीन वधू के लिए यह बात बहुत उचित नहीं थी। एक दिन उसी काल-कोठरी में जेनी, शवेलिये, अन्ना और उसकी मा सब मिलकर बैठे और उस भोले ब्लूबियर्ड की हत्या का षड्यन्त्र रचा। जेनी ने यह बात उड़ाई थी कि उस काल-कोठरी की छत से छः स्त्रियों की लाशें लटकी हुई थीं जो उसकी पहली छः पत्नियों की थीं।

यह निश्चय हुआ कि मॉन्सीयोर दि मॉन्त्रागो की हत्या जल्दी से जल्दी कर डाली जाय। मदाम सिदोनी लेपाँज़े का भी हाथ उस हत्या में था, और उसकी बड़ी बेटी तो जैसे इस षड्यंत्र की जड़ ही थी। इस सारे कुटुम्ब में अन्ना ही सबसे ज़्यादा कुलटा और कुटनी थी, और हालाँकि उसमें वासना की तृष्णा नहीं के बराबर थी और पतितों के उस समुदाय में अपेक्षाकृत वही सबसे अधिक पवित्र भी थी, और इसलिए नहीं कि अपनी वासना-पूर्ति के साधन ही उसे प्राप्त नहीं थे, वरन् इसलिए कि उसे निर्ममता और क्रूरता में ही आनन्द आता था। नारी-सुलभ सुकुमारता और शालीनता तो उसे छू नहीं गई थी। यह हत्या करने के लिए उसने अपने दोनों भाइयों, काज़्मे और पियारे को तैयार किया, और सफल होने पर उन्हें सेनानायक बनवा देने का वचन दिया।

पञ्चम परिच्छेद

हत्या

जिस समय ब्लूबियर्ड के आने की आशा की जाती थी, उससे पहले ही वे घर लौट आये। शीघ्र पहुँचकर वे पत्नी को आश्चर्य से चकित अवश्य कर देना चाहते थे। जिससे वह अनायास ही हर्षित होकर सुख में विभोर हो उठे। वे इतने सहृदय, विनयशील और हँसमुख

तथा शांतचित्त व्यक्ति थे कि कठोर से कठोर मनुष्य का हृदय भी उन्हें देखकर पसीज उठता था।

उनके इस प्रकार शीघ्र ही लौट आने से जेनी, शवेलिये तथा समूचे षड्यंत्र-मण्डल को यह सोचकर ख़ुशी ही हुई कि चलो, अब और भी जल्दी काम तमाम कर देंगे इसका और इस अतुल सम्पत्ति तथा वैभव का सुखोपभोग करेंगे।

घर में ब्लूबियर्ड के पैर रखते ही जेनी मधुर मुस्कान बिखेरती हुई आकर उनके वक्षस्थल से चिपट गई। ब्लूबियर्ड ने प्रसन्न हो उसे आलिंगन में कसकर चूम लिया और फिर जेनी ही संकेत करके स्वयं उन्हें विलास-गृह में खींच ले गई और वहाँ अपने ही मन से संभोग की इच्छा प्रकट की और पति को पूरा-पूरा आनंद और सुख दिया। इतनी लम्बी यात्रा से लौटने के बाद ऐसा आनंद पाकर ब्लूबियर्ड की सारी क्लांति मिट गई और उन्हें अपूर्व सुख मिला। दूसरे दिन प्रातः-काल ही जेनी ने उन्हें चाबी का गुच्छा लौटा दिया, परन्तु काल-कोठरी की छोटी चाबी रख ली। और जब विनम्रतापूर्वक उन्होंने वह भी वापस माँगी, तो उसने खिझाने के लिए झूठ-मूठ बहाने किये कि खो गई या मैं रखकर भूल गई। परन्तु फिर ज़रा देर बाद ही वह लौटा दी।

मॉन्सीयोर दि मांत्रागो ने जब कुंजी वापस ली तभी, देखते ही, वे समझ गये कि उनकी पत्नी उस कोठरी में गई थी, क्योंकि उसकी पालिश पर कुछ खरोंचे पड़ गये थे, जो उसके ताले में लगाने से ही पड़ सकते थे।

यह ज्ञात होने पर उनके मन को कठोर वेदना हुई और उन्होंने शोका-कुल स्वर में जेनी से कहा—रानी! तुम उस काल-कोठरी में गई ज़रूर थीं। भगवान् करे, इससे हम लोगों का कोई अनिष्ट न हो। उस कोठरी के कुप्रभाव से मैं तुम्हें अलग ही रखना चाहता था। अगर इसके कारण कहीं तुम्हारे ऊपर कोई विपत्ति आ पड़ी और तुम्हें कुछ हो गया, तो मैं उसे सह नहीं सकूँगा। रानी, तुम नहीं जानती कि प्रेम में मनुष्य शकुन-अपशकुन में विश्वास करने लगता है।

ब्लूबियर्ड के इन शब्दों से करुणासिक्त प्रेम टपकता था, और इनमें और न इनके स्वर में ही कोई ऐसी बात थी जो डरावनी हो, लेकिन इन्हें सुनते ही जेनी पंचम स्वर में चीख़ने लगी—"बचाओ! बचाओ! मुझे मार डाला! मार डाला।"

यही संकेत था जो षड्यन्त्रकारियों ने मिलकर तय किया था। इसे सुनते ही शवेलिये और लैपाज़े के दोनों बेटों को दौड़कर ब्लूबियर्ड पर टूट पड़ना था और तलवार से उसका काम तमाम कर देना था।

लेकिन उस समय शवेलिये ही निकलकर आया, क्योंकि जेनी ने उसे वहीं एक अलमारी में छिपा रखा था।

शवेलिये ने मॉन्सीयोर दि मौंत्रागो पर उछलकर तलवार का वार किया। यह देखते ही उन्होंने अपना बचाव करना शुरू किया।

जेनी वहाँ से डरकर भागी और आतुरता से पुकारने लगी—"जल्दी! जल्दी! मेरे प्रेमी को बचाओ। वह नीली दाढ़ीवाला उसे मारे डाल रहा है।"

पियारे और काज़्मे तुरन्त ही ब्लूबियर्ड पर दौड़ पड़े। उन्होंने देखा कि वे शवेलिये की छाती पर चढ़े बैठे हैं और उसकी तलवार छीन ली है। यह देखते ही उन कायरों ने पीछे से उनकी पीठ में अपनी-अपनी तलवारें घुसेड़ दीं और उनके प्राण छोड़ देने के बहुत देर बाद तक उन पर वार करते रहे।

ब्लूबियर्ड के कोई वारिस नहीं था। उनकी पतिता, कुलटा और विश्वासघातिनी सातवीं पत्नी जेनी ही उनकी समस्त सम्पत्ति की मालकिन हुई। उस सम्पत्ति में से कुछ तो उसने अन्ना के विवाह में दहेज़ में दे डाली, कुछ अपने दोनों भाइयों को सेनानायक बनवाने में ख़र्च कर दी और शेष लेकर शवेलिये से शादी कर ली और मौज करने लगी। कहते हैं कि शादी करने और धनी होने के बाद शवेलिये भला आदमी बन गया।

नीलम

मैं उनका निमंत्रण पाकर दोपहर को उनके पास पहुँच गया था। हम लोगों ने साथ-साथ बैठकर डाइनिंग रूम में खाना खाया। यह डाइनिंग-रूम एक लम्बे दालान की तरह था, जिसमें सोने और चाँदी की प्राचीन वस्तुओं का संग्रहालय था। जब मैं पहुँचा तब वे उदास तो नहीं, पर सोच में ज़रूर पड़े हुए थे। बातचीत करने में कभी-कभी उनकी विनोदप्रियता झलक जाती थी। कभी कभी तो वे एकाध शब्द ऐसा कह देते थे जिससे उनकी कलात्मक रुचि की बारीकी और खेल-कूद से उनका अनुराग प्रदर्शित हो जाता था। किंतु वे लगातार बातचीत नहीं कर पाते थे; बीच-बीच में अटक जाते थे जैसे उनकी राह में रोड़े अटक गये हों।

उनकी ऐसी बातचीत सुनते-सुनते मैं थक गया, पर सिर्फ़ इतना ही जान पाया कि उन्होंने अभी हाल में ही कुछ सफ़ेद मोरों के जोड़े अपनी रारे गढ़ी में भेजे हैं और दूसरे यह कि बिना किसी ख़ास वजह के वे पिछले तीन हफ़्तों से अपने दोस्तों से मिलने नहीं गये हैं, यहाँ तक कि अपने घनिष्ठतम मित्रों मॉन्सीयोर और मदाम न-से भी नहीं।

यह तो साफ़ ज़ाहिर था कि सिर्फ़ इन्हीं बातों को सुनाने के लिए उन्होंने मुझे अपने पास नहीं बुलाया था। जब हम लोग काफ़ी पीने लगे, तब मैंने पूछा कि आपको मुझसे कौन सी बात कहनी है। यह सुनकर वे ताज्जुब से मेरी तरफ़ देखने लगे—

"क्या मुझे तुमसे कोई बात कहनी है?"

"अच्छे रहे! आप ने ही तो लिखकर भेजा था—"कल आकर मेरे साथ खाना खाओ। मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।"

यह सुनकर वे चुप रह गये। तब तक मैंने अपनी जेब से उनका वही पत्र निकालकर उन्हें दिखाया। उन्हीं के हाथ का पता लिखा हुआ था और लिफ़ाफ़े पर बैंगनी लाख की सील लगी थी।

लिफ़ाफ़ा देखकर उन्होंने माथे पर अपना हाथ रख लिया। "हाँ, याद आ गया। फ़ेराल की शाला में चले जाओ। वहाँ वह तुम्हें रोमने का बनाया हुआ एक चित्र दिखावेगा—एक युवती जिसकी सुनहरी केश-राशि की आभा उसके मस्तक और कपोलों पर पड़ती है और उन्हें जगमगा देती है...गहरी नीली पुतलियाँ हैं जो सारी आँख में नीला भीनापन बिखरा देती हैं......रंग तो बिलकुल ताज़े खिले हुए फूल का-सा है...अत्यन्त मनोहर...और उसकी बाहें कमल-नाल जैसी हैं। ख़ैर, उसे देख लो और अगर......"

यह कहते-कहते वे रुक गये, फिर दरवाज़े के हैंडिल पर हाथ रखकर बोले—"अच्छा ठहरो, मैं अभी कोट पहनकर आता हूँ। हम लोग साथ-साथ चलेंगे।"

डाइनिंग-रूम में इस प्रकार अकेले रह जाने पर मैं खिड़की के पास गया और बहुत ध्यान से बैंगनी सील को देखा। इस पर एक प्राचीन नीलम की मुहर थी, जिसमें लारल-ट्री की छाया में खम्भे के सहारे सोई हुई एक अप्सरा का आवरण हटाते हुए सैटिर दिखाये गये थे। रोमन शासन के सर्वोत्तम काल में चित्रकारों, और बहुमूल्य पत्थरों पर मूर्ति खोदनेवालों का यह प्रिय विषय था, किंतु यह अभिव्यक्ति मुझे सबसे अधिक सुंदर प्रतीत हुई। शैली की निर्मलता, आकार की संपूर्णता, और विभिन्न वस्तुओं के समुदाय का संतुलित तथा सामंजस्यपूर्ण प्रदर्शन का नख के बराबर एक स्थान में चित्रण अत्यंत विशाल और प्रभावोत्पादक लगता था।

मैं मंत्रमुग्ध-सा ही खड़ा था कि मेरे मित्र अधखुले दरवाज़े में से बाहर आये—"चलो, चलें अब," उन्होंने कहा।

वे अपना टोप लगाये हुए थे और जाने की जल्दी में मालूम पड़ते थे।

मैंने उस सील के लिए उन्हें बधाई दी—"मुझे नहीं मालूम था कि यह सुंदर जवाहर आपके पास है।"

"अभी कोई दो महीने से ही तो मुझे मिला है। ये ही मिल गया था मुझे।" यह कहकर उन्होंने उसे अपनी अँगूठी में से निकाला, जिसे वे उँगली में पहने थे, और मेरे हाथ में दिया।

यह तो सभी जानते हैं इस ढंग की खुदाई लाल पर होती है। इसी लिए गहरे नीले रंग का एक मटमैला-सा नीलम देखकर मुझे कुछ आश्चर्य हुआ था।

"क्या! नीलम!" मैं चीख पड़ा।

"हाँ, मनहूस और अभागा! देखो, क्या यह सच्चा है!" कहकर उन्होंने एक आकारवर्द्धक शीशा मँगाया। इसकी सहायता से मैं नीलम पर खुदे हुए उस चित्र को और भी स्पष्टतया देख सका। हीरे पर खुदाई करने की ग्रीक कला का, जो ग्रीस के प्रथम साम्राज्य से चली आती है, यह अत्यंत सुंदर नमूना था। नेपिल्स के अजायबघर में भी मैंने इससे सुंदर दूसरा नीलम नहीं देखा था। इस शीशे की सहायता से मैंने उसमें चित्रित, स्तम्भ पर अंकित एक चिह्न भी देखा, जो उस काल के उन सभी स्मारकों पर अंकित होता था, जिनका संबन्ध बाकक्कि-चक्र से था। इस चिह्न की ओर मैंने उनका ध्यान आकर्षित किया।

कंधे उचकाकर वे मुस्करा पड़े। नीलम जड़ा हुआ नहीं था, इसलिए दूसरी ओर भी देखा जा सकता था। जबमैंने उसे उलटकर देखा तो उस पर जो कुछ लिखा था उससे विदित होता था कि वह उस पर अंकित चित्र से बहुत बाद का खुदा हुआ है। यह खुदाई किसी क़दर वैसी ही थी जैसी अब्राक्साज़ हीरों पर होती है, जिनसे पुरातत्त्व के विद्वान् भली भाँति परिचित हैं। मैं इस विषय में नितांत अनुभवहीन था। फिर भी मैंने समझ लिया था कि यह चिह्न जादू के हैं। मेरे मित्र की भी यही राय थी।

"यह कहा जाता है," उन्होंने कहा, "कि यह यहूदी रब्बीज़ की उस गुप्त विद्या का कोई सूत्र है, जिससे वे बाइबिल के गुप्त अर्थ

जानने की चेष्टा किया करते हैं, और यह सूत्र शाप का है, जो किसी ग्रीक कवि का प्रतीत होता है।"

"कौन कवि ?"

"मुझे कवियों के नाम अच्छी तरह नहीं मालूम।"

"थियो क्राइटस।"

"शायद थियो क्राइटस ही हो।"

आकारवर्धक लैंस की सहायता से मैं उस पर चार अक्षर पढ़ सका—K H P H

"पर इससे तो कोई नाम नहीं बनता।" मेरे मित्र ने कहा।

"नहीं, ग्रीक भाषा में यह लिखा है। रोमन में इसका अनुवाद होगा K E R E।" यह कहकर मैंने उन्हें नीलम लौटा दिया। वे उसे कुछ क्षणों तक ध्यान से निहारते रहे, फिर उसे उँगली में पहन लिया।

"चलो," उन्होंने आतुर होकर, कहा "जल्दी चलो।"

"आप कहाँ जा रहे हैं ?"

"मदेलीन की तरफ़। और तुम ?"

"मैं ! मैं कहाँ जा रहा हूँ ! अच्छे रहे ! मैं गौलोत के घर जा रहा हूँ। उसे एक घोड़ा ख़रीदना है, जो वह मुझे दिखाये बिना नहीं ख़रीदना चाहता, क्योंकि घोड़ों के मामले में मैं उस्ताद समझा जाता हूँ और ऊपर से कुछ थोड़ा-सा मवेशी-डाक्टर भी हूँ। वैसे मैं अपने को फ़र्नीचर का दलाल, भवन-निर्माण-कलाकार, माली और फाटके का दलाल भी कह सकता हूँ। अरे! मेरा बस चले तो मैं इन सब यहूदियों का व्यापार चौपट कर दूँ।"

हम लोग चले जा रहे थे। हमारे मित्र की चाल आज कुछ स्वाभाविक से अधिक तेज़ थी, यहाँ तक कि मुझे उनके साथ क़दम मिला-कर चलना मुश्किल हो गया। इतने में ही हमारे सम्मुख एक सुसज्जित स्त्री आ गई। उन्होंने मेरा ध्यान उसकी ओर आकर्षित किया—

"इसकी पीठ मोटी है और बदन भारी है, लेकिन ज़रा इसके टखने को तो देखो—कितनी ख़ूबसूरत लगती हैं इसकी टाँगें। क्या तुमने कभी यह ध्यान नहीं दिया कि घोड़ों, औरतों और सभी ख़ूबसूरत जानवरों की बनावट बहुत कुछ एक-सी होती है—मांसल स्थलों पर चौड़ी और भारी होती हैं उनकी पेशियाँ, जो जोड़ों की तरफ़ पतली होकर हड्डी की ख़ूबसूरती दिखा देती हैं। देखो तो इस औरत को—कमर से ऊपर तो देखने को जी भी नहीं चाहता, पर उसके नीचे देखो। उफ़, कैसी चुस्त और चपल है इसकी बोटी-बोटी। चलती है तो कितने अंदाज़ से! और घुटनों से नीचे टाँगें कितनी सुडौल सुथरी हैं! और जाँघें तो—मैं दावे के साथ कह सकता हूँ—इतनी चिकनी और पृथुल होंगी कि उन पर से नज़रें फिसल-फिसल जायँगी और मन क़ाबू में नहीं रहेगा।"

अब उन्होंने अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन किया—"एक ही स्त्री से तुम्हें सब चीज़ों की आशा नहीं करनी चाहिए! जहाँ भी सुंदरता दिखाई पड़े, उसे अपनाना चाहिए। सुंदरता बड़ी मूल्यवान् है, कम ही मिलती है देखने को।"

यह कहते ही न जाने किन विचारों के संस्मरण-वश उन्होंने अपना बायाँ हाथ उठाया और नीलम देखा।

मैंने उनसे कहा—"तब क्या आपने वह जड़ीवाला तावीज़ पहनना छोड़कर इस अद्‌भुत वैशान्ती को अपनाया है!"

"ओह! हाँ, लुई सोलहवें के ज़माने में मेरे परदादा को राज-सम्मान मिल गया था। बाद को वे एक क्रांतिकारी दल में सम्मिलित हो गये और इतना माल पैदा कर लिया कि आज मैं यहूदियों और अमरीकनों और बहुत-से राजकुमारों का मित्र हूँ, उनके साथ उठता-बैठता हूँ और उच्च सम्पन्न-वर्ग का समझा जाता हूँ। वह तावीज़ अच्छा था, फिर भी मैंने उसे इस मनहूस नीलम से बदल लिया।"

कुछ व्यंग्य की ध्वनि उनके स्वर में थी। अब हम लोग उनके मित्र गौलोत के घर पर आ पहुँचे थे किन्तु दू फ़ाड आगे बढ़े चले गये।

"मैं तो समझा कि आप अपने दोस्त गौलोत से मिलने को बहुत उत्सुक थे!"

उन्होंने जैसे मेरी आवाज़ नहीं सुनी और अपनी चाल और भी तेज़ कर दी। वे एक ही साँस में रू मातिग्नन तक चले गये और वहाँ पहुँचकर मुड़ गये। फिर सहसा एक बड़े पंचमंज़िले मकान के सामने ठहर गये। यह मकान था तो ऊँचा, पर देखने में बड़ा उदासीन-सा लगता था। वे चुपचाप ऊपर खिड़कियों की ओर मुँह किये देखते रहे।

"क्या यहाँ आपको कुछ ज़्यादा देर तक ठहरना है?" मैंने पूछा, "क्या आपको मालूम है कि मदाम स्यारे इसी मकान में रहती है?"

मैं जानता था कि यह नाम सुनकर वे चिढ़ जायँगे। क्योंकि मदाम स्यारे की बनावटी ख़ूबसूरती, उसकी वेश्यावृत्ति और ऊपर से कुटिलता—इन सबसे उन्हें बड़ी नफ़रत थी। उन्होंने बड़ी धीमी और मरी-सी आवाज़ में उत्तर दिया—"तुम्हें मालूम है?"

"हाँ, बहुत अच्छी तरह। दुमंज़िले की उन खिड़कियों की तरफ़ देखिए न जिन पर तेंदुए की खालों के डरावने पर्दे पड़े हैं।"

उन्होंने सिर हिला दिया। मैंने फिर कहा—"और यह तो बिलकुल तय है कि मदाम स्यारे यहीं रहती है। इस वक़्त भी शायद वह इन्हीं पर्दों के पीछे मौजूद है।"

मुझे ऐसा लगा जैसे वे उसे आवाज़ देकर बुलाना चाहते हों। मैं आश्चर्य में रह गया।

"एक ज़माना वह था जब आपको उसकी सूरत से नफ़रत थी और यह तब की बात है जब और सभी उसे ख़ूबसूरत समझते थे। जब वह मनुष्य को कामान्ध कर अपने घातक प्रेम-पाश में फँसा लेती थी, तब आप कहा करते थे—अगर इसका रंग इतना सुन्दर न होता, न तो

जाने कितनी घृणा होती मुझे इससे ! इसकी ढीली चुसी हुई छातियाँ हैं और चौड़े-चौड़े हड्डे ! अब बतलाइए कि जब उसकी जवानी और ख़ूबसूरती का सब रङ्ग उड़ चुका है, तब क्या आपने उसमें कोई ऐसी ख़ूबसूरती की बात देखी जिसकी चर्चा अभी कुछ देर पहले आपने उस मोटी औरत की टाँगों को देखकर की थी और जिसे हमें अपनाना चाहिए ! उसके टख़ने की ख़ूबसूरती और दिल की अच्छाई का अब आप क्या करेंगे ! एक लम्बी भारी औरत है न, जिसके न भारी नितम्ब हैं और न भरी-उठी छातियाँ ! और जो किसी होटल में घुसते ही चारों तरफ़ बैठे हुए लोगों पर एक मादक नज़र फेरकर ऐसे बहुत से लोगों की भीड़ की भीड़ अपनी ओर खींच लेती है, जो ऐसी बनावटी ख़ूबसूरत औरतों के पंजे में आसानी से फँस जाते हैं अपनी कमज़ोर लोलुप कामुकता के कारण।"

यह कहने को तो मैं कह गया, पर तुरन्त ही ठहरकर यह सोचकर लज्जित होने लगा कि इस तरह मुझे एक नारी का अपमान नहीं करना चाहिए। लेकिन यह स्त्री अपनी बुराई के ऐसे-ऐसे कारनामे दिखा चुकी थी, जिनका सबूत भी मौजूद है, इसलिए मेरे मन में इसके प्रति बड़ी घृणा और रोष था। और सच तो यह है कि अगर मुझे उसके दिल के कालेपन और झूठ का पता न होता तो मैं इसके विषय में इतनी भद्दी तरह से बात नहीं करता पर मुझे यह जानकर ख़ुशी हुई कि दू फ़ाङ ने मेरी बात का एक शब्द भी नहीं सुना।

इसके बाद वे जैसे अपने आपसे ही बातें करने लगे—"मैं इसे पुकारूँ या न पुकारूँ, एक ही बात है। क्योंकि बिना इससे मिले मैं दो महीने से किसी से भी मिलने नहीं गया हूँ। जिन मकानों में मैंने बरसों से पैर नहीं रखा है, वहीं आज फिर मैं जा रहा हूँ—क्यों ! —सो नहीं जानता। बड़े अजीब मकान हैं ये !"

मेरी समझ में कुछ नहीं आया कि आख़िर वहाँ उनके लिए कौन-सा आकर्षण था, इसलिए वहाँ खुले हुए दरवाज़े के सामने ही उन्हें खड़ा

हुआ छोड़कर मैं चल दिया। ऐसे दु फाड जो मदाम स्यारे से तक घृणा करते थे जब वह सुन्दर थी, तब उससे दूर भागते थे—जब वह अपने उमड़ते यौवन को लेकर उन्हें आलिंगन करने आती थी, वही आज इतने पतित हो गये हैं कि बूढ़ी और दवाइयों के बल पर जीनेवाली बुढ़िया मदाम स्यारे के पीछे-पीछे घूमें। किन्तु यह बात मैं तभी असम्भव समझता, जब यह न जानता कि वासना की अँधेरी दुनियाँ में मनुष्य क्या नहींकर सकता।

× × × ×

एक महीने बाद मैं पाल दू फाड से बिना मिले ही पेरिस से चला गया। कुछ दिन ब्रिटेनी में रहने के बाद मैं अपनी चचेरी बहन ब—के पास त्रोबिल्ले गया। वहाँ उसके बच्चे भी थे। शैले देज़ आशियाँ में मेरा पहला सप्ताह अपनी छोटी-छोटी भांजियों को वाटर-कलर पेंटिङ्ग और भान्जों को क़िलेबन्दी करना सिखाने में तथा बहन के बाजे पर गीत सुनने में समाप्त हो गया।

शनिवार को प्रातःकाल मैं अपनी बहन और उसके बच्चों के साथ गिरजे गया। जब वे लोग वहाँ भोज में सम्मिलित होने चले गये, तब मैं शहर घूमने चला गया। समुद्री तट के किनारे खिलौनों और नुमायशी चीज़ों की दुकानें सजी हुई थीं। उन्हीं दुकानों को देखता हुआ मैं चला जा रहा था कि मैंने अपने सम्मुख अचानक ही मदाम स्यारे को खड़ा देखा। मुर्झाई हुई सूरत, अकेली और ठुकराई हुई-सी वह नीचे नहाने के घाटों पर चली जा रही थी। वह पैर घसीट-घसीटकर चल रही थी जिससे मालूम होता था कि उसके सिलीपरों की एड़ी बैठ गई थी। उसकी फटी-चिथड़ी और गन्दी फ्राँक उसके शरीर पर से खिसकी जा रही थी। क्षण भर ठहरकर उसने चारों ओर दृष्टि फेरी। मैंने देखा कि उसकी आँखें गड्ढे में धुस गई हैं और जैसे बेजान हों। उसके ओंठ फटे और लटकते देखकर तो मैं वास्तव में सिहर उठा। राह चलती अन्य स्त्रियाँ उसकी तरफ़ घूरतीं, लेकिन वह उदास और अनमनी-सी चुपचाप चली जा रही थी।

स्पष्ट मालूम होता था कि वह अफ़ीम के नशे में चूर है। गली के नुक्कड़ पर वह मदाम गिलोत की दूकान की खिड़की के सामने रुक गई और लम्बे-लम्बे दुबले हाथों से कुछ फ़ीते उठाकर देखने लगी। उस समय उसकी आँखों में जो एक उत्सुकता और अरमानों से भरी उतावली दृष्टि थी, उसे देखते ही मुझे उन बड़ी-बड़ी बातों का ध्यान हो आया, जो उसके विषय में बड़ी-बड़ी और फ़ैशनेबिल दुकानों में एक समय प्रचलित थीं। इतने में ही अंदर दरवाज़े से लम्बी-तड़ङ्गी मदाम गिलोत अपने गाहकों से निपटने के लिए बाहर आई। उसे देखते ही मदाम स्यारे ने फ़ीते उठाकर वहीं रख दिये और फिर चुपचाप अपने जीवन के उजड़े और वीरान पथ पर चल पड़ी।

मुझे देखते ही मदाम गिलोत चीख़ पड़ी—"आपने बहुत दिनों से मेरी दूकान से कोई चीज़ नहीं ख़रीदी है! आप भी कैसे बुरे गाहक हैं! आइए, कुछ पंखे देखिए जो आपकी भान्जियों को बहुत पसन्द हैं। वे अब युवतियाँ हो रही हैं। कितनी सुन्दर लगती हैं वे।"

अब उसने ओझल होती हुई मदाम स्यारे की आकृति को देखा और ऐसे सिर हिलाया मानो कहा—"हाय! कैसी अभागिन है!"

जो चीज़ें मुझे अपनी भांजियों के लिये ख़रीदनी थीं, वे मैंने ख़रीद लीं और अन्दर नौकर उन्हें काग़ज़ में बाँध रहा था। मैं खिड़की में से बाहर तट की ओर देख रहा था कि मुझे दूफ़ाड उसी ओर जाते दिखाई दिये। वे बड़े उद्विग्न-से, तेज़ चाल से, चले जा रहे थे। उत्तेजित लोगों की तरह ही वे अपने नाख़ून चबाते जाते थे, इसलिए उनकी उँगलियाँ ऊपर उठी हुई थीं जिनमें, मैंने देखा, वे नीलम अब भी पहने थे।

उन्हें इस प्रकार अचानक देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि उन्होंने कहा था कि मैं दिनार्द जा रहा हूँ।

मैं जब अपनी बहन को गिरजे से लौटाकर लाया, तब मैंने उससे पूछा—"क्या तुम्हें मालूम है कि आजकल दूफ़ाड यहीं त्रोविल्ले में रहते हैं?"

उत्तर में उसने सिर हिलाकर "हाँ" कहा। फिर कुछ उलझन में पड़कर बोली—"वे बिलकुल बेवक़ूफ़ हैं। उस औरत से फँसे हुए हैं। और सचमुच" कहते-कहते वह रुक गई; फिर बोली, "वही तो उसके पीछे-पीछे फिरा करते हैं। न जाने क्यों!"

दूफ़ाड वास्तव में उसके पीछे-पीछे फिरने लगे थे। थोड़े दिनों में ही मुझे इसका सबूत भी मिल गया। मैंने उन्हें लगातार कई बार मदाम स्यारे और मान्सीयेर स्यारे के पीछे-पीछे ख़ुद अपनी आँखों से घूमते देखा।

एक समय था जब मदाम स्यारे दूफ़ाड को रिझाने के लिए दीवानी रहती थी। लेकिन दूफ़ाड ने अपनी घृणा भी छिपाई नहीं। वे उसी के मुँह पर कह दिया करते थे, "बनावटी सुन्दर स्त्री कुरूप स्त्री से भी बुरी है, क्योंकि कुरूपा तो आनन्दप्रद हो भी सकती है, किन्तु बनावटी सुन्दरी तो ढोल की तरह पोली होती है।" यह कहते-कहते दूफ़ाड की भावनात्मक तीव्रता इतनी बढ़ जाती थी कि उनके स्वर और शैली में धार्मिकता की सुगन्ध आने लगती थी। किन्तु अब मदाम स्यारे उनकी उपेक्षा करती है। उन्हीं से नहीं, पुरुष मात्र की ओर से वह अन्यमनस्क और उदासीन हो गई है। उसे तो अब केवल अपनी दोनों सहेलियों की परवाह थी जो दोनों ही मृत्यु की देहली पर खड़ी थीं। फिर भी दूफ़ाड हर वक़्त छाया की तरह उसके साथ लगे रहते थे। एक दिन मैंने देखा कि वे मान्सीयोर स्यारे का कुछ सामान अपने कंधे पर लिये चले जा रहे थे। एक दिन वे मदाम स्यारे को ख़ुशामद करके अपने साथ नौका-विहार करने लिवा ले गये और घाट पर जितने भी लोग मौजूद थे, सभी ने छी-छी की नज़र से देखा।

जब वे ऐसी हालत में थे, यह स्वाभाविक ही था कि मैं उनसे मिलना पसंद न करता और क्योंकि हर वक़्त ऐसी हालत में रहते थे जैसे कि सोते में चल रहे हों, इसलिए मैं अपने इस अभागे मित्र से बिना मिले और दो बातें किये ही उन्हें मदाम स्यारे और काउंटेस वि—के हाथों में छोड़कर ओबिल्ले से लौट आया

एक दिन शाम को पेरिस में वे मुझे फिर मिल गये। इस बार वे मुझे अपने मित्र और पड़ोसी न—के मकान पर मिले। मॉन्सीयोर न—और मदाम न—अपने मेहमानों का स्वागत-सत्कार बहुत दिल खोलकर करते थे। ऐविन्यू क्लेबर में जो उनका मकान था, वह इतना सुंदर सजा हुआ था कि उसकी सजावट से मदाम न—की सुरुचि और मानसिक सुंदरता विदित होती थी।

उस दिन उनके घर पर बहुत नहीं, कुछ थोड़े से ही मित्र मौजूद थे। अपने स्वभाव के अनुरूप सदैव की भाँति आज भी पाल दू फ़ाड, बड़ी बारीकी से बड़े चुभते मज़ाक कर रहे थे। मदाम न—अत्यंत विवेकशील थीं। उनके घर में बड़ा ही शालीन विनोद और आमोद-प्रमोद होता था; यद्यपि मैं जिस समय वहाँ पहुँचा था, तब बड़ी साधारण बातें हो रही थीं। मॉन्सीयोर ले काउंसिलर निकोलस जो एक मजिस्ट्रेट थे, वे भी वहाँ उपस्थित थे। वे संतरी-घर का एक बड़ा पुराना क़िस्सा सुना रहे थे।

मदाम न—ने मुझसे पूछा—"क्या आप तावीज़ों में आस्था रखते हैं?"

मैं उत्तर देने के लिए कुछ उलझन में पड़ गया, पर मेरी परेशानी काउंसिलर निकोलस ने यह कहकर दूर कर दी—"ये बड़े शक्की मिज़ाज के हैं, इसलिए ज़रूर ही ऐसी बातों को मानते हैं।"

"आप बिलकुल ठीक कहते हैं,"—मदाम न—ने उत्तर दिया। ये न देवता में विश्वास करते हैं और न दैत्य में। और परलोक की कहानियों में विश्वास करते हैं।"

जब मदाम न—यह कह रही थीं, मैं उनके प्यारे मुखड़े को निहार रहा था। उनके कपोल, ग्रीवा, उरोज—जैसे सभी मूर्त सुन्दरता के साँचे में ढालकर विधाता ने रच दिये थे। कितनी मनोरम थी वह! उन्हें देखकर जैसे किसी बड़ी अप्राप्य और अनमोल वस्तु का-सा ध्यान मन में उठता था। मालूम नहीं दू फ़ाड मदाम न—के पैरों

के बारे में क्या सोचते हैं, पर मैं तो उन्हें भी बहुत सुंदर समझता हूँ—उनकी एड़ियों और तलवों की लाली को जैसे उषा चूमती थी।

पाल दू फ़ाड ने आते ही मुझसे हाथ मिलाया, और मैंने देखा कि उनके हाथ में अँगूठी नहीं है।

"आपने वह नीलम की अँगूठी क्या की?"

"खो गई।"

"क्या! रोम और नेपिल्स में भी जैसा सुंदर अनमोल नीलम नहीं था, वह खो गया! सचमुच खो गया!"

उन्हें बोलने का अवसर दिये बिना ही मदाम न—जो बराबर उनकी बग़ल में ही मौजूद रहतीं—बोलीं—"हाँ, यह एक अद्‌भुत कहानी है। नीलम खो गया।"

मॉन्सीयोर न—बड़े सीधे आदमी थे। इतने सीधे कि कभी-कभी उनके सीधेपन पर हँसी आती थी। बस ज़रा बात सुनते कि ले उड़ते थे। किन्तु उनमें आत्मविश्वास भी बहुत था। ज़ोर से चीख़कर जैसे शोर मचा रहे हों, अपनी पत्नी से कहने लगे—"माँर्दे, मेरी रानी! लो एक यह हैं जिन्होंने अभी तक दू फ़ाड के नीलम खोने की कहानी नहीं सुनी!"

फिर मुझसे बोले—"क्यों, अरे यह तो पूरी एक कहानी है कहानी! सच मानोगे? यह तो हमें बिलकुल छोड़ गये थे हमेशा के लिए। मैं अपनी इनसे पूछा करता था, 'तुमने दू फ़ाड का क्या कर डाला?' तो ये जवाब देती थीं—'मैंने क्या किया। मैंने कुछ भी तो नहीं किया।' हम लोगों की समझ में कुछ नहीं आता था, लेकिन जब हमने सुना कि जनाब हर वक़्त उस मदाम स्यारे के पीछे घूमा करते हैं, तब तो हमारा आश्चर्य दूना हो गया।"

मदाम न—ने अपने पति की बात बीच में ही काटकर कहा—"इससे और उस कहानी से क्या मतलब?" पर मॉन्सियोर न—कहते ही चले गये—"माफ़ करना हमें! लेकिन उस नीलम की सारी कहानी

मैं ही कहूँ तो अच्छा होगा। हाँ, तो इस बार गर्मी की छुट्टियों में दूफाड ने हमारे साथ गाँव चलने से इन्कार कर दिया, हालाँकि पहले हमेशा जाया करते थे। इन्होंने भी बड़े आग्रह से उन्हें बुलाया था, लेकिन नहीं आये और त्रोविल्ले में अपनी चचेरी बहन दि मरिल के साथ मनहूसियत में दिन बिताये।" मदाम न—ने फिर आपत्ति का—"नहीं, नहीं—" पर मॉन्सियोर न—अपनी बात कहे ही चले गये—"बड़ी मनहूसियत में दिन बिताये जनाब। बस अपना सारा वक़्त मदाम स्यारे के साथ नाव पर सैर करने में ख़र्च कर देते थे।"

दूफ़ाड ने अत्यंत शांत और संयत स्वर में कहा—"क्षमा कीजिए, आप बिलकुल ग़लत कह रहे हैं।"

मॉन्सीयोर न—ने उनके कंधे पर अपना हाथ रखकर कहा—"मैं आपको चुनौती देता हूँ, मेरी बात को ग़लत साबित करने के लिए।"

इसके बाद उन्होंने कहानी पूरी की—

"दिन-रात दूफाडसाहब मदाम स्यारे या उसकी प्रेतात्मा के साथ घूमा करते थे, क्योंकि कहा यह जाता है कि मदाम स्यारे अपने पहलेवाले रूप की अब छाया भर रह गई है। मॉन्सियोर स्यारे तट पर ही रह जाते थे। नाव की सैर करते वक़्त एक दिन इनका नीलम खो गया और इस दुर्घटना के होते ही फिर यह एक क्षण भर भी त्रोविल्ले में नहीं ठहरे। बस, वहाँ से बिना किसी से कुछ कहे-सुने या मिले-जुले ही सीधे रेल में बैठ कर हम लोगों के पास आये। तब हम लेज़ इदा ज़ीज़ में थे, जहाँ इनके आने की आशा हम बिलकुल ही छोड़ चुके थे। उस वक़्त रात के दो बजे थे, जब इन्होंने आकर दरवाज़ा खटखटाया था—'मैं हूँ।' यह सनक देखी आपने?"

"लेकिन फिर नीलम?" मैंने पूछा।

"यह सच है," दूफ़ाड ने उत्तर दिया, "कि वह समुद्र में गिर गया। वहीं उसके गहरे गर्त में कहीं तली पर रेती में पड़ा होगा वह।

श्रौर श्रभी तक तो कहानियों के मछुश्रों की तरह कोई मछुश्रा उसे मछली के पेट में से निकालकर लाया नहीं है।"

× × × ×

मैं 'रू दि शनोदन' में स्थित हेन्देल की दुकान पर अक्सर जाया करता था। उपर्युक्त घटना के कुछ दिनों बाद मैं एक बार वहाँ गया यह सोचकर कि चलो, शायद कोई ऐसी श्रद्भुत चीज़ श्राई हो, जो मुझे पसंद श्रा जाय श्रौर मेरे संग्रह करने योग्य हो, क्योंकि मैं प्राचीन मूर्तियों तथा वस्तुश्रों का शौक़ीन हूँ।

हाँ, तो मेरे पहुँचने श्रौर पूछने पर उसने एक शीशे का डिब्बा खोला। उसमें से एक मिस्री मूर्ति निकाली, जो किसी श्रादिम कला-कौशल का नमूना होने के कारण मूल्यवान् थी। किंतु जब मैंने उसकी क़ीमत सुनी तो मैंने चुपचाप, बिना उस पर दूसरी नज़र डाले हुए ही, उसे शीशे के डिब्बे में बंद कर दिया। फिर मैं उसकी श्रालमारियों में नज़र दौड़ाने लगा श्रौर मुझे मुहर लगी हुई नीली सील दिखाई पड़ी, कुछ-कुछ वैसी ही जैसी मैंने दू फ़ाड के पास देखी थी। इसमें भी वैसा ही स्तम्भ, लॉरल-ट्री श्रौर श्रप्सरा का चित्र श्रंकित था। श्रौर श्रब तो मेरा संदेह बिलकुल जाता रहा। मुझे विश्वास हो गया कि हो न हो यह मुहर उसी दूफ़ाडवाले नीलम की लगी हुई है।

"क्या तुम्हारे पास दूसरी नीलम की मुहर भी थी?"

"हाँ, थी तो पर पारसाल बेच डाली।"

"बड़ा बढ़िया नीलम था! तुम्हें कहाँ मिल गया था?"

"मार्क देलियन, जो ख़ज़ांची थे, उन्हीं के जेवरात में मुझे वह नीलम एक श्रँगूठी में मिल गया था। पाँच साल हुए, उन्होंने एक वेश्या के पीछे श्रात्महत्या कर ली—मदाम—शायद—श्राप जानते हों उसे—वही तो—मदाम स्यारे!